



انتخاب مشوی مولانارم

دفتر اول

ک

هستی ترجمه

مترجم



فہرست اغلاط فارسی

| صحیح | غلط | صحیح | غلط | صحیح | غلط | صحیح | غلط |
|---------|---------|--------|--------|-----------|-----------|-----------|-----------|
| سرت | مست | نرم | ترم | وزد و زون | وزد و زون | وزد و زون | وزد و زون |
| امان | ابان | گریہ | گریہ | نے | نے | نے | نے |
| سے | شعبے | جو تھے | جو تھے | سنت | سنت | سنت | سنت |
| زن | زان | قیاسیں | قیاسیں | عشقے | عشقے | عشقے | عشقے |
| در باطن | در باطن | بابشہ | بابشہ | نوا | نوا | نوا | نوا |
| زیافتش | زیافتش | ور | ور | ہم | ہم | ہم | ہم |
| بس | لسن | نواہم | نواہم | تخت | تخت | تخت | تخت |
| ور | دور | گہ | گہ | دانی | دانی | دانی | دانی |
| پور | پوار | نے | نے | صدی | صدی | صدی | صدی |
| زنگ | رنگ | وے | وے | در نام | در نام | در نام | در نام |
| دندانہا | دندانہا | زاری | زاری | حاجات | حاجات | حاجات | حاجات |
| یا | با | اشت | اشت | غیبی | غیبی | غیبی | غیبی |
| دور | دود | از | از | آتش | آتش | آتش | آتش |
| روح | روح | نخس | نخس | مکشید | مکشید | مکشید | مکشید |
| خالی | خالی | غوار | غوار | دور | دور | دور | دور |
| حسن | حسن | چرخ | چرخ | زاری | زاری | زاری | زاری |
| کارش | کارش | گرد | گرد | چون | چون | چون | چون |
| دردش | دردش | بینی | بینی | سکرت | سکرت | سکرت | سکرت |
| فلانگ | فلانگ | کب | کب | | | | |
| انش | انش | بابا | بابا | | | | |
| انش | انش | | | | | | |

शुद्धाशुद्धपत्रम्

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|--------|--------|-----------------|-------|--------|----------|-------------|
| ५ | १२ | यम | मद्य | ८७ | १७ | यार | भार |
| ७ | १८ | मात | भाति | ८३ | १३ | मान | मग्न |
| ८ | १६ | वेह | बहे | ८८ | १ | तराहि | तृणाहि |
| १५ | १० | मृत्य | भृत्य (निकर) | १०५ | १० | असरा | अरुगा |
| १७ | ११ | सास | सीस | १०८ | १० | भयंकरासक | (भयंकरभस्म) |
| १८ | ८ | मुनत | सुनत | १०८ | १८ | तनस्वभाव | तवस्वभाव |
| २७ | १० | जतु | जनु | ११५ | ३ | निमान | निमग्न |
| २७ | ११ | मृत्य | भृत्य | ११५ | १२ | पष्ट | पष्ट |
| २७ | १२ | विधाता | विधाता | १२५ | १७ | काटो | काटा |
| ३१ | २४ | बधुवंत | बुधवंत | १३३ | १ | सर्वस | सर्वज्ञ |
| ३७ | १३ | विकारै | निकारै | १३३ | १० | सुसां | सुसंग |
| ३८ | १८ | करम | करन | १३७ | १४ | पम | प्रेम |
| ४१ | ११ | मासे | भासे | १३७ | १६ | दुखमेंवस | दुखमेंदुख |
| ४८ | ८ | अंजलि | अंजुलि | १३८ | ३ | विय | विय |
| ५३ | १५ | शट | शठ | १४३ | २ | नरु | मरु |
| ५३ | १८ | मांगन | मानन | १५१ | ४ | गरु | गुरु |
| ५७ | १८ | जनलि | जननि | १५८ | १ | ग्रल | लहं |
| ६५ | १६ | वहु | वह | १५८ | १ | सयहि | सराड |
| ७५ | १६ | मति | मति | १५८ | १४ | ववहु | कबहु |
| ७७ | १७ | तक | तर्क | | | | |
| ७८ | ४ | यतिम | अनिम | | | | |
| ८५ | ११ | रलो | चलो | | | | |

انتخاب مثنوی مولانا روم

دفتر اول

کا

ہندی ترجمہ

مترجم شکر اہل

مطبع شمس گروہین ایتھام سی محمد بشیر الدین خان چھاپی گئی

هو الغنی

حمد بے حمد مرزوات و حمد لا شریک را سزد که این گلزار اسرار پانگه کائنات را بنگار
اصناف و انواع مخلوقات بدین خوبی آراسته که دیده باریک بین نظار گیان
نحو تماشا بے دوست اما بعد نیازمند فقیر **شکر** امتد بجز عرض ارباب فہم
و کامیرساند کہ این گلستان جاوید بہار کہ از دست تطاول گردش زمان برکرا
و بنگارے فصلیج بوقلمون سر سبز و شاداب از شاخ طبع بلبیل شاخا حقایق
و علوم مولاناے روم کہ بزبان فارسی ست و این شعر مصداق حال او

مثنوی مولوی معنوی ہست قرآن در زبان پہلوی

اگر چه فحوائے وجدان او لیا کے کرم را در حیطہ تحریر آوردن نہ صرف مشکل بل
عاجست مگر بامید افضال نامتناہی بنظر آنکہ ہندی خوانان نیز از دلفی برادر
و پروردہ اختلاف نمایر عرضی کہ باغوائے بے خود سرایان کہ ہر ضمیر ایشان جلیل
ست بر خیزد و بجادہ مستقیم سلوک گرایند بزبان بہار شا مستقیم ترجمہ نموده تحریر کیا
و مصارف خاص چند اصحاب قدر شناس کہ نام نامی شان بقرست ملحقہ بر
صفیہ آخر ثبت نموده حلیہ الطباع پوشید پس امیدہ از ارباب فطرت و وکا آنکہ
اگر سہوے و خطائے بینند کہ منشائے بشریت است بذیل عقوبت
و یکے باصلاح گرایند بمصداق آنکہ **نوشہ** بماند سیر سپیدہ نوینہ بہر نیست

فردا امیدہ تاریخ تالیف کہ نتیجہ کلک مولف است موافق رباعی است **شعر**

مونس زند و مشرب زہدا راحت روح و دلبہر فصحا
گفت شکر ز سال تا رخس باغ امید مثنوی بہار

श्री ३ म

उस अनुपम प्रद्वितीय अविनश्वर निर्विकार सर्वाधारका कोटिशः
 धन्यवाद है जिसने संसार उपवन को बिबिध रचना रूप
 पुष्पों से सुभूषित किया है जिसको देखियोगी जनों की सूक्ष्म
 बुद्धि भी विचार में निमग्न हो चकित रह जाती है तत्पश्चात्
 सज्जनों विद्वानों की सेवामें सबिनय निवेदन है कि यह सद्ग्रंथ
 जो महात्मा मौलवी रूम के सद्गुणों का भंडार है यावनीय भाषा
 में पद्यात्मक था यद्यपि महत्पुरुषों के गूढ़ विचारों का अनुवाद करना
 और उसका सच्चा चित्र रेखाचित्र ही नहीं किंतु असम्भव सा ग-
 तीत होता है तथापि परमात्मा से बल प्राप्ति की आशा पर इस विचार
 से कि भाषानुरागी प्रेमियों को भी लाभ हो अनधिकार चेष्टा की है और
 पद्यात्मक भाषा अनुवाद किया है जो आपकी सेवामें समर्पित है आशा
 की जाती है कि न पढ़े न्या बनी भाषा "स्वार्थी लोगों के शब्द को अपने मत
 रूप अनुभव की कसौटी पर जांचे कि भाषा के भेद से महात्माओं के
 सिद्धांत में कुछ भेद नहीं हो सक्ता जिस्को प्रेमी सज्जनों की प्रेराना
 और उनके निन्नव्यय से जिनका नाम इस पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर
 लिखित है प्रकाशित कराया है जिससे श्रीमानों की उदारता का परिचय
 अनुभवित है अनुवाद की अत्यन्तता पर ध्यान देकर शिक्षा ग्रहण करेंगे
 चन्द्र शंकर ग्राम सहसंवरस सुखदाय शंकर मति अनुसूचिज भाषा धरी
 बनाय

میرا دل

| | |
|---|---|
| <p>بشتواڑ نے چون حکایت میکند کر نینستان تا مرا بریدہ اند سینہ غواہم شرح قہج از فران ہر کسے کو دور ماند از اصل خویش من بہر جمعے نا لان شدم ہر کسے از ظن خود شد یار من سگر من از نالہ من دور نیست تن ز جان و جان زن مستور نیست</p> | <p>وز جدائی باشکایت سے کند از نفیرم مرد و زن نالیدہ اند تا گویم شرح درد اشتیاق باز جوید روزگار و اصل خویش جفت خوشحالان و بد حالان شدم وز دورون من بخت اسرار من لیک چشم و گوش آزار و نیست لیک کس را دید جان و ستور نیست</p> |
|---|---|

آتش است این بانگ ناے ویت باد
 ہر کہ این آتش نثار ویت باد

| | |
|---|---|
| <p>آتش عشق است کاندہ فقاو نے حریت ہر کہ از ہاے برید ہچو نے زہرے و تر یاے کہ دید نے حدیث راہ بر خون میکند</p> | <p>جوشش عشق است کاندہ سے فقاو پر دہائیش پر دہاے ما درید ہچو نے دہ ساز وشتاے کہ دید قصہ ہاے عشق مجنون میکند</p> |
|---|---|

۱۔ نے مراد روح سے ہے ۱۸۔ اپنے وطن سے دور پڑے ہے۔ ۲۔ ہو کہ یا پریم کو اندر مجھ سے نہیں کر سکتیں۔ ۳۔ ہو اگر کہ
 انجماد پیدا کرتی ہے یا مرنے چو کر رہ جاتی ہے۔

۴۔ شراب میں آفتاب کی حرارت سے جوش پیدا ہوتا ہے اگر اسکو چھڑ دیا جاوے تو کچھ عرصہ میں خشک ہو کر
 عناصر میں مل جاوے یہی حالت عشق کی ہے جو ہر اہل وطن کو پہنچاتا ہے۔ ۵۔ اپنے جن میں نہر ہے کہ اپنے کو فنا کرتی ہے
 اور دلوں کو تریاق ہے جو فنا فی اللہ کا درجہ دلاتی ہے یا عشق کو حرکت دیتی ہے جو ظاہر بر بادی کا سامان ہے اور اسی کی کیمیائی

श्री ३ मदनसत

सुनी कबहुँ बंसी की बानी
 बंस वियोग दुखित अति भारी
 हृदय किं जौ बिरह दुहाई
 निज प्रियतमहि बिलाजौ होई
 सब के निकट बैठ देख रोये
 मति अनु रूप सबहि सनमानेउ
 मम दुख प्रगट हूक के माहीं
 प्रथक देह से होइ न देही

कहत कहा यह विकट कहानी
 सुनत हूक रिये नर नारी ॥
 तौ करु कहौ प्रेम गमु ताई
 मिलन मार्ग मन आनहि सोई
 भले बुरे हम सबहि विगाये
 आत देख काहु नहिं जानेउ
 पर कहां इन्द्रि न की गति नाहीं
 तदपि देह नहिं जानत तेही

नहिं देखि कहै नहिं नहिं यह बंसी को राग
 जरियी बह सनना सु में नही प्रेम का प्राग

प्रेम अग्नि बंसी के माहीं
 बंसी सह द वियोग नहिं
^१ बिना करुण के सह्यक
 गरल सुधा दीह न को खानी
 बंसी प्रेम उमंग बढ़ावे

यस माहि प्रेमहि की लाहीं
 दीन प्रसादा न राग निवेरी
^{गुल्ला}
 बन सीत बिह कषा सुमानी
 प्रेम न प्रेम रंग सरसावे

१ जीव रूप बंसी है जो अपने परमानंद स्व रूप से अलग होकर अपासंसार में पड़ी है ॥ २ बंस वांस्तुं रं व
 ३ जैसे भूख की गति को भूखा ही जान सकता है इन्द्रियों की गमन हीं ॥ ४ वायु गोदूकर रह
 जाती और कठोरता उत्पन्न करती पर अग्नि औरों को लगे कर जलाती और पहाड़ उमन्न करती है—
 १ प्रिये की जल योग को अमृत प्रथवा प्रेम के बढ़ाने में जो मायसे भेद वाद करती है जहर और
 ईश्वर प्राप्ति में अमृत है ॥

محرم این ہوش جنے ہوش نیست
گر بنودے نالہ کئے را آئز
در غم ما روز مایے گاہ شد
روزها گرفت گور پاک نیست
ہر کہ جز ما ہی ز آبش سیر شد
در نیا چال نختہ نہیچ خام

مرزبان را مستری جز گوش است
 نے جهان را پُر نگر دی از شکر
 روز با با سوز با همراه شد
 تو بمان اے آنکہ چونتو پاک نیست
 ہر کہ بنے روز بیت روزش دیر شد
 پس سخن کو تاہ باشد و اسلام

بند بگسل باش آزاد اے پسر
چند باشی بند سیم و بند نور

گر بریزی جسم را در کوزه
کوزه چشم حریصان پرنشد
هر که اجامه ز شوق چاک شد
شاد باش ای عشق خوش سودا
ای دوا ی نخوت و ناموس ما
جسم خاک از عشق بر افلاک شد
جسم خاک از عشق بر افلاک شد
بالب و مساز خود گریخته
عمر کم او از عمر بانی شد جدا
شیر به ناست اندر زیر و هم

چند گنجد قسمت یک روزہ
تا صدف قانع شد بر در شد
او ز عیب و حرص کلی پاک شد
اسے طیب جملہ علت ہائے ما
اسے تو فلاطون جالیئوس ما
کوہ در رقص اندوچا لاک شد
کوہ در رقص اندوچا لاک شد
ہمچو نے سن گفتی تہا گفتی
بے نور شد گر چہ داود صمد لویا
نشاں اگر گویم جہان بر ہم زخم

یہ کہانی ہے میرٹھ میں ہوتی جو بالی سے سر ہو جا کر وہ بڑا ہی کڑی جھگڑا تھا جس میں اس نے اپنے صاحبزادے کو
 جو میرٹھ میں ہو وہ بالی بالی کے روزی و عشق سے واقف ہی نہیں۔

| | |
|---|---|
| <p>२ अबुधबुद्धिकी गति पहिचाने बनसीमें प्रभाव यदि नाहीं हा हमरे दिन बिनु हरि बीते शोक दिवसगत को कछु नाहीं कछुक ऋद्धि सिधमान राहीं मर्मा बिनु कोई भेदन पावहि</p> | <p>अवगाही शब्द के गुण जाने क्यों यह प्रेम बसौ जग माही धृक जीवन बिनु मारा पिरिते प्रेम पुनीतर है मन माही हरि विमुखन कर जना दयाहीं अवगा कथन कछु कामना वही</p> |
| <p>धनयो बन की प्रीति मन मुकुर मलिन कर देत पुनि जल जल न भुख भुख रहित मधु पान लेत</p> | |
| <p>समुद्र बूझ को ^{दुखारे} तृष्णा यानन कबहुं अघाई मनमें प्रेम नेल निज बोई प्रेम नही हमरो हितकारी लज्जा अहंकार तें टारो धूर प्रेम से गगन समाई प्रेम पाइ ध्रुव गगन सिधारी पाइ प्रेम पथ को सहचारी निज सहस्र सहस्र बिनु पाये तीर्थी चंगात कहै देवताये</p> | <p>कर्म कले ^{निरुद्ध} तुलारे शुक्ति शान्ति कर भौतिक पाई ^{सीधे} दूषरा बिगत भयो नर सौई सब रोगन को औषधकारी वैद्य धन तर तुही हमारी अचल पहाड़ हिंदे हीन वाई गिरधारी नख पर गिरधारी हमहु कहत कछु कुशल विचारी गूढ़ रहस्यन परत जनाये खुले मैर संसार न पावे</p> |
| <p>२ जो संसार की ओर से बुद्धि रहित है ॥ ३ संसार में ईश्वर प्रेमी अनेक है यह प्रेम कही प्रभाव है</p> | |

| | |
|---|---|
| <p>انچہ نے میگوید اندر این بود باب جمله معشوق مست و عاشق پرده چون نباشد عشق را پرده او من چگونہ ہوش دارم پیش و پس نور درین و سپر و تخت و فوق</p> | <p>گر گویم من جهان گرد و حراب زنده معشوق است و عاشق مردہ او چو مرغی ماند بی پروا کے او ہوں نباشد نور یا دم ہم نفس بر سر و بر گرد و دم ہاں و ملوک</p> |
| <p>عشق خواہد کین سخن بیدار بود آئینہ عجب از عجب بود</p> | |
| <p>آئینہ است در نہ چہ آغاز نیست آئینہ کہ زنگ و الایش جداست رو تو زنگار از رخ او پاک کن</p> | <p>ز آنکہ زنگار از رخش ممتاز نیست پر شعاع نور خورشید خداست بعد از ان ان نور را دراک کن</p> |
| <p>عاشق شدن بادشاہ بکینزک در سجور شدن او و معالیم بادشاہ</p> | |
| <p>بشنوید ای دوستان این داستان نقد حال خویش را اگر پیہ پریم این حقیقت را شنو از گوش دل بود شاہے در زمانے پیش ازین اتفاقا شاہ روزی شد سوار ہر صدی حے شد او بیکوہ و دشت یک کینزک دید او بر سر شاہ راہ</p> | <p>خود حقیقت نقد حال راستان ہم ز دنیا ہم زشتے بر غوریم تا بروں این زنگی آب و گل ملک دنیا بودش و ہم ملکس و دین با خواں خویش از ہر شکار ناگهان در دام عشق او ہم گرفت شد غلام ان کینزک جان شاہ</p> |
| <p>من عرف نفقہ حق و یہ جہ ہے اپنے نفس کو جانا، دس نے سب کچھ جانایا۔</p> | |

बंसीध्वनिगतिमनिइहहोई
 आपहि छिप्योआवराणामाई
 ईश्वरप्रेमन जाहि उठावै
 चिनमभुप्रेम प्रकाशपसारी
 देशहू दिशामाहि द्युतिकारी

ईश्वरछांडअन्यनहिंकोई
 दृश्यअसत्यसत्यइकसाई
 पक्षीपंखविनाकहांजावै
 सकहिंकामक्रोधहिकिमटारी
 व्यापिरह्योसबविश्वमंगारी

अकथकहानीप्रेमकीकथनीमैंनसमाइ
 मलिनमुकुरमनमेंकबहुमूरतिपरतदिखाइ

दर्पणाद्युति क्यो नहिंदरसाई
 जहांनहिंमनहिंअहंकुनकाई
 दुविधाधूरिदूरकरिडंगरी

विषयमलिनताकीअधिकारि
 आत्मसूर्यतहांपरतदिखाई
 ततक्षणाआत्मप्रकाशनिहारी

एकराजाकादृष्टांतइसीविषयपर

सुनौमित्रवरएककहानी
 तत्वज्ञानकोजोहमपावहिं
 सुनहुअवरादैसीखहमारी
 रह्योएकमहिपालसुजाना
 भृत्यसहितद्वैकरअसवारा
 नृमपाठीबनखोजतराऊ
 नहिंआखेटतहांकोईपावा

तिहप्रसंगबशकहबखानी
 क्योंलोकऔरपलोकनसावहिं
 फाटेपीनप्रमादपिटारी
 नयसंपन्नसुज्ञाननिधाना
 मृगयाहेतनृपतिपगधारा
 दीखनारिइकमदलुस्वभाऊ
 प्रेमजालमेंआपबंधावा

२ योवैभूषातत्तसुखमनाल्येसुखमस्ति॥

| | |
|--|---|
| مرغ جاننش در قفس چون در پلید چون خرید او را و بر خوردار شد ان یکے خردشت پالانش نبود کوزه بودش ابے نامد بدست شمال اول شمال دوم شمال چیم شمال چهارم شمال پنجم شمال ششم شمال هفتم شمال هشتم شمال نهم شمال دهم شمال یازدهم شمال بیستم | داد مال و ان کنیزک را خرید ان کنیزک از قضا بیار شد یافت پالان گرگ خرد را در ر بود آب را چون یافت خود کوزه شکست گفت جان هر دو در دست شماست |
|--|---|

جان من سهل است و جان جانم اوست
در و منده خسته ام در ماتم اوست

| | |
|--|---|
| هر که در مان کرد در حبان مرا حمله گفتند منشن که جان بازی کنیم هر یکے از ما میج عالمی است گر خدا اخوا بدنه گفتند از بطبر ترک استفتا مراد م قوتی است اے بسا ناگفته استثنایه گفت هر چه کردند از علاج و از دوا شربت وادویه و سیاب او ان کنیزک ساز مرض چون بوی شد چون قضا آید طبیب ابله شود از قضا سر کننگین صفر افزدود | برونج و مال و در حبان مرا فهم کرد اریم و انبازی کنیم هرالم را در کف ما مرهمی است پس خدا انمود شان عجز بشر نمے همین گفتن که عارض حالته است جان او با جان استثنایه حیف گشت افزون رنج و حالت ناروا از طبیبان بردیکر اب رو چشم شاه از اشک خون چون جوئے شد ان دوا در نفع خود گمره شود روغن بادام خشکی نمود |
|--|---|

ترجمه انشاء الله تعالی ۱۰ شکیلی ۱۰ استثنایه ترجمه انشاء الله تعالی ۱۰ معض بزبان گفتن کافی است -

| | | |
|--|--|---|
| <p>प्रेमविवसतलफ़तजिमिमीना विधिवतज्याहकीनगृहआनी गदहारहयोपलानहिरोयो ^{खुल} पात्ररह्योतबजलनहिपायो नरपति बहुतवैद्यहंकारे</p> | | <p>बहुधनदैतिहि कीनअधीना विधिवशभईरोगबशरानी मिल्योपलानगधातबखोयो वारिमिलोतबपात्रनसायो कहीतुमाहिप्राणानरखवारे</p> |
| | <p>निजप्राणानतेमोहिप्रिय तिहितुमलेहुबचाय अमितअनुग्रह करिकरियअमितअनूपउपाय</p> | |
| <p>विरुजविशोककरैइहजोई सबनकहीहमरोगनिवारहिं धनवंतरसुरेनरुजहारी ^{शोकदूरकरे} असअभिमानमनहिंजबधारे नहिंभगवतभरोसजियमाहीं मुखसेकबहुंननामउचारे करीनिदानचिकित्साभारी औषधिमुखदेतभईहानी नृपतिरोगबशरानिनिहारे चूकहिवैद्यमृत्युजबआवै औषधिगुराप्रतिकूलहिसावै</p> | | <p>बहुमरिोधनगजपावैसोई सम्पतिकरसबसुमतिमुधारहिं हमसमकोउनभेषजकारी ईशकरोतिनकामुस्तकारै भयोकहापुनिभुवनरिजाहीं ईश्वरकोचितमेंनितधारे तिलनीहंघदीबढ़ीबीमारी उनकेमुखकीकांतिसियनी नेत्रनवेहरुधिरकेनारे तंत्रमंत्रकछुकामनआवै भेषजशीतनउष्णानसावै ^{औषधि उष्ण गरमी}</p> |
| | | |

از هیله قبض شد اطلالت رفت ۵۰ آب آتش را بدو شد بچو گفت

سستی دل شد فزون و خواب کم
سوزش چشم و دل پر درد و غم

حکیمان از معالجه کنیزک روا آوردن بادشاه بچو تعالی

شهر چو عجم زن طلیبان را بدید
رفت در مسجد سوئے محراب شد
چون بخویش آمد ز غرقاب فنا
کای کینه بخش ملک و جهان
حال ما و این طلیبان سر بر
ای همیشه حاجت ما را پناه
لیک گفتی گر چه میدانم سرت
چون بر آورد از میان جان خروش
در میان گریه خویش در بود
گفت ای شه مرده حاجات رواست
چون که و آید حکیم حاذق است
در علاجش بچو مطلق را بهین
خفته بود این خواب دید آگاه شد
چون رسید آن وعده گاه و روز شد
بود اندر منفرد ۵۱

پا بر هسته جانب مسجد دوید
سجده گاه از اشک شه پر آب شد
خوش زبان بکشد در مدح و ثنا
من چگویم چو نتوانم دیدنی نهان
پیش لطف عام تو باشد پذیر
بار دیگر ما غلط کردیم راه
زود هم پید کنش بر ظاهر است
اندر آمد بجز بختایش بچو شش
دید در خواب او که پیرے رو نمود
گر غیبی آیدت فردا ز ما سبب
صادقش دان کوا بین صادق است
در مزاجش قدرت حق را بهین
گشته مملوک کنیزک شاه شد
آفتاب از شرق اختر سوز شد
تا به بیند آنچه نمونند ۵۲

हरिहुअफरादेतबढ़ाई

जलहुअग्निकीकरतसहाई

मनकीनिबलाबढ़ीनीदनआवहिताहि
नेत्रजलनभड़कनहुदयोरोवेरानिकराहि

वैद्योंकीदीनतापरईश्वरपरध्यानआनाराजाका

वैद्यनकीदीनतानिहारी
गदगदगिरानयनबहिधारा
कछुकस्वस्थजबभयेउतृपतिमन
तूरासमराज्यतुमारेदाया
हमकृतघ्नावश्यअभागे
सदाइष्टफलकेतुमदाता
यद्यपितुममनकीगतिजानौ
अंतर्ध्वनिजबकीनभुआला
भक्तकेनेत्रस्वप्नकेमाहीं
कह्यौनृपति क्योंरौलमचावे
वैद्यहोइगुनज्ञाननिधाना
स्मरसरोगाहिसहजहटावे
जाग्योनृपतिहर्षहियमानी
पुजवैप्रभुकबआसहमारी
निरखतबैठभरोरखामाहीं

नृपतिहिदुखउपजोबहुभारी
मनमंदिरमेंकीनपुकारा
कहिहेशिवहेशोकविमोचन
तुमसेकहाकछुदुरैदुराया
तुमदयालुकरुणारसपागे
परेभूलबशहमजनत्राता
तदपिअज्ञताहेनुबरवानो
दयासमुदउमग्योतिहिकाला
पुरुषपुरातनपेरेखउताहीं
हमप्रेरितप्रतिष्ठीइकआवे
सत्यपुरुषहरिभक्तसुजाना
ईश्वरमायाप्रगटदिसावे
सुन्दरसुननसुधासमबानी
जबदिभानुनिजकिरणपसारि
अतुलितप्रभुप्रतापउरमाहीं

| | |
|---|---|
| دید شخصی فاصلے پر مایہ بر خیالے صلح شان و جنگ شان میر سٹید از دور مانند ہلال نیست و ش باشد خیال اندر جان ان خیال لائے کہ دام اولیاست ان خیالے را کہ شہ در خواب دید | آفتابے در میان سایہ وز خیالے فخر شان و تنگ شان نیست بود و بہت بر شکل خیال تو جہائے بر خیالے بین روان عکس مہر و بان بستان خداست در رخ مہمان ہے آمد بہ دید |
|---|---|

نور حق ظاہر بود اندر ولی
نیک بین باشی اگر اہل دلی

| | |
|--|--|
| ان دے حق چو پیدا شد ز دور شہ بکائے حجابان در پیش رفت ضیف خیمہ را چو استقبال کرد ان یکے لب تشہ دان دیگر جو آب ہر دو بھری آشنا آموختہ گفت معشوقم تو بودستی نہ ان اسے مرا تو مسخ طے امن چون عمر | از سر پائش ہے میر نخت نور پیش ان مہمان غیب خویش رفت چون شکر گوئی کہ پیوست او بوزو ان یکے مخمور دان دیگر شراب ہر دو جان بے دو فتن ہر دو ختہ لیک کار از کار خمیز دور جان از بر اسے خدمت بستم کمر |
|--|--|

سدا در یکے تر کر معنی دیکے موت کے پکار

درخواست تو فین و رعایت ادب از جناب ہاری عزائمہ

| | |
|---|--|
| بے ادب محروم گفت از لطف رب بلکہ آتش در ہمہ آفت ان زد | الانہداجو کہ تو فین ادب بے ادب تنہا نہ خود را داشت بد |
|---|--|

۱۵ بخیاں صبح ہو گیا دیو گیک تہم دنیا کا یہی حال ہو گا کال کا خیال باو ہم ہو گیا بلکہ کا خیال آہانک کا ہو گیا کال کا خیال

کال کا خیال صبح ہو گیا دیو گیک تہم دنیا کا یہی حال ہو گا کال کا خیال باو ہم ہو گیا بلکہ کا خیال آہانک کا ہو گیا کال کا خیال

| | |
|---|---|
| <p>देखेउमुनिदरइकमनभावा दौजचन्द्रकीभांतिनिहारै मनकल्पनाअनेकमनमाहीं कबहुंमिलैंकबहुंउत्पाता असविकल्पहरिजनमनमाहीं स्वप्रहिंजिमदेनेनृपजाये</p> | <p>डूबतमनहुंथाहनरपाव कबहुंभूंटपुनिसत्यबिचारै सबजगएकहिमारगजाहीं लग्जितकबहुंकबहुंसुखगाता ईश्वरभक्तिबसततिनमाहीं लक्ष्मणसोईअतिथिमेंपाये</p> |
| <p>ईश्वरकेगुराप्रगटहीभक्तनमाहिंदिखाहिं जिनकेमनहैंस्वच्छतेउनकीपरसबकराहिं</p> | |
| <p>दूरहीतेमुनिवसबदेरेव मृत्युसमानगयेउतिहपाहीं करअगवालिपरस्परभेटे महानृषितजिमवारीहपावै कर्णधारदोउभक्तिसमुदके तुमहीजीवनाधारहमारे रुषासमानइष्टतुमहमेरे</p> | <p>ईश्वरगुरानखशिखलौंपेरेव अतिथिभक्तिअतिहीमनमाहीं मानहुल्लेशजनिनदुखमेदे अमृतपाइमनमोदबढ़ावै मिलेभयेजनुजन्मान्तरके रानीकेमिसतुमपगधारे अर्जुनसमहमचाकरतुम्हारे</p> |
| <p>ईश्वरसेप्रार्थनाकृतघ्नताकी</p> | |
| <p>मायाविषमविवशभरमाये ननुकृतघ्ननिजअनहितकारी</p> | <p>हमकृतघ्नताकेफलपाये जगतमाहिंजिनज्वालफजारी</p> |

کفر باشد پیش خوانِ محترمی
وز زنا افتد و با اندجهات
آن زیبا کی و گستاخی ست بهم
در هنر مردان شد و نافر و دوست
گردانند و آدمی حسرت غلین
وز ادب معصوم و پاک آمد ملک

جوابی از او

با گمانی کردن و حسرت آوری
ابر ناپیدای پے منع زکات
هر چه آید بر تو از ظلمات غم
هر که بیباکی کند در راه دوست
هر که گستاخی کند اندر طریق
از ادب پر نور گشت است این فلک

راه خداست

بزرگستاخی کسوف آفتاب

شعر از پے زجرات رویاب

شاه بود و یکس درویش رفت
همچو عشق اندر دل و جانش گرفت
وز مقام و راه پرسیدن گرفت
گفت گنج یافتم آخر به نهر
میوه شیرین و دهر پر منفعت
مسنی البقر مفتاح الفرج
مشکل از قو حل شود بے قیل و قال
دستگیر هر که پایش در گل است
دست او گرفت و برد و اندر جسم
بعد از آن در پیش رخسارش نشاند

شاه چون پیش میمان خویش رفت
دست بگشاد و کنار آتش گرفت
دست و پیشانیش بوسیدن گرفت
بر سر برسان میکشیدس تا بصدور
صبر تلخ آمد و لیکن عاقبت
گفت اسے ہر حق و دفع حرج
اسے تقائے تو جو اسب ہر حال
ترجمان ہر چہ مارا در دل ست
چون گشت ان مجلس و خوانِ کرم
قصہ رخسار و رخسار می بخواند

۱۰ فیضانِ صورت سے ملا ۱۰ عطیہ ۱۰ نہ گنجی کشادگی کی ہر ۱۰ تمہاری ملاقات ہی ہر سوال کا جواب ہے

तजिविश्वासपरिग्रहआने
 हाष्टिदानविनकिहविधिआवे
 त्रिविधितापजोतुमहितपावे
 ईश्वरनियमकरहिजेभंगा
 चलतकुपंथ कुवेश कुकर्मी
 सूर्यचंद्रनिजनियमनरारहिं

सोईश्वरहिसमर्थनजाने
 महामारीव्यभिचारबढ़ावे
 ईशानाराधनसेआवे
 तेबटमारबोधगतबंगा
 गिरहिंतेगते^{निबद्ध}गुनाहअधर्मी
 देवतहोहिदिव्यगुराधारहिं

गर्वहिसेसूरजग्रस्योलोकप्रकाशकजोइ
 गर्वहितेरावराहन्योगर्वनकीजो कोइ

अतिथिमादिगवनेअवनी^{एजा}शा
 हाथबढ़ाइअंकभरलीने
 सासरारिचरणानकरधूरी^{गोद}
 कुशलपूछसिंहासनदीनो
 शमसंतोषकठिनश्रुतिगायो
 द्यारूपधारिजनुतुमआये
 संकटमोचनदरसतुमारा
 कहीव्यथासबहमरेमनकी
 भोजनकरिनिचिंतजबभयेऊ
 दुसहदुखकारणाकहिदीनो

तजेउराज्यमदपदधरिसीसा
 शांतिसिंंगारमनहुरसभीने
 माथनाइअस्तुतिकरभूरी
 आजसुकृतफलहमसबलीनो
 मोदकमधुरमुनिनबतलायो
 हमसंतोषजनितफलपाये
 दुखदरिद्रअबरहकिहमारा
 हरहुपीरसबप्रपनेजनकी
 करगहिरनवासीहिलेगयेऊ
 रानीनिकटबरासनदीनो

ہم علامات و ہم اسبایش بدید
ان عمارت نیست ویران کرده اند
استغیث اللہ تعالیٰ سترون
لیک پہنان کرد و با سلطان نجفت

رنگ و قارورہ و نبض او بدید
گفت ہر وار کہ ایشان کردہ اند
بے خبر بودند از حال درون
دید رنج و کشف شد بروئے نفث

رجنش از صفرا و از سودا پیونود
با سکہ ہر ہیزم بدید آید ز دور

تن خوش است اما گرفتار دل است
نیست بیماری جو بیماری دل
عشق اصطلاب اسرار خداست
عاقبت مار ابدان شد رہبرست
چون بہ عشق ایم خجل باشم از ان
لیک عشق بے زبان روشن تر است
چون بہ عشق آمد قلم بر خود شگافت
ہم قلم شکست و ہم کاغذ درید
شرح عشق و عاشقی ہم عشق گفت
گرد لیلیت باید از دوسے رومتاب
شمس ہر دم نور جانے میدہد
شمس جان باقی ست کور اس نیست
زوال

دید از زارینش کور از دل است
عاشقے پیدا است از نداری دل
علت عاشق ز علت باجد است
عاشقے گزین سرو گردان سر است
ہر چہ گویم عشق را شرح و بیان
گر چہ تفسیر زبان روشننگر است
چون قلم اندر نوشتن محسنافت
چون سخن در وصف این حالت رسید
عقل در شمرش چو خر در گل نجفت
آفتاب آمد دلیل آفتاب
از و سے ارسایہ نشانے میدہد
انتقال قصہ
خود غیب در جهان خون شمش نیست

اللہ بناہ انکما میں اللہ کو کہ لہذا انکار کر دین یعنی علاج خلاف مرض کیا گیا ۱۵ اصطلاب ایک نام جو جس آفتابی اور نجومی حالات
در یافت کرتے ہیں ایسے ہی عشق اسرار خدا کا آدہ ہے۔

| | |
|--|---|
| <p>नाडीबराहचैष्टादेखी बोल्योभिषजभेदभरसाये अंतरव्यथानउनपहिचानी मनकरमर्मखोजसबरखेउ</p> | <p>कारणारोगसमयसबपेखी उनविपरीतभावदरसाये उलटचलेचेतहि किमरानी भावनकछुभुआलसनभाखेउ</p> |
| <p>बातपित्तकफजनितयहरोगनयाकोहोइ होइदारुजिह्वृक्षकीप्रगटधूमकरसोइ</p> | |
| <p>तनकीगथानयाकहं होई मुनतगूढ़दुखसंयुतबानी सज्जनसत्यमार्गसबसोधा सत्यसनेहमांहिमनराता प्रेमकथाकिमकइखबरवानी यदपिनबारागीबिनुल्यवहारा धीरजधारिलिखतकछुभयेऊ प्रेमकथाअघटितजगमाहीं नपुरीबुद्धिस्वयंबौगई स्वयंप्रकाशस्वस्तपतमारी उदयअस्तइहसूरजमाही निसदिनभ्रमैमानुगातेएही</p> | <p>प्रेमदुरायसकहिकिमकोई प्रेमगृहीतताहिपहिचानी पूरापुण्यपथप्रेमपुरोधा प्रेमअंतअभिमतफलदाता बचनबिहायबिकलजहांवानी बिनकहैप्रगटप्रेमउजियारा हृदयलेखनीकोफटगयेऊ पत्रलेखनीकीगतनाहीं प्रेमहिनिजप्रतापप्रगटाई तिहहितदीपकचहियनबारी इकरसआत्मसूर्यसबगहीं अटलअमरइकप्राणसनेही</p> |

شمس در خواجه اگر چه هست فرد
لیک ان شمش که شد بندش اسیر
در تصور ذات او را گنج کو
شمس تبریزی که نور مطلق است
چون حدیث روئے شمس الدین رسید
واجب آمد چونکه آمد نام او

مے تو ان ہم مثل او تصور کرد
بنودش در ذہن دور خارج نظر
تا در آید در تصور مثل او
آفتاب است و الزوال حق است
شمش چہ ارم آسمان سرور کشید
شرح کردن بحرے از انعام او

این نفس جان و امنم بر تافته است
 بوی پیرایان یوسف یافته است

کز برائے حق صحبت سانا
 تا زمین و آسمان چندان شود
 گفتہ ام دور او فساد از حبیب
 الا تکلفی نانی فی الفنا
 کل شے قال غیب المفیض
 ہر چہ میگوید مناسب چون نبود
 من جگویم یک گم ہشیار نیست
 قال اطعمنی نانی عجایب
 باشد ابن الوقت صوفی اے رفیق
 صوفی ابن الحال باشد در مثال

باز گور مرے ازان خوش جاہا
عقل و روح دیدہ صد چند ان شود
بھیچ بیمارے کہ دور است از طبیب
کلت افنامی فساد حصی ثناء
ان تکلف او تصلف لا یلیق
چون تکلف نیک نالایق نبود
شرح آن یارے کہ اورا یار نیست
واعتجل فالوقت یفت طاع
نیست فردا گفتن از شرط طریق
گر چه برون فارغ اند از ماہ و سال

۴ گفتند که هر عشق بری می باشد و نه از راه طاعت و ذکر و سبکدستی

۱۱۔ دوسویں بیان کے بغیر فافادہ اس کی پوش اس تھیں۔ جو تکلف اور تصلف کے کیا حواس وہ لایں نہیں لایں زلی سے کرنا تکلف اپنے کمال و غماز پر تصلف۔

बाह्यदृष्टि एकहिरवि होई
जो अद्वैत न द्वैत समावे
अकथ अगोचर कहत न आवे
मानहु धरहरि नरकी सूरत
सूर्यरूप गुरु मूरत पाई
श्रीगुरु देव परम हित जानी

प्रतिमा तदपि सकै कर कोई
मनबुधिचित गाहिनहिं पावै
ताकी प्रतिमा कवन बनावै
ईश्वर के प्रकाश की मूरत
सूर्य अस्तसम परत लखाई
गुरु महिमा कहू कहब बखानी

हृदय प्रेम अंबुध उमग बढ़त बारि अनुराग
मत्तल्यो मन मांझित हां गुरु गुण मुक्ता लाग

गुरु प्रताप से जो कछु पायो
जिह सुनि निज मद मान घटावै
कहे उताहि हम है जनरोगी
हठ परिहर जित हमहि सतावै
कुंठित बुद्धि न हृदय उछाऊ
अधिर बुद्धि ते जो कछु भाखे
किम वरसौ गुण सुधि नहिं मोही
कहे उ सो ज्ञान प्रधार हमारा
भुनि नहि होइ जो इत उन भाषै
अति गणत वही अति धि कहौ वै

गूढ रहस्य न चहिये दुरायो
आत्मिक शारीरिक बल पावै
भये वैद्य गुरु चरण वियोगी
वलि वियोग वश कहत न आवै
नीक न होइ दिखाउ बनाऊ
कहावना वकिये गुर सारखे
गुरु उपमान सकहि जग जोही
रूप टौ काल खड़ग की धारा
वर्तमान परही चित राखे
मास वर्ष तिथि दिन हिन भावै

| | |
|--|---|
| <p>تو مگر خود مرد صوفی نیستی گفتمش پوشیده بهتر شر یار تو شتران باش که راژد لبران گفت مکشوف و برهنه نه غلول باز گواست ^{علائق} سرار رمز مرسلین ^{صاف}</p> | <p>نقد را از ^{حال} تپه خیز نیستی خود بود ضمن حکایت گوشت دار گفته آید در حدیث دیگران باز گوید فغمیده ای بوالقفل اشکارا به که پنهان سر دین</p> |
| | <p>پرده بردار و برهسته گو که من نه نخبم با فغم با پیرهن</p> |
| <p>گفتم اعریان شود او در جهان از تو میخواه لیک اندازه خواه تا نگردی خون دل جان جهان اقاب کز وے این عالم فروخت فلت و آشوب و خونریزی مجو</p> | <p>نه تو مانے نه کثارت نه میان برزتابد کوه را یک برگ گاه لب به بند و دیده بر دوز این زمان اندک گر پیش تابد جمله سوخت پیش ازین از شمس تبریزی بگو</p> |
| <p>این ندارد آخر از آغاز گو رو تمام این حکایت را بگو</p> | |
| <p>چون حکیم از این حدیث آگاه شد گفت اے شه غلوت کن خانه را ^{خال} خانه خائے کرد شاه و شد بردن خانه خائے ماند و یک دیار ^{مکان دلا} نه دست بر نیفش نهاد و یک بیک</p> | <p>و درون هم داستان شاه شد دور کن هم خویش دهم بیگانه را تا بخواند بر کنیزک اوفسون جز طبیب و جریمان بیمار نه باز نه پرسید از جور فلک</p> |

| | |
|--|--|
| <p>मुनिशुभकर्मनवेगकराही कहेउकिभेदप्रगटभलनाहीं नहिंप्रत्यक्षमोदमनभरही कहिमनकरप्रत्यक्षवखानो हमेंगुरुनकीसैनबुभावहु</p> | <p>इहक्षराभूतहोइक्षरामाहीं जानलेहुसबसैननमाही ॥ सज्जनसबपरोक्षहितकरहीं मतपरोक्षकरकरहुबहानो धर्मरहस्यप्रगटकरगावहु</p> |
| <p>कहुप्रत्यक्षमुनाइमोइबीचनराखौकोइ पारसमिलआवरणसहलोहनकंचनहोइ</p> | |
| <p>कहेउजोतेजपुंजप्रगटावे वित्तसमानहोइचितचाही जीभनेत्रकिनराखिसंभारी रविकरतेजजोगगततपाई आत्मकोटिरविसरसप्रकासू</p> | <p>तेरोखोजकितहुनहिंपावे फूकेनहिंसुमेरउड़ाही संसारिनजिनहोदुरवकारी अधिकप्रतापसह्योनहिंजाई सहजसुखेनसंहैकोतासू</p> |
| <p>महिमाश्रीगुरुदेवकीसकैनशारदगाय अर्थकहानीकोहमेंतानकहहुसमुझाय</p> | |
| <p>अथादेखिपुनिवैद्यसुजाना बोलोवैद्यसुनहुनरराया जबरनवासहिशून्यनिहारो भूपभुवनकरभीड़सिगानी कह्योभीरुप्रियभयजिनकरहु</p> | <p>नृपतभयेउसहमतजबजाना रहैनयहांकोइअपनपराया गूढमंत्रवरवैद्यविचारो केवलवैद्यरह्योअरुनी कहोअथाविस्मयपरहरहु</p> |

پاسے خود را بر سر زانو نهاد
 و دنیا بد میگفت از لب تر نش
 خار در دل چون بود داده جواب
 دست کے بودے غماز ابر کے

چون کہ را خار در پایش خلد
^{انقال شد}
 دز سر سوزن کے جوید سرش
 خار باشد چون چنین دشوار یاب
 خانه دل را اگر بیدے هر خے

با حکیم اور از ہا میگفت فاش
 از مقام خواجگان و شہرتاش

آن کنیزک را کہ رستی از عذاب
 در علاجت سحر با خواہم نمود
 ان کنم با تو کہ باران با چمن
 بر تو من مشفق زمر از صد پدر
 بر کے این در مکن ز ہزار بار
 ان مراد تو زود تر حاصل شود
 زود گردد با مراد خویش جفت
 شراد سر سبزی بتان شود
 کرد ان ز بخور را ایمن تر بسیم
 وعدہ با نا اہل شد رنج روان
 در خواہی کرد باشی سد و خام
 صورت رنج کنیزک باز یافت
 شاہ را زان شمع آغشا کرد

گفت انکہ آن حکیم با صواب
 چونکہ دانستم کہ رنجت جلالت زود
 شاد باش و فارغ و یمن کہ من
 من غم تو بخورم تو غم مخور
 تا توانی پیش کس مکشای را ز
 چونکہ اسرارست نہان در دل بود
 گفت پیغمبر کہ ہر کوہر نہفت
 دانہ چون اندہ زمین نہان شود
 وعدہ ہاد لطف ہائے من حکیم
 وعدہ با اہل کرم گنج روان
 وعدہ با بایہ وفا کردن تمام
 آن حکیم مہربان چون را زیافت
 بعد از ان برخاست عزم شاہ کرد

कंटा
 कंटकचराणचुभेमगमाहीं
 सूक्ष्मसूचिकरताहिनिकारै
 पदकंटकअसदुस्तरहोई
 मनकरशूलसबहिंजबजानहिं

निजजंघाधरिदेखैताहीं
 नहिंदेखैतबजलहिपरवारै
 मनकंटककसकठिननहोई
 दुरितनरहैकोजीवजहानहि

प्रेमव्यथानिजवैद्यतेपुलकगातजलनयन
 कहीनामगुराबाससबजहांसोप्रियतमअनयन

विलखतवैद्यकहीमृदुबानी
 मर्मतोरमनकरहमजाना
 रहुनिशंकभयशोकविहाई
 तबदुखसहेंजोईश्वरइच्छा
 सबहीसनयहभेददुरायेउ
 जबलगभेदगुप्तमनमाहीं
 ऋषिकहभेदगुप्तजोराखें
 धान्यधरातलरहेउमिलाई
 बीज ^{वृद्धी} _{बीज} दाढसदेताकोसमझावा
 प्रणालकजनप्राणबचावहिं
 तजिप्रमादप्रणपूरोपारै
 वैद्यसुनियमनगतपहिचानी
 त्वरितनरेशनिकटसोग्रावा

तबदुखरंचकरहैनरानी
 तबदुखहरौंसुखनसमाना
 सुखहि ^{नामवैद्य} कमलकिवारहिपाई
 पितुनेअधिककरोतबरक्षा
 जिनकाहूसनप्रगटदियायेउ
 निजकरनिधिकहंविग्रहनाही ^{हाति}
 शीघ्रसोबांछितफलकोचाखै
 सधनदृष्टहुइकरलहराई
 दासरादुखदलिनअभयकरावा
 पामरप्रणामंजधारदुबावहिं
 कहिनकरैतिहिलीखिबचारै
 जिहिदुखदुरितभईवहरानी ^{नाहई}
 कछुकुसैनदेताहिबुझावा

شاہ گفت اکنون بگو تدبیر چیست در چنین غم موجب تاخیر چیست

گفت تدبیر ان بود کان مرد را
حاضر آریم از پئے این درد را

ز رخ در او اله و شنید اکت
زرا اگر چه عقل می ارد و لیک
پس فرستاد ان طرف یکد و رسول
اینک این خلعت بگیر این زرویم
مرد مال و خلعت بسیار دید
اندر آمد شادمان در راه مرد
اسپ تازی بر پشت و شاد تاخت
اے شده اندر سفر با صدر رضا
در خیالش ملک و عز و مهتری
چون رسید از راه ان مرد غریب
شاہ دید او را و بس تعظیم کرد
پس حکیمش گفت کائے سلطان
بعد از ان از بهرا و شربت بساخت
چون زربخوری جسمال او نماند
چونکه زشت و ناخوش و رخ زرد شد
عشقهای کز پئے رنگی بود

خاصه مفلس را که خوش رسو کند
مرد عاقل باید او را نیک نیک
حاذقان و کاتیان بس عدول
چون بیای خاص باشی و ندیم
غرض از شهر و فرزندان برید
بے خبر کان شاه قصد جانش کرد
خونبهای خویش را خلعت ساخت
خود بیائے خویش تا سوراقتضا
گفت عزرائیل رو آری بری
اندر او درخش پیش شه طلیب
مخزن زرد را بدو تسلیم کرد
این کنیزک را بدین خواجه بده
تا بخورد و پیش دختر میگذاخت
جان دختر در و بال او شامد
اندک اندک از دل او هرو شد
عشق بنود عاقبت تنگی بود

कहेउनृपतिपुनिअबकहकीजै

करहुउपायजोयहदुखहीजै

जिहनरविरहवियोगबशविकलभईवरनारि

ताहिबुलावहुघनकरनाशहिदुःखदवार

जनि

धनकरलोभदिखावहुताई

यहापिबित्तधनहैबुधिराता

दूतभेजनृपताहिबुलायो

दूतनकहीभेटधनलीजै

धनकोलोभसुबुद्धिनसावा

हर्षितचलोराजगृहपाहीं

चलोअश्वचटधनरंगभीनो

हर्षितमार्गचलोधनभोजी

मनमेंधननिजहांधनकीदेरी

पथिकजबहिपुरपारनठयेऊ

नृपतिदेखिबहुआदरकीनों

कहेउवैद्यपुनिराजाफही

मधुरपयविषमय^{श्रावत}असदीनो

जसजसतनकीकांतिसिरानी

पीतवररामुखद्युतिकुमलाई

तनकरभेमनुच्छसुनिभाई

नसैदरिद्रीजबनिधिपाई

यहरहस्यपावैकोईजाता

चनुरबतकहीमेंजिहपायो

प्रातपयाननृपतितनकीजै

पुत्रकलत्रघरहुविसरावा

वलिपशुसमनशोकमनमाहीं

प्रांशावेचतनुनिजकरदीनो

अपनेहीपांयमृत्यजिनखोजी

मत्युघोरनिजघातघनेरी

नरपतिनिकटवैद्यलेगायेऊ

मरिणाहाटकधनबहुविधिदीनों

राखोयाहिराजगृहमाहीं

खानहीबलयोबनभयोफिनी

तसतसप्रेमहीनभईरानी

घटौप्रेमबाढीनिदुराई

मलघरनिकटकिसज्जनंजाई

چونکه زرگرا از مرض به حال شد
زرگدانشش شخص او چون نال شد

رخیت این صیاد خون صاف من
رخیت خونم از برای استخوان
اسے ندانده که غنچه خون من
خون چون من کس چنین بیگ است
باز گرد دسوسے اور ان سایہ باز
سوے ما آید ندا ہمارا صدا
ان کینزک شد ز رنج و عشق پاک
چونکہ مروہ سوے ما آئندہ نیست
ہر دمے باشد جو غنچہ تازہ تر
وز شراب جانفزایت ساقی است
یافتہ از عشق او کار و کیا
با کریمان کار ہا دشوار نیست
نے پئے امید بود دست و نہ بیم
تا نیا بد امر و الهام از الہ

گفت من ان آہوم کر نواف من
اسے من ان پیلیم کہ زخم پیلبان
انکہ کشتیم پے ما دون من
بر من است امر و زفر طاہرے است
گر چہ دیو ادا فگند سایہ دراز
این جہان کوہست و فعل ماندا
این بگفت و رفت در دم زیر خاک
زانکہ عشق مردگان پایندہ نیست
عشق زندان در روان دور بصر
عشق ان زندہ گزین کو باقی است
عشق ان بگزین کہ جملہ انبیا
تو بگو ما را بدان شدہ بار نیست
کشتن ان مرد بردست سلیم
اونکشتش از برای طبع شاہ

آنکہ از حق یابد او وحی و خطاب
ہر چہ فرماید بود عین صواب

मुख छवि छीन मलीन मन रोग ग्रसत कृपागत
मागत मृत्यु महेश पै जीवन तिहन सुहात

कहत दैव मैं कहा बिगारा
हाय कष्ट कोइ संग न साथी
तुच्छ लोभ हित जिन मोइ मारे
जे न रह मैं प्राज कल्यावहि
छाया भीत जो भोर बढोव
पर्वत मांहि कहै कोइ जै सो
अस कहि प्राणा त्यागति न दीनो
प्रेत न प्रीति पोच जग माहीं
कृतक संसारी
जिह कर सकल अमंगल नाहीं
तासु प्रेम अभिमत फल दाता
मुनि जन प्रेम पुंज जग जै ते
मति कहि प्रभु मोहि किह बिध पावहिं
यह मत कहा कि हम वहाँ कैसे पहुँचें
वैद नतिह स्वारथ ब्रह्मा मरुउ
निस्स्वारथ निर्वैर अकामी

मृग मद हेतु हिरण्जिन मारा
दंत लेन हित मारौ हाथी
सो कहा सुख सो वेद त्यागौ
निश्चै ते नर दुख कल्यावहि
संध्या लौट ताहि पर आवे
उत्तरति हृपावे पुनि तै सो
प्रेम विगत रानी को कीनो
बादल की छाया
जिम जरा पावक वारिद छाहीं
सिंधु सरस समरहत सदाही
मोक्ष पियूष पयोधो बधाता
पूजित तासु प्रेम रस ते ते
प्रराग पाल तोहि आपवलावहि
इच्छा द्वेष न भय चित धारे उ
ईश राजा यस को अनुगामी

होइ प्रकाशक जिन हि ये ईश्वर करुणा सीव
ते कबहुं कि अनुचित करिंहि नहिं साधारण जीव

شاد و خندان پیش تنیش جان بد
ہمچو جان پاک احمد با احمد
کہ بدست خویش خوبان شان کشند
تو را کن بدگانی و سبرد
اوستگے بودے در اندہ نہ شاہ
نیک کرد اولیک نیک بد نما
سوے تخت و بہترین جا ہے کشد
کے شدے ان لطف اطلق مہر جو
مادر شقن از ان غم شاد کام
انچہ در و بہمت نیا بدان دہ
دور دور افتادہ سبگر تو نیک

ہمچو اسمعیل پیشش سر بہ
تا ماند جانت خندان تا ابد
عاشقان جہام فرح آنکے کشند
شاہ ان خون از پے شہوت نکر د
اگر بود شش کار السلام اللہ
پاک بود از شہوت و حرص و ہوا
ان کے راکش چنین شاہے کشد
گر بدیدے سودا و در قمر او
طفل مے لرزد ز نیش حتر جہام
نیم جان ستاند و صد جان دہد
تو قیاس از خویش میگیری و لیک

بیشتر آتا ہو گویم قصہ
ہو کہ یا بی از میا غم قصہ

بود بقاے مرا و را طوطے خوش نوا و سبزد گو یا طوطے

قصہ کا خلاصہ حیو ایک رہا ہو جو سنابزین شکار کو جاتا ہے جو کام کر دہ و غیرہ ڈشٹ جیو میں اونکو مارے کر پرتی رہ پستری کو دیکھ دسپ عاشق ہو جاتا ہے پھر کرنی کا یہ خاصہ ہے کہ جو کو پسندے میں اپنا کر آپ جٹ انگ ہو جاتی ہے اس کے علمی لہجہ سے حیو بہت دکھی ہوتا ہے پھر بیکے دل سے پرارتنا کرتا ہے تب اسکو سدا و مرشد کامل پہنچاتا ہے اور وہ ہم نیم دترک منیات و حصول واجبات کا شربت ملا کر اہمان دخی کو جبر پرتی کرتی عاشق ہے مارڈا تہا جس دہ پرتی (دفترت) اسکے ہمیشہ کوتا بعد از موتی ہوا و شیو سکھی ہو جاتا ہے

आशी

ईशराजसीसजो धारै
ध्रुव समअमरधामते पार्वहिं
प्रियतमहाथजो सीसगमावे
स्वारणहितननृपतिमरायो
निहसुकर्मईशहिनिहिंभावत
यदिउसके मुकमेईश्वरको अछे नलागे
ईर्ष्यामोह निकरनहिंजाके
आतमवितजनजाहि संधारे
शुभपरिणामजाननहिंलेतो
होइअधीरबालविललावे
प्राणाजोईश्वरहेनगमावे
करबिकल्पगुणादोषलगावे

ज्यो प्रल्हादसोताहि उबारै
योगअग्निमेंजेजरिजावहिं
अमरहोइआनदधनपावे
करबिकल्पजिनपापकमाओ
होतोश्वानराजकिमपावत
कुत्ता
स्वप्नेहुअनुचितहोइकिताके
सुयशहोइसुरधामपधारै
तोमुनीशआयसुकिमदेतो
मातप्रसन्नहोइचिरवावे
अनपावनीबस्तुते पावे
ईश्वरभेदसमभनहिंपावे

कहं एक आख्यापिका जाते समभो मर्म
निजविचारअनुसारजनधरै संत परभर्म

बलि एक बहुवंत सुहायो

प्रियशुकतिनइकपालिपदायो

संक्षपद्तिहास

जीविरूप राजा संसार रूप बन में आवे को गया कि कामादिक को मारे वह प्रकृतिरूप स्त्री को
देख आसक्त हो गया प्रकृति का यह स्वेभाविक गुण है कि जीव को फन्दे में आप अलग हो
जाती है फिर उसके बियोग से जीव दुखी हो गया फिर सच्चे मन से ईश्वर से प्रार्थना करने
पर वैद्य सद्गुरु स्त्री प्राप्ति हुई उसने अभिमान को जिस्पर प्रकृति आसक्त थी यम नियमादि
का श्रवण दिया जिससे वह मर गया बस फिर प्रकृति उसकी चेरी बन रहने लगी —

بر دروکان بودی نگهبان دکان
 در خطاب آدمی ناطق بدی
 خوابه روزی سوئے خانه رفتی بود
 اگر چه بر جبت ناگه از دکان
 جبت از حلقه زد و کان سوگرخت
 از سوئے خانه بیا مد خوابه اش
 دید بر روغن دکان و جامه چرب
 روزی که چند سخی کو تاه کرد
 ریش بر میکند و میگفت اے دریغ
 چو پیچیده سر بر بندم گذشت
 طوطی اندر گفت آمد انترمان
 از چه ای گل با کلان امیختی
 از قیاسش خنده آمد خلق را
 کار پا کان را قیاس از خود گیر

نکته گفتی با همه سوداگران
 در نوا طوطیان حاذق بدی
 در دکان طوطی نگهبانی نمود
 بهر موشی طوطیک از بیم جان
 شیشه های روغن گل را بر تخت
 بر دکان به نشست فارغ خوابه اش
 بهر شش زد گشت طوطی کل ز ضرب
 مرد بقال از ندامت آه کرد
 کا قتاب نعمتم شد زیر میخ
 پاس بر بے مچو پشت طاس و پشت
 بانگ بر درویش بر زد کای فلان
 تو مگر از شیشه روغن ریختی
 کو چو خود پنداشت صاحب دلق را
 اگر چه ماند در نوشتن شیر و سیر

جمعه عالم زین سبب گمراه شد

کم گس ز ابدال حق آگاه شد

اولیا

نیک و بد در دیده شان یکسان نمود
 اولیا را همچو خود پنداشتند

اشقیاء در دیده بینا نمود
 همی با اولیا برداشتند

निह प्रतिदिन दुकान पराखै
मनुज समान मधुर कहै बचना
इक दिन वैश्य गये उ गृह फलू
इक विलार मूष कहित धावा
पैर सुपारी परल परजाई
कर गृह कार्य तासु प्रभु आवा
देखि दुकान तेल भय दाटा
शियल भयो शुक्र बोलत नाही
मीजे हाथ बहुत पछिताने
आवात ही एक सन्यासी
ताहि देखि शुक्र बोलत भयेऊ
किह विधि तुम रखल्यो बनाये
हंसे लोग लखि तासु बिचारी
दृष्ट स्वभाव सहज मन वारे

विषय

三

सोमृदुबैनग्राहकनभाखै
 लोकचकितदेखैप्रभुरचना
 तजेउदुकानत्राणशुकराज
 तिहशंकाशुकशुभाउड़ावा
 पक्षप्रहारफुलेलगिराई
 बैठसहर्षनशुकतहापावा
 भारकीरकीनोरखल्बारा
 बरिाकविकलभाअतिपन्नाही
 शोभाहीनदुकानहिपावे
 लूपकेशनखमश्रुउदासी
 निकटबुलाइमुनिहिअसकहेउ
 कहोतुमवितिकफुलेलगिराये
 जिननिजसमजानोव्रतधारी
 निजभ्रमसंतनप्राहिनिहारे

शजा

डा. वि. वि. वि.

चर्मदृष्टिआकाशराकरभृष्टभोगबहुलोग
संतर्मक्यों जानहीलगेअहिर्निशभोग

चर्महृदिप्रसूनकीहोई
संतनसेसभतागहिप्रानहि

विधिनिषेधमें भेदन कोई
उन्होंने जसग कलपियवानाहि

گفت اینک با بشر اینان بشر
 این ندانستند ایشان از عی
 هر دو گل خور و ندانند نور و شید
 هر دو غنی خور و ندانند یک اب خور
 صد هزار ان بچنین اشباه بین
 این خور و گرد و پلیدی زو جدا
 این خور و زاید همه هول و حد
 این زمین پاک و آن شورست و بد
 هر دو صورت گر بهم ماند و است
 جز که صاحب ذوق نشناسد طعم
 نعمت الله این عمل را در قضا
 هر چه مردم میکند روزی نه هم

ما و ایشان بسته خوا بیم و خود
 هست فرقی در میان بی انتها
 یک زمین شدنش وان دیگر عمل
 ان یکم خالی وان پر از شکر
 فرق شان هفتاد و ساله راه بین
 وان خور و گرد و همه نوح خدا
 وان خور و زاید همه عشق احد
 این فرشته پاک و آن دیو ست و دو
 اب تلخ و اب شیرین را ندانست
 شهید را تا خورده که دانند ز موم
 بر حمت الله ان عمل را در و فنا
 ان کند که هر دو بینا و مبهم

مؤمنان را برد بایست عاقبت
 بر منافق مات اندر آخرت

مونسش خویش جانیش خوش شود
 نام ان محبوب از ذات و بی است
 میم و او و میم و لون تشریف نیست
 زشته این نام به از حرف نیست
 حرف ظن آمد در معنی جواب
 در منافق تند پراشش شود
 نام این پیغمبر زافات و بی است
 لفظ مومن جز بی تعریف نیست
 تلخی ان اب بحر از ظرف نیست
 بحر معنی عنده ام الکتاب

در منافق تند پراشش شود
 نام این پیغمبر زافات و بی است
 لفظ مومن جز بی تعریف نیست
 تلخی ان اب بحر از ظرف نیست
 بحر معنی عنده ام الکتاب

मांसरुधिर^{हड्डी}अस्थीनसजारा
 हियकी फूटन देत दियार्ई
 जोंक हंस दोउ जलैर हार्ई
 ईखमिर्चइ करेवत हि वार्ई
 भेद अनेक परस्पर पेखिय
 इनको भोग मलहि उपजावे
 इनमें ईर्ष्यादिक मल नाना
 ऊपर खेत भेद है जेतो
 देखत परत भेद नहिं जाना
 जिह्वा जासु विगतर सहोई
 नर्कराह इन आपसंवारी
 देखे करे सोई नहिं आना

निन्द्रा भय समान अहारा
 हैं बहु अंतर तिनके मांई
 विधि दोहुन की गति विलगाई
 तीक्ष्णारा एक मधुर इक होई
 पूरब पश्चिम अंतर देखिय
^{पश्चिम}
 उनको आत्म प्रकाश बढावे
 उनमें बढे ईशगुणागाना
 भक्त दुष्ट में जानहु तेतो
 जल अमृत किम कहिय समाना
^{ग्रह}
 मधु और मौम कि जने सोई
^{कल्याण}
 श्रेय मार्ग के वे अधिकारी
 नरवानर किम कहिये समाना

रविमंडल को भेद वे अंत मुक्ति को जाहिं

शूकर कूकर योनि में परे सो यह बिल्लाहि

सुखी होइ देव कहि टेरो
 उत्तम पद वह निज गुणा पावै
 आक्षर मात्र दक्षार बकारा
^{देव}
 वर्णा अक्षर सकार रकार
^{अक्षर}
 आक्षर पात्र अर्थ जल जानौ

असुर कहें दुख होइ धनेरो
 निज अब गुणाय हनीच कहावै
 इसमें बहैन गुणा की धारा
 इनहूमें कछु नाहिं विकारा
 समुद्र एक दोउ माहि समानो

دان کہ این ہر روز یک اصلی روان
 زر قلب و زرنیکو در عباد
 ہرگز اور جان خدا بیند محک
 انکہ گفت استفت قلبک مضطفا
 در ہزار ان لقمہ یک خاشاک خورد
 حش دنیا نزد بان این جہان
 صحبت این جس بچو نید از طیب
 صحبت این جس از مسموم می تن
 شاہ جان حربم را ویران کند

و ز ہر گز
 نداشت

بر گذر زین ہر دور و تا اصل ان
 بے محک ہرگز ندارد اعتبار
 مر یقین را باز داند او شک
 ان کہے داند کہ پر بود از صفا
 چون در آید حش زندہ پے میرد
 حس عقبہ نزد بان آسمان
 صحبت ان جس بچو نید از حبیب
 صحبت ان جس از تخریب بدن
 بعد ویرانیش اباد ان کند

اے خنک جانے کہ در عشق مال
 بذل کردہ خان و مان و ملک و مال

کرد ویران جہان ہر گنج و زر
 آب را بہرید و جو را پاک کرد
 پوست را بشگافت پیکان را کشید
 کار بیچون را کہ کیفیت نہسد
 کہہ چنین بنماید و گھضت داین
 کا ملان کہ سر تحقیق آگست
 نے چنان حیران کہ پشت سہ دوست
 ان یکے را روے او شد سوے دوست

و ز ہمان گنجش کست مسموم تر
 بعد ازان در جو روان کرد آب خورد
 پوست تازہ بعد از اتش پرومید
 اینکہ گفتم از ضرورت میجہد
 جز کہ حیرانی نباشد کار دین
 بخود و حیران و مست دوالہ اند
 بل چنین حیران کہ غرق و ست دوست
 دین یکے را روے او خورد و کئے دوست

दोउनकोइकसिजनहारौ
 खोटोखरोजोसोनोलप्रो
 आतममाहिपरखहरिदीनी
 भलोकरतभनहर्षबढावे
 ग्रासअनेकजीवनितखावे
 इन्द्रिनचेष्टाहैजगमाही
 देहिकलाभवैद्यतेपावहु
 मनइच्छातनपोखनहारी
 योगअग्निजोतनहितपावे

दुहुनत्यागइकपितहिनिहारौ
 बिनाकसौदीजाननपाओ
 भलअनमलजानहुतुमचीनी
 बुरेमाहि संतापतपावे
 एकहुतिनकाहोइनभावे
 आत्मेच्छाकनसुरपुरजाही
 गतिचाहौसरगुरुपेजावहु
 आत्मेच्छातनदेइउजारी
 अंतपर्मसुखकोसोइपावे

ईश प्रेम केहित दिये जिन तन धन और प्रारा
 धन्य सोई नर जगत में सा बी वेद पुरारा

जानदवीनिधिघरहिंविदारै
 गदलौसरिकोनीरविकारै
 त्वचाविदारिकेंदकहिकाटै
 ब्रह्मादिकतिहजिनीहंजानी
 दुखनदुखीनहिंसुखहरषाही
 जिनजानाकछुमर्मविशेषी
 कबहुनविसरहितीनैस्वरूपा
 प्रभुखुलखहिंजोईशमनेही

एकतोईशमआशकिअनुकूलचलतेहैं(शारी)

धनलेनातअधिकसमारै
 स्वच्छवारिपुनिनिहमेंडोरै
 कछुदिनमेंनूननत्वकवाढै
 भक्तनहितकछुयुक्तिबखानी
 बिघ्नअनेकनतिहमगमाही
 रहैचकितप्रभुरचनादेखी
 निपटनिमानभयेतद्रूपा
 तनमयएकननिजसुधिनेही

प्रेममेंहुहुय
 एकसेहैजिनेअपनीमुयेंजहीहै(अच्छूत)

روے ہر یک مینگر میدار پاس
دیدن دانا عبادت این بود
چون بسے ابلیس آدم روے بہت
زانکہ صیاد آورد بانگ صیغیر
بشنودان مرغ بانگ جنبش
حرف درویشان بدزد و مردون
کار مردان راستی و گرمی است

بوکہ گردی تو ز خدمت روشناس
فتح ابواب سعادت این بود
پس بہر دست نیاید داد و دست
تا فریید مرغ را ان مرغ گیر
از ہوا آید بیاید دام و نیش
تا بخواند بر سیلے زان فنون
کار و مکان حیلہ ربے شرعی است

ان شراب حق ختمش مشکیناب
بادہ رختمش بود گند و عذاب

خشم و شہوت مرد را حول کند
چون غرض آید ہنر پوشیدہ شد
چون دم قاضی بدل رشوت قرار
صد ہزار ان دام و دانہ است ایخدا
و مہدم پالستہ دام تو ایم
میرہانی ہر دمے مارا و باز
مادرین اینار گت ہم میکنیم
نے میندیشتم ما جمع و جوش
موش تا اینار ما حفہ زدہ است
اول ایجان دفع شیر موش کن

از استقامت روح را مہدل کند
صد حجاب از اول بسوے دیدہ شد
کے شناسد ظالم از مظلوم ترار
ماچہ مرغاب حریص بے لوزا
ہر یکے گم باز و ^{باعثا بکند پروازی} شویم
سوے داسے میر ویم اسے بے نیاز
گندم جمع آمدہ گمے گنیم
کین خلل در گندم است از مکرموش
وز خنش انبارا خالی شدہ است
وانگہان در جمع گندم جوش کن

नीच

करिये सदा सबकी सेवकाई
 सतसंगतिहि पर्यंत पढ़ोई
 मंदहु बहु मुनिवेशवनावें
 वोलै व्याधिखगनकी बानी
 अपनी सी बोली सुनि आवें
 चोरहिं शब्द मुनीशन केर
 संतन संग प्रकाश बढ़ावे

नाशहि भ्रमसतसंगति पाई
 मंगलं मूल भोक्ष प्रद सोई
 तिनके निकट मुजन नहिं जावें
 पक्षी निज सहचारी जानी
 रुटजड़ जंतु जाल फंसि जावें
 भोरे भक्त फंसहि तिह फेरे
 रागरोष रुचि दुष्ट हृदोव

मृगमद बैना खुलन ही करत जगत प्रतिपाल
 यदको घट खोलो जबहि फाड़े गंधक पाल ॥

कामलाधमदंष्ट्र करावे
 इच्छा निज अधिकार जमावे
 न्यायाधीश धूसले जोई
 मायाने बहु जाल पसारै
 कैसीहु हम निज शक्ति बढ़ावें
 यदपि नित्य तुम लेत ब्रचार्ड
 बहुत अन्न संछप हम कीनो
 अज्ञानी हम जानत नाही
 निपर निठुर नित लेत चुराई
 पुत्र प्रथम तुम नाहि बिडारो
 मूषक

आत्मा स्थिर रहन न पावे
 अशित प्रावरण मन पर लावे
 दीन न हित कि विचारहि सोई
 हम बहु भूखे बिहंग बिचारे
 नित नये जाल माहिं फंसि जावें
 तदपि फंसै पुनि जालहि जाई
 ताको द्वेर परत नहिं चीनो
 मूषक की न छिद्र निह माही
 अतशय अन्न न परत दिखाई
 राशिकरम हित तब पग धारो

| | | |
|--|--|--|
| <p>بشنو از اخبار ان صد و صد و گر نه مو شے دزد و در انبار است ریزه ریزه صدق هر روز سے چرا بس شاره آتش از آهمن حمید ایک در ظلمت یکے در روشنایی</p> | <p>لا با حصور قلب نماز سنین ہوتی</p> | <p>لا صلوة تم الا بالاحضور گنہم اعمال صد سالہ گجاست جمع سے ناید درین انبار ما زان دل سوزندہ پذیرفت و کشید سے ہند انگشت براستارگان</p> |
| <p>میکشد اشارگان را یکا یک تا کہ نفروزہ چراغے بر فلک</p> | | |
| <p>چون عنایات بود با ما تقسیم گر ہزاران دام باشد در قدم میر ہند ارواح ہر شب زین قفس شب ز زندان پنجہ زندانیان نے غم و اندیشہ سود و زیان حال عارف این بود بخواب ہم خفتہ از احوال دنیاروز و شب آہکے او پنچہ بہینہ و بر تقسیم شمہ زین حال عارف و انمود رفیہ و صحرایے بچون جان شان فارغان از حرص و کباب و حصص چون بسوئے دام بازا ندر شوند</p> | <p>کے بود بیچے اذان ذرو لیم چون تو بانے نباشد بیچ غم فارغان نے حاکم و محکوم کس شب زد دولت بیخبر سلطان نے خیال این فلان وان فلان گفت ایند ہم رفوہ زین مردم چون قلم در پنجہ تقلیب رب فعل پندار و جنبش از قلم خلق را ہم خواب حسی و ر بود روح شان اسودہ و ابدان شان مرغ دار از دام حبستہ در قفس داد جو یان در پے داور شوند</p> | <p>کے بود بیچے اذان ذرو لیم چون تو بانے نباشد بیچ غم فارغان نے حاکم و محکوم کس شب زد دولت بیخبر سلطان نے خیال این فلان وان فلان گفت ایند ہم رفوہ زین مردم چون قلم در پنجہ تقلیب رب فعل پندار و جنبش از قلم خلق را ہم خواب حسی و ر بود روح شان اسودہ و ابدان شان مرغ دار از دام حبستہ در قفس داد جو یان در پے داور شوند</p> |

सुतसनेहबिनु रामनरीभे
मूषकजोनहिलेतचुराई
जोसत्कर्मनित्यहमकीने
योगविचित्रप्रकाशबढ़ावे
घुसोचोरइकअंतरमाहीं

मनहीताहिसमर्पितकीजै
जीतनभरकीकहांकमाई
सोकिमआजपरतनहिंचोने
बहुअमकरजाकोमनमावे
अहंकार^{लोण}तिहदेनबुभाई

बिनागी

बिसफुलिंगउपजैबहुनकरैचोरतिहनाश
दीखेनहिअज्ञानतमकैसेहोइप्रकाश

प्रभुप्रतापजोकरहिसहाई
पगपगपैबहुबिघ्नहुघेरें
मगनसुषुप्तिसुखहिनजोई
चोरहिकारागारनमासे
लाभअलाभनभयदुखना
ऐसीहिदृशामुनिनकरहोई
छिनहूसोनजगततनहेरे
लेखकजिन्हेंदृष्टनहिआवे
मुनिनिजसुखमेंमगनराही
उनकीलौप्रभुचरणनलागी
रागद्वेषईर्षाजहांनाहीं
जबसमाधितेहोइउथाना

चोरहुकरैसदासिवकाई
तुमरीरूपासकलनिरवैरे
राजाप्रजानसुखदुखकोई
राजहिराजहुनाहिउजासे
शत्रुमित्रजहांएकसमाना
जाग्रतहूसुषुप्तसमसोई
षुष्कपत्रजिममारुतमेरे
लिखतलेखनीअसकहिगावे
जैसेजनसुषुप्तिकेमाहीं
आत्मिकशरीरिकसुखभागी
पद्मपत्रइबजिमजलमाही
तबपुनिकरेंईशगुणांगाना

| | |
|--|---|
| <p>چونکہ نور صبح دم سر بر زند ترک روز آخر چو باز آیین سپر</p> | <p>کر گیس زرین گردان سوزند ہندوسے شب را بہ تیغ افکنند</p> |
| <p>میل ہر جانے بسوئے تن شود ہر تنے از روح اکبتن شود</p> | |
| <p>اسپ جان را میکشد عاری ازین لیک بہر آنکہ روز ایتد باز تا کہ روزش واکشد زان مرغزار کاش چون اصحاب کف ان روح را تا ازین طوفان بیداری و ہوش اسے بسا اصحاب کف اندر جان غار با تو یار با تو و سر رود</p> | <p>سپ النوم اخوت الموت است این بر ہند بر پائے شان بند در آذ در چرا گاہ اردش در زیر بار حفظ کر دے یا چو کشتی لوح را دار ہیدے این ضمیر و چشم و گوش ہلکے تو ہست اندر این زمان ہر بر چشم است و برگشت جہ سود</p> |
| <p>گفت سلسلے را خلیفہ کان توئی کز تو مجنون شد پریشان و غوی</p> | |
| <p>از دیگر خوبان تو افسردن نیستی دیدہ مجنون اگر بودے ترا با خودی تو لیک مجنون بنمود است ہر کہ بیدار است او در خواب تر چون بخت بیدار ہنود حبان ما</p> | <p>گفت خامش چو نغمہ مجنون نیستی ہر دو عالم بے خطر بودے ترا در طریق عشق بیداری بد است ہست بیداریش از خوابش بتر ہست بیداری چو در زندان ما</p> |
| <p>۱۔ سال کا اصحاب کف کی حفاظت کی تھی ۲۔ خواب میں ہر منامات سے خود بچتا جو کہ بیداری میں ہوتا ہے</p> | |

| | |
|---|--|
| <p>हंस सुनहरी जब पग धारें ^{सूर्य} रजनी को तम दृषि न आवे</p> | <p>सहस्रकिरन जब भानु पसारें ज्ञान भये जड़ता जिम जावे</p> |
| | <p>मानो जीवन के किये निसमें प्राणाप्यान भोरे दि ईश्वर रूपासे प्रविशे तन्में आन</p> |
| <p>रहै न तनु जनु प्राणा दुलारौ लाबी डोर बांध बन माहीं दिन में ताहि पकर जिम लावें कुंभकर सा सम दृष्टि दासा तोल जगत में हूंद मचाते ^{गली} अटविगण विचरत बहु जग माहीं हिले मिले तुम में निस बासर</p> | <p>नीद मृत्यु की भग्नि निहारौ छाड़ैं अश्व जहां तू राखाहीं वो भाला दि प्राप चढ़ जावें मोबर रहते जो छेः माया ^{बदन} मन बच कर्म न पाय कमाते रहें निमग्न सुषुप्त की नाहीं हों हि न तुम रे नयन उजागर</p> |
| | <p>नृपाति कह्यो अस निदरि कर लै लीहि माहिं निहार विवरन तन मन मलिन अति तव हित राज कुमार</p> |
| <p>तेते शुभग सुधर मम चेरी बोली वह न दृष्टि दृढ तोही अहंकार युत नृप तब ज्ञाना जगत जाल जिह की मति पागी ईश्वर भय जो देति भुलाई</p> | <p>क्यों ऐसी प्रिय मजनू केरी वह जिह दृष्टि विलोकत मोही प्रेमिन में न अहम मद माना वह न हीं राम चरसा अनु रागी भाड़ परै ऐसी चतु राई</p> |

جان ہمہ روز لگد کوب خیال

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

در بیان وسوسه و خوف زوال

نے حفا سیمانہش کے لطف وافر

نے بیوئے اسمان راہ سفر

عالم ملکوت

خفته ان باشد که اواز ہر خیال
نے چنان کہ از خیال ای بچال
در پور اچون حور بیند او بخواب
چونکہ تخم نسل را در شورہ ریخت
ضعف سر بیند از ان وقت پلید
مرغ بر بالا پیران و سایہ اش
ابلیہ صیاد ان سایہ شود
بے خبر کان عکس ان مرغ ہواست
تیرا تازد بپوئے سایہ او
ترکش عمرش تہی شد عمر رفت
سایہ یزدان چو باشد دایہ اش
سایہ یزدان بود بندہ خدا
دامن او گیر زو تہ بے گمان
کیف مد الظل ^{زود} نقش او یاست
اندرین وادی مروبے این دلیل

دنیا کے لوگ ایسا کر رہے ہیں۔

درجہ اولیٰ کا نذرانہ کا بھیلانے والا ہے۔

دارد آید و کند با او مقال
آن خیالش گردد و او را صد و بال
پس ز شهوت ریزد او با دیو اب
او بخوبی آید خیال از وے گریخت
اگر آن نقش بدید و نا بدید
میرود بر خاک بران مرغ و شش
میرود چندانکه نماند مایه شود
نماند خبر که اصل ان سایه کجاست
ترکش خالی شود از جنت و جو
از دیدن در شکار سایه تقیت
و با نماند از خیال و سایه اش
مردۀ این عالم و زنده خدا
تا به از آفت آخر زمان
کو دلیل نور خورشید خداست
لا احب الالفین گو چون خلیل

میں دوست نہیں کہتا ہوں یہی وہی کہو

روز ساریہ افتخارے راپاپ

دامن شاه شمس تبریزی بتاب

हृदफसौचितछिनधिखाही

हानलाभयशप्रपयशमाही

क्योंमासेप्रतिविंवतहांजहांननिमिलनीर

विमुखमुक्तिपथसेभयेव्याकुलचित्तअधीर

जगतस्वप्रवतभायेंताके
सोयोभूढस्वप्रचितलाई
कल्पितिअबलाचितजिनधरी
ऊतरत्नअमोलिकबेचो
तनअपवित्रबढीशिरपीरा
उड़नसुपरीएकनभमाही
मूढबधिकनिहमारतजाई
नहिंजानतहैखुाकीछाया
छायामाहिसोतीपुंवारे
श्वासतीरगयेसबहीखाली
श्रीगुरुदेवकरहिंजोदाया
ईशभक्तजोहोइविदेही
ताकीचरणाशरणागहिलीजै
छायाजिमसूरजहिलरवावै
सदगुरसतकोदेनलखाई

सबसंकल्पईशहितजाके
जागतहीपछितानअघाई
खलितनीर्यदुखपावतभारी
नारिअदृष्टिदेखमनरोयो
गदगदकंदनैनवहिनीरा
भूमिसंहिताकीपरछाही
यत्नकरतकछुहायनगाई
कहांपक्षीजाकीयहमाया
छूछोत्रोराचलेहथतारे
तरकसडारचलोतबख्याली
छूटैतबयहभूंदीमाया
मरजीवाकोईशमसनेही
जोतेयहसंसृतदुखजीजे
तिमहरिभक्तईशदरसावै
नाशवंतसेकहामिताई

प्रतिविंवहिंकरपाइयेबिंबविशोकविशाल

श्रीगुरुपदरजपाइयेत्यागाविन्दगुपाल

ما چو چنگیم و تو ز خم شمشیر میزنی
 ما چو نایم و تو از در مازتیت
 ما چو شمشیر بجیم اندر برد و مات
 ما که یا شیم ای تو مارا جان جان
 ما عدم یا نیم هستی یا ای ما
 ما همه شیران و نه شیر یزید
 حمله شان پیدا است ناپیدا است باد
 باد ما و بود ما از در دست
 لذت هستی نمودی نیست را
 لذت انعام خود را داگیر
 در بگیر می کست جت و جو کند
 سنگ را ندر ما کن در ما نظر
 ما بنو دیم و تقاضا مان بنود
 نقش باشد پیش نقاش و قلم

زاری از ما نه تو زاری می کنی
 ما چو کو میم و صیدا در مازت
 برد و مات مازت ای خوش صفا
 تا که ما ما شیم با تو در میان
 تو وجود مطلق انسانی نما
 حمله شان از یاد باشد و مبهم
 انکه ناپیدا است هرگز کم مباد
 هستی ما جمله از ایجا دست
 عاشق خود کرده بودی نیست را
 نقل و باده و جام خود را داگیر
 نقش با نقاش ^{حقیقت} چون نیر و کند
 اندر اکرام و سخاے خود نگر
 لطف تو ناگفته ما می شنود
 عاجز و بسته چو کودک در شکم

پیش قدرت حزن ملن جمله بارگه

عاجزان چون پیش سوزن کارگه

گاه نقش دیو که آدم کند
 دست نه تا دست چنان بدفع
 گاه نقش شادی و که غم کند
 نطق نه تا دم زنده از ضرر نفع
 اماکن و تیر اندازش بعد است

گاه نقش دیو که آدم کند
 دست نه تا دست چنان بدفع
 گر بهر انیم تیران که زماست

बीरणा समहममनुजघनेरे
 नदकृत बंसीमें स्वर होई
 जीतत हंसत रुदत जबहारे
 प्राणानाथ हमरी गति कैसे
 असत माहिसतकर अभियाना
 हम सबही जनु सिंह ध्वजाके
 पवन नदीख परसपरिहारा
 प्राणा अपान उदान उपाये
 यदपि भूतमय जगत पसारा
 निज पदभक्ति आपजो दीन्ही
 कर प्रकोप जो लेहु बहोरी
 मम दुर्गण पर दृष्ट नदीजै
 यदपि तास हम नहिं अधिकारि
 मलिन अप्रान्त दीन हम कैसे

बाजत तार तुमारेहि मेरे
 नर्तकिषण दुंदभिगति होई
 हार जीत दोऊ हाथ तुमारे
 खलखद्योत तरंगित तजैसे
 सतचिन्ता ^{परबीजना सूज} क्रमभाव समाना
 बलहित रहे मरुत रुखताके
 पूरा पुरुष प्रभाव पसारा
 पंचभूत मय पुर उपजाये
 अंतः प्रेम ज्ञान उजियारा
 प्रेमरुविरतिन चाहिये लीनी
 घटकुमार पर करै किजोरी
 नित दयालुता परिचित कीजै
 कीन कृपा निज ओर निहारी
 निबशगर्भ में बालक जैसे

भुवनेश्वर भूपाल प्रभु भुवदिलास भवजास

संसार

नरमरकट इबवश्य सब को कहिमहि मातास

सुरनरनाग असुर तनदाता
 को समर्थ जो हाथ हलावे
 पावन पुण्य जो हमसे होई

हर्षप्रमर्ष शोक अमभाता
^{दूसरे की विभूती देख मन में लाहो न}
 मूर्ख जो हठ कर गाल बजावे
 करुणा सिंधु करवत सोई

این نه جبر این معنی جباری است
 زلدی باشد دلیل اضطراب
 گر نبوده اختیار این جبریت
 زجر او ستادان بشاگردان جبر است
 و تو گوئی غافل ست از جبر او
 هست این را خوش جواب از بشنوی
 عصرت و زاری که در پیامی است
 ان زمان که من شوی بیچار تو
 من نماید بر تو زشتی گمنام
 عهد و پیمان میکنی که بعد ازین
 بس یقین گشت آنکه بیماری ترا
 بس بدان این اصل را اصل جو

ذکر جباری بر آنکه زلدی است
 خجالت باشد دلیل اختیار
 وین در بیخ و خجالت و از رم جبریت
 خاطر از بد بیرها گردان جبر است
 ماه حق پنهان ست اندر او
 بگذری از کفر و بر دین بگرو
 وقت بیامی همه بیداری است
 میکنی از حرم استغفار تو
 میکنی نیت که باز آیم بره
 جز که طاعت بنودم کار گزین
 من به بخشد هوش و بیداری ترا
 هر که ادر دست او بر دست بو
 بجهنگیا

هر که او بیدار تر پرورد تر
 هر که او آگاه تر رخ زرد تر

گر ز جبرش آگهی زادیت کو
 بسته از زنجیر چون شادی کند
 و تو من بینی که پایت بسته اند
 بس تو سر هنگی مکن با عاجزان
 چون تو جبر او بینی بینی لگو

بینیش زنجیر جباریت کو
 که اسیر جس آزادی کند
 بر تو سر هنگان شب بنشته اند
 ز آنکه بتود طبع و خو عاجزان
 در بے بینی نشان دید کو

प्रादस्वभावसमर्थगुसाई
कोपलूचि
 परवशभोगमाहिनरहोई
 जोस्वतंत्रकर्तवमेंनाहीं
 नहिं उपदेशनिवशपरकोई
 कहवप्रसादप्रतापबढ़ाई
 उत्तरदेहुंजिहसुनिमुखपावहु
 जबउपतापव्याधितनुघरे
बीमारी
 अपजलिजोरनयनबहिबारी
 पापरूपजनपरतदिरवाई
 अबकीजोदुखनिधिकोतरऊं
बीमारी
 निश्चयरुजजबकरतदुखारी
 तेसेहीदर्दजोमन्मेंआवे

लज्जा

तिहपरचलेकिंकछुवारीवाई
 भोगतनतरदेतक्योंरोई
 ब्रीड़ाकिमआवतमन्माहीं
 पुरुवारथपथप्रेमकिहोई
 सतउपदेशनप्रगटदिरवाई
 तजहुअधर्मधर्मसगआवहु
 तबहिकुदिलतारहतननेरे
बकती
 हायनाथकहिकरतपुकारी
 करतप्रलापनतिहदिंगजाई
 भजनछोड़कछुकाजनकरऊं
 ज्ञानचसुकोदेतउधारी
 उक्तंवाविनुहरिकिमपावे

प्रेमप्रफुल्लितजासुमनप्रभुतहांकरतप्रकाश
 अधरसूरमुखपतिप्रतिजगतेहोतनिराश

समरथजानप्रणयनहिंभावत
बप्रती
 वंध्योपाशकोभंगलगावे
 जबसामर्थतोहिकछुनाहीं
 अन्याहितदीननपरकैसे
जुलूस
 किधोंवाहिसमरथमतमानों
इश्वरकी

दीनवनतकसदुखिनसतावत
 बधुआकबआकाशउड़ावे
 ईश्वरगरादीखतचहुंघाहीं
 दीनस्वभावहोहिनहिंरेसे
 नाहितोमनहिदीनताआनो

१ यदि मनुष्य परवश है तो पुरुषार्थ और उपदेश निष्फल है

| | |
|---|---|
| <p>در سهران کار یک میل است بدان در سهران کار یک میل است نسبت و خا انیا در کار عظمی جبر است اند انیا را کار عظمی اختیار زانکه هر مرغی لبه جنس خویش کافران چون جنس سجین آیدند انیا چون جنس عظیم ^{فرشتگان} آیدند چون خدا اند نیاید در میان نعلط گفتم که ناسب بامتنوب نند و باشد تا قوی صورت پرست</p> | <p>قدرت خود را به بینی عیان نویس را جبری کنی کاین از غداست کافران در کار عظمی جبر است اند کافران را کار دنیا اختیار میرود او در پس حجاب پیش پیش سجین دنیا را خوشش آیدند سجین عظیم بجان دوزخ شدند نایب ^{فرشتگان} حق این پیغمبران گرد و پنداری قلیج آیدند خوب پیش او یک گشت کرد صورت پرست</p> |
|---|---|

چون بصورت بنگری شمت دوست

تو بنوش در نگرگان یک تو است

| | |
|---|--|
| <p>لاجرم چون یک افتد نظر نور هر دو چشم نتوان فرق کرد ده چراغ از حاضر آید در مکان فرق نتوان کرد نور هر یک اطلب المعنی من الفرقان کل در معانی قسمت و اعداد نیست اتحاد یار بایران خوشش است</p> | <p>آن یک بینی دو تاید و در بصر چونکه در نوش نظر انداخت مرد هر یک باشد بصورت خدا ان چون بنوش روی آری پیشک لا فرق بین احسب ان من رسل در معانی تجربه و افراد است پاس معنی گیر صورت سرکش است</p> |
|---|--|

در معانی تفاوت و اتحاد

दृष्टपदारथजो कछु पाओ
जो अनिष्ट अनुभव में आवे
मुनि संतोष भोग में कर ही
अह निश दुष्ट भोग में लागे
हंसन हंस काग में कागा
अक्षुर प्रेय मारग चित लावें
दैवी संपाति जिह मन माही
ब्रह्म अरूप अगुणा गुणाकारी
गुरु ईश्वर दोउ एक समाना
भोर तोर में चित रहोव

तिह में अपनी शक्ति जताओ
तब ईश्वर के माहि बतावे
परमार्थ पथ वहु अम भर ही
मुक्ति माहि संतुष्ट अभागे
अनुमित ^{निर्णीते} संस्कार मन पागा
रच अपंच तन पोखन धावें
श्रेय मार्ग में तेनर जाही
गुरु ब्रह्मरथ देव अधहारी
कनक कटक कहिये किमना
सर्वात्म क्योकर दरसावे

अंतर मुखहु देखिये जबहि होइ भ्रमनाश

नेत्र कल्पना भात्र युग होइ न एक प्रकाश

दृष्टा उभय नेत्र कर देखे
युगल मध्य कछु भेदन पावे
मन्दिर मध्य दीप दशवारौ
संज्ञा माहि दृष्टि जब आवे
ऋषि गण सब ही होंहि समाना
आत्मा माहि विभाग न होई
मिल सह धर्म मुखे नर द्वाई

दृश्य पदारथ एकहि पेरै
हुइ पराड मुख जबहिलखावे
तिनके विविध स्वरूप निहारौ
द्योत अनेक तहां नहि पावे
सहमत सब श्रुति शास्त्र पुराना
अंतर नहि समिष्ट में कोई
भेद अनात्म परत लखाई

تا بہ بینی ز پیر او وحدت چو گنج
خود گدازد اسے دلم مولا سے او
او بدوزخ ^{گداز} سیرۃ درویش را
بے سرو بے پا بدیم ان سر ہم
بے گرہ بودیم و عسائی ہجو آب
شد عدو چون سایہ ہائے گنگرہ
تار و فرق از میان این فریق
گر نداری تو سپردا پس گر نر

صورت سرکش گمازان کن برج
در تو نگہ داری عنایت بائے او
او شما یہ ہم بدلسا خویش را
منہبط بودیم و یک جو ہر ہم
یک گہ بودیم ہجون آفتاب
چون بصورت آمد آن نور ^{نہیں} سرہ
گنگرہ ویران کنید از منجیق
نگہتا چون تیغ پولاد دست تیز

پیش این الماس بے اسیر میا
کز بریدن تیغ را بنود ^{نہم} حسیا

چون انار و جوز ابشکتن است
بعد کشتن روح پاک و لغز ^{خود} دشت
وانگہ پوشیدست بنود غیر بانگ
وانجہ بے معنی ست اور سوا شود
زانکہ معنی برتن صورت پرست
ہم عطا یا بی و ہم ہاشی فتا
ہست ہجون تیغ جو بین در غلاف ^{جو نبرد}
چون برون شد سوختن را آگت است
بگر اول تا نگر دو کار زار

کشتن و مردن کہ بر نقش تن است
جوز ہا بشکست و ان کو مغز داشت
انجہ شیر نیست او شد یار و لگ ^{چرخ}
انجہ با معنی ست خوش پیدا شود
رو بہ معنی کوش اسے صورت پرست
ہمنشین اہل معنی ہا بشش تا
حان ^{بہ معنی} درین تیغ خلاف
تا غلاف اندر بود با قیمت است
تیغ جو بین را مہر در کار زار

त्यागप्रनातमर्बधनकारी
 भयदुस्साध्यमानिजिनप्रानो
 स्वयं प्रकाशे तुम पर प्यारो
 हम स्वतंत्र व्यापक सब ठाई
 ज्ञानरूप अविचल अविकारी
 एकोहं बहु स्याम बरवाना
 चिदघनमाहि जो दृश्य समावे
 तीक्ष्णा ज्ञानरूपा रा समाना

प्रात्मनिधि पावहु सुखकारी
 प्रेमहि सानुकूल प्रभु मानो
 विगरी केर बनावन हारो
 इन्द्रिय तन बंधन जहां नाहीं
 रहे स्वच्छ जिम निर्मल वारी
 दृश्य स्वभाव भये पुनि नाना
 पुनियह भेद निकट नहिं आवे
 सन्मुख आव कि कोइ अज्ञाना

जल

चर्मज्ञान संतोष धनु ध्यान त्रोरौ शर्म तीर

कबच साम मन अश्व चह समर चह कोइ वीर

पंच भूत मय तन बिन शाई
 धर्म हेत जो तनु परिहराहीं
 भोगें स्वर्ग जगत यश पावें
 योग भ्रष्ट लहें शुभग शरीरा
 ज्ञान हीन तन पर शक्त मोहें
 संतन केर सुसंगति कीजे
 अबुध न शुभ तनु पाइ सुहाही
 म्यान पाहिं भयमागत लोणू
 स्वङ्ग हीन मत राग में जाओ

अजर अमर प्रातम श्रुति गाई
 सुर पुर धाम वास ते करहीं
 नीच अयश लेजम पुर जावें
 ईश बिमुख सहेति रिक पीरा
 मुक्ता हल बिन शुक्ति न सोहें
 बड़े धर्म बल पात कछीजे
 काष्ठ कृपा रा मेखला माही
 प्रगट होइ जरावन योगू
 कोहे कुलहि कलंक लगाओ

گرد بود چو بین برو دیگر طلب
تیغ در زرادخانه او بیاست
یک زمانه صحبت با اولیا
گر تو سنگ خاره و مرمر شوخی
مهر با کان در میان جان نشان
کو تو نمیدهی مرو کا سید باست

ور بود الماس پیش آبا طرب
دیدن ایشان شمارا کیست
بهر از صد ساله طاعت بے ریا
چون بصاحب دل سی گوهر شوی
دل مده آلا به هر دل خوش نشان
سوسه تار کی مرو خورشید باست

دل ترا در کوک اهل دل کشد
تن ترا در حبس آب و گل کشد

صحبت صلاح ترا صلاح کند
صحبت صلاح ترا صلاح کند
هر که او بیند ناخوش گشت
زانکه هر چه او کند زان گون ستم
نیکیان رفتند و سنت با بماند
تا قیامت هر که جنبل ان بدان
رگ رگست این آب شیرین آب شور
شد نیاز طالع میان از بنگری
نور روزن گرد حسانه میرود
شعاع با گوهران گردان بود
هر که با اختیار پیوستگی است
طاعتش گرز هر باشد با طرب

صحبت طالع ترا طالع کند
صحبت طالع ترا طالع کند
سوسه او نفرین رود هر ساعتی
ز او لین جوید خدا نه پیش و کم
وز لیثان ظلم و لعنت با بماند
در هر جوید آید بود و ریش بدان
در حلالین میرود تا نفع حضور
شعله از گوهر پیغمبری
زانکه خور هر چه بد بر چه میرود
شعله از جانب رود هم کارنا بود
مرو را با اختیار خود هم نگلیست
میل گلی دارد و عشق و طلب

طالعان حقیق کانی و صریح

| | |
|--|--|
| <p>ज्ञानरूपारालेहुकरमाही वह रूपारा संतनडिंग पावे सराहु मात्र संत सत संग संग पाइ शर सज्जन होई करहु प्रेमजिम चंद चकोरा कृशतनु लेखि जिनकरहु लानी</p> | <p>अछावाड़ धरावहु ताही कामादिक दल जासु नसावे करत कोट दारु रादुख भांगा नीम मलय मिल चंदन सोई प्राणासमान करहि हित तोरा जानहु तेज पुंज सुख खानी</p> |
| <p>प्रेम प्रकाशै प्रबल जब पातक पुंजन साइ तन की तृषा तन कह जड़ ताति मिर बढाइ</p> | |
| <p>लोह कनक पारस संग होई साधु संग तोहि साधु बनावे जिन तज वेद कुपंथ चलाषे कायर कुटिल कर्म अनुरागी हरि जन जश भाजन जग माही करहि कुकर्म चलहि विपरीते संत असंत दोष गुण दोऊ आर्य सदा आर्जव अनुरागे छिद्र प्रकाश सदन के माही प्रकृति बशात चलै नर कैसे वेद पुराण संत अस कह हीं होहि सुकर्म प्रबल जिन केरे</p> | <p>क्षीर सर्प मुख बिषगत सोई नीच मीच पथ में ले जावे धृगजिन भोरे जीव मुलाये नेता होहि पाप को भागी मृतक अधायु जियत जग माही अशुभ भरे शुभ मारग रीते जग में रहै मरौ पंच कोऊ नम्र नीति निर्मद रस पागे जित २ सूर्य फिरै फिर जाही शुष्क पत्र मारुत गत जैसे संस्कार वश नर सब अह हीं चलै प्रेम मगति न के प्रेरे</p> |

| | |
|--------------------------|-----------------------------|
| در بود مرغی خونریز جو | جنگ و بهتان و خصومت جوید او |
| اخته اند از درائے اختران | کاختران و محسن بنود اندران |
| سایران در آسمان باے دگر | غیر این هفت آسمان شتر |

| | |
|---------------------------|------------------------|
| را سخنان در تاب الوافدا | جیسے تارے آفتابین |
| نے ہم پیوستہ نے از ہم جدا | جیکہ فانی اندرین ابرجد |

| | |
|---|---|
| <p>ہر کہ باشد طالع اوزان نجوم خشم قرین بنیاد خشم نور غالب امین از کسب و عین حق نشان دادن نور ہا بر جانش وان نشان نور را دریافت نہ کر ادا مان عشقے نابہ جز و ہا را روہا سوئے کلست گا و زارنگ از برون و مرد را رنگہاے نیک از خم صفاست صیغۃ المے نام ان رنگ لطیف انچہ از دریا بدر یا میرسد از سر گنہ سیمہاے تیز رو مادیت ہا بہت نقس شہاست اہن و سنگ ہست نفس و بہت شرار</p> | <p>نفس او کفار سوزد در رجوم منقلب رو غالب و مغلوب جو در میان اصحابین نور حق مقبلان برداشتنہ دامانت روے از غیر خند ابر تافتہ زان نشان نور نے بہرہ شدہ بلبلان را عشق بار دے گلست از درون جو رنگ سرخ و زرد را رنگ زشتان از سیاہ آب جفاست اعت اللہ یوسے این رنگ کشف چرکین از ہما نچنا کار انجہا میرود در تن با جان عشق آمیزد زانکہ ان بت مارین بت از دہاست ان غمرا از آب بیے گیر و قرار</p> |
|---|---|

मलिनकर्म बश जे जग जाये
रवि शशि सरस संत जग माही
नहिन संत इह गगन बिहारी

वैर विरोध विकार बढ़ाये
होहिन अस्त उदित सब दाही
अघटित नभ घट के संचारी

अभय अशंक अमल रहै पाद अखंड प्रकाश
योग वियोग न संभवे जहां शोक अम नाश

निश तम हटे जो भानु प्रकासे
क्रोध हु करत संत प्रतिपालहि
तप प्रताप माया तम नाहीं
भूलिन मर्यादा पर लावहि
ज्ञान पाइ लहि जीवन लाहू
अम हीन नर निकट न जाहीं
जो मन बसै सो ताहि सराहै
परुष बाल कलेवर देखहि
आर्जव शानि शौच तप धारी
हिंसा दम्भ मान मद मांडे
बारिधे माहि तरंगि रा जाहीं
अद्धा शैल स्रवंत शुचि धारा
ममत्ता जनमि जीव भर माये
शिल्पी जिम बहु पुतरी दारै

घोर अविद्या संत विनासे
बल कर निर्वल हुइ मग चाले
रहैं सदा प्रभु आशा माहीं
सुकृति से बहिं शुभ गति पावहि
पर ब्रह्म तजिन बहिन काहू
जिम उलूक दिन कर के माहीं
चकित चकोर ^{सुख} चन्द्र जिम चोहै
तनु परिहर मुनि मन मत पखहि
संत धन्य शुभ गुरा अधिकारी
धृग असंत जिन सत पथ छोड़े
जहां से उपजे तहां समाही
प्रेम रहै किम प्रभु ते न्यारा
जहां जन्म दुख जिन उप जाये
शिल्पी मरै न पुतरि न मारै

سنگ و اہن زرا کے ساکن شود
آدمی با این دوس کے ایمن شود

[illegible][illegible]

اب را بر نازشان بنود گذار
 در درون سنگ و آهن کے رود
 نفس مرا آب سیرا چشمہ دان
 نقش شومت چشمہ ان اے مصر^۵
 قطرهاں شان کفر و ترسا وجود
 نفس بنگر چشمہ بر شاہ راہ
 و آب چشمہ میرا ندخشہ وزنگ
 آب چشمہ تا آبد ^{اوجاں} باقی بود
 سہل و دیدن نفس را چہل ست خیل
 قصہ دوزخ بخوان با ہفت در^۶
 عرف حد فرعون با فرعونیان
 آب ایمان را از ^{کافر} ^{سیرکتی} ^{سیرکتی} عونی مرید
 اے برادر و راہ از یو چہل تن
 میلش اندر طعنے پا کان برو
 کم زند در عیب معیوبان نفس

حجۃ الاسلام

چون خدا خواهد که مان یاری کند
میں مادر اجا تب زاری کند

मनचकमक संकल्पमरअगरीगतदेवत ताग

जलकरताग बुभाईये बुभेनचकमक आग

पावक पाहन वीचर हाही
 प्रगट ^{प्रान}अनल कोनीर बुभावे
 चतुरचित्तरोचित है एकू
 वारिधमन जहां वारि बिलास
 मनहि समुद्र वारि कीरवानी
 वारिधचित्तथाह जहां नाहीं
 पाहन शत घट सकहि विदारी
 नगर पात्र यदि निर्गत होई
 मेरु चलाइ सके वरु कोई
 मन बैतराणी माहि धुमांवे
 छिन छिन दम्भ अनेक न धारै
 ईश्वर गुरु शरणागत जाई
 समित्यारिण ^{समिधाहाथमलेकर}सुदुगुरु पै जप्पो
 कुपित ईशजिह पर हू जावे
 ईश्वर ^{कुद}छपा जाहि पर होई

वारि प्रवाहन ताहि बुभाई
 जो पाहनगत ताहि न पावे
 पंथ चित्र जिन रचे अनेकू
 देव अनेक नीर घट जासू
 देव कलश जिम गादर पानी
 देव मलिन जल जिम घट माहीं
 मन सहस्र तहां लेत समारी
 सकहि समुद्र शोषक सकोई
 मन बस करन सहज नहि होई
 रौर बनर्क मनहि लै जावे
 पुण्य पुंज छिन माहि बजारै
 तजहु मित्र मन की सिचक ई
 यम विराग युत योग कमाओ
 संतन मां हि कलंक लगावे
 अवरन ^{दोष}छिद्र दुरावै सोई

विधि सुदृष्टि जिह पर भई दंभ दोष निवार

देव बुद्धि सोई दास बन रहै दीनता धार

اے خنک چشمے کہ ان گریبان اوست
 احسہ ہر گریہ آخر خندہ ایست
 ہر کجا آب روان سبزہ بود
 باش چون دولاب نالان چشم تر
 رحم خواہی رحم کن ہر اشک بار
 آتش طبیعت اگر غمگین کند
 آتش طاعت اگر شادی دہد
 چونکہ غم بینی تو استغفار کن
 چون بخواد عین غم شادی شود
 باد و خاک و آب و آتش بندہ اند
 پیش حق آتش ہمیشہ در قیام
 سنگ بر آہن زنی آتش جہد
 آہن و سنگ از ستم بیرون مزن
 سنگ و آہن خود سبب آند و لیک
 کاین سبب را ان سبب آور و پیش
 و ان سبب را کاینیا را بہر است
 کاین سبب را ان سبب غافل کند

وے ہمایون دل کہ ان ہریان اوست
 مرد آخر بین مبارک بندہ ایست
 ہر کجا اشک روان رحمت بود
 تا ز صحن جہانت بر روید خضر
 لطف خواہی بر ضعیفان جہت آر
 سوزش از امر لیک دین کتہ
 اندر و شادی لیک دین نہد
 غم با جہت حق آند کار کن
 عین بندہ پاسے ازادی شود
 با من و تو مردہ با من زندہ اند
 ہجو عاشق روز و شب بیجان مدم
 ہم با مر حق قدم بیرون نہد
 کاین دومی را این ہم چون مرد و زن
 تو بیا لای برنگر اسے مرد نیکی
 نے سبب کے شد سبب ہرگز ز خویش
 ان سبب را این سبب بہتر است
 باز گاہے بے پروا غافل کند

این سبب را محرم آند عقلم
 ظاہری
 و ان سبب را راست محرم انبیا
 باطنی

धन्यसो हग जिहव सत विधाता
 प्रेम प्रभु जिहनेत्र वहारें
 जलतद उगै हरित तृणा नाना
 पुलकित गात नयन बहे नीरा
 जो चाहत भव बंधन टारौ
 वारुणा दुःख हृदय जव आवे
 सुख सरिता जो मनहि वहाई
 पश्चाताप करहु दुख पाई
 ईश्वर हित दुख हू सुख लावे
 पंचभूत प्रभु आज्ञा पालहिं
 अग्नि अन्न अनुचरि प्रभु केरी
 पाचक चाहन माहिर हाई
 अतुल अनीति अनल अधकारि
 लोह परवान कृशानु उपाई
 शक्ति पदारथ माहि दिखावे
 तिह परदृष्टि करि न कर होई
 प्रेरक शक्ति मान सब केरो

धन्य सो मन जो प्रभुरंगराता
 निश्चय प्रभु दर्शन तिह पावें
 प्रेम नीर तट उपजै ज्ञाना
 तहां किरह भव सम्भव पीरा
 दीन न देखि दया बिस्तारौ
 विन ईश्वर को ताहि पठावे
 प्रभु ईश अंबुध ते आई
 तजहु कर्म जिन कुशल न साई
 बूढ़े प्रेम पयोध तिरावे
 नाथ कनिय मत न कनहिं टालहिं
 प्रग जग ईश रुख हिरहै हेरी
 प्रभु पाहि चान सकहि न जराई
 जन्म जरा जननी यशहारी
 गुप्त तहां प्रभु की चतुराई
 कुशल शक्ति मत को दरसावे
 माया माहि जीवरहै भोई
 कबहु न्यून पुनि करहि वनरो

१ प्रभु प्रभु मे जो इनाहि नह तो जे माहै २ शक्ति को देखि शक्ति मान को जान सत नह

मनुज मोह माया प्रसे निज मति माहै भुलान

कृषि माधिन मग में मगन माया भरु जल जान
 माया की पति कसर

چرخه گردان ندیدن دست است
 بان و بان زمین چرخ سرگردان بدن
 تان سوزی تو ز بیم غری چو چرخ
 هر دو سر مست آمدند از خمر حق
 هم ز حق بینی چو بکشا^{شد} نظر
 گرد بر گرد همه خطی پدید
 تا نیار و گرگ اسباز ترک و تاز
 گو سپند هم نگشته زان نشان
 دایره مرد خند را یو دست
 نرم و خوش همچون نیم گلستان
 چون گزیده حق بود خویش گرد
 باقیان را پرده تا قعر زمین
 مرغ جنت شد ز نفع صدق دل
 مرغ جنت ساختش ز با الفلق
 صبح صادق

گردش چرخ این سبب علت است
 این سبب سبب هائے جهان
 تا بمانی صفر و سرگردان چو چرخ
 باد آتش میشود از امر حق
 آب علم آتش خشم اے پسر
 همچون شیبان راعی میکشد
 چون بجمعه شاد او بر نماز
 هیچ گرگ در نیامد در میان
 باد حرص گرگ و حرص گو سپند
 همچنین باد اجل با عارفان
 آتش ابراهیم را دندان ترو
 ز آتش شہوت نسوزد مرد دین
 هست تبیحت بجائے آب و گل
 از دہانت چون بر آید حمد حق

آنکه او بوده ست امه ما و یہ

ما و یہ آمد مرا و را ز ما و یہ

جنگام ما و را و ز ما و یہ
 یعنی در غریب ریگا

اصلها حرف فر عمارا در پے است
 پوشش میکند کار کانی است
 کمالی

ما و را ز ند جو یان دے است
 اب ما و را حوض گرد ندانی است

بیشتر ما و را بر کی دون کی حرص و غلا و ابروین بندگی ۵۲ هیچ سے یاد کر سے تو بہشت کی چٹان جاگیا۔

इति श्री श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

रविशशिस्वयंगगननहिंजोवे
 ईति भीतिनीतज्ञकृपाला
 गहनअज्ञानगर्तक्योंगिरिये
 अनिलअनलअनुचरप्रभुकोरे
 धृतजलकोधअनलतनमाही
 अजाबुन्दमुनि एकचराधे
 रेखाकाटिसुरक्षितराखे
 वृकनतासुमध्यकोईजाही
 इन्द्रियअजाबिषयवृकहोई
 मृत्युवासुनहिनिनहिंसावे
 प्रल्हादहिनिहिंअनलजायो
 बिषयकृष्णानुनमुनिमनजारे
 जपतनाममाटीकीमेना
 शास्त्रविहितअद्धाजवआवे

खोजोवाहिजोइन्हैभ्रमावे
 प्रेरीनतुरविशशिगृहकाला
 चिंताज्वालवृथाक्योंजरिये
 रामरजाइरहैरुखहैरे
 समतासहितसुखेनसदाहीं
 संततसंध्याकरनसिधावे
 छकबराहकोइताहिनारखे
 अजामेघलांधेंनहिंताही
 नियमरेखमुनिराखेंगोई
 त्रिविधिसमीरसमानसिरावे
 भद्रभक्तप्रभुकेमनभायो
 नीचनमीचमार्गमेंडारे
 विनुअद्धाशुचिहोइकिबैना
 जपतनामनिरुपमपदपावे

असुरअबुधअभिमानयुतनहिंअभुवकीदृष्ट
 निश्रेयसेमरातेविमुखपरेनर्कभयेभ्रष्ट

असुरअबुधअभिमान
 युतनहिंअभुवकीदृष्ट
 निश्रेयसेमरातेविमुख
 परेनर्कभयेभ्रष्ट

प्रकृतिप्रभावअवलजगमाही
 बाष्प्यरूपजलगगनउड़ाई
 १ परलोक २ मुक्ति

शाखामूलगुरानपरजाही
 शोषेपवननपरतलखाई

سے رہا ندی میر و تا معدش
وین نفس چاہناے مارا بچنان
چشم هر قوسے بسوئے مانده است
ذوق جنس از جنس خود باشد یقین
یا مگر ان قابل جنسی بود
بجو آب و نان کہ جنس مانود
نقش جنسیت ندارد بے نان
ورغم جنس باشد ذوق ما
انکہ مانده است ^{اگر جنس سے دیکھی ہو} عاریت
مرغ را اگر ذوق آید از صیغ
تشنه را اگر ذوق آید از سراب
مفسان اگر خوش شوند از زر قلب

اندک اندک تابینی بروش
اندک اندک دزد و از جنس جهان
کا طرف یکروز دوقے مانده است
ذوق جزوا ذکل خود باشد بسین
خود بدو پیوست جنس او شود
گشت جنس باد اندر ما فرو
زا اعتبار آخیران را جنس دان
ان مگر مانده باشد ذوق را
عاریت باقی مانده عاقبت
چونکہ جنس خود مینا بدشد زینر
ہون رسد دروے گریز و جود آب
لیکب ان رسوا شود در داغرب

تا ز اندو دیت از رہ ننگند

تا خیال کثر ترا چہ ننگند

طالعہ شیر در دامن بے خوش
بسکہ ان شیر از کین در سحر بود
حیدر کردند آمدن ایشان بیخیر
جزو غلیظہ در سبیل صید سہا
گفت آرسے گروفا بیویم بکر

بودشان از شیر دایم کشمش
ان جبرابر جلد تا خوش گشته بود
کز وظیفہ ما ترا داریم سیر
تا مگر دو تلخ بر ما این گیا
مگر بایں دیدہ ام از زید و بکر

अपनेहिकारणा माहिमिलावे
 प्राणा पवन जीवन जल चोरे
 फस्यो जीव कर्मन के पाशा
 गुणा माहिं गुणा ग्राम सिधावे
 गुणा स्वभाव समता जहां होई
 अन्नोदक प्रज आत्मन भावे
 जले चेतन पुरुष अन्न जड होई
 प्रकृति रूप प्रिय पुरुष हिलगे
 स्वाभाविक सुठ सत्य सदाई
 सुनि सगोत्र वारणा खग आवे
 तृषित मरु हिलख तोष बढ़ावे
 पाया जसा दीन भोल ले हाटक जानै
 दुखी मुलसा मोला

दुर्मगति कछु दृष्टुन आवे
 जन्म मरणा वारिद में बोरे
 सहस्र तहां लै जाइ जहा जिह प्राणा
 कारज कारणा कोष रहावे
 सहगुणा समज समावे सोई
 अन्न कोष मिल मोद बढ़ावे
 शरीर तासु आधार जानि रुचि होई
 संस्कार बश संग न त्यागे
 नैमित्तिक गुणा चिर न रहाई
 व्याधि बैन सुनि तुरत उड़ावै
 शिकारी पाइ प्रपंच फेर पछितावे
 उंचरहि अंत अग्नि में आने

प्रकृति प्रपंच हि परत नर परबत रूप अपार

तुच्छ शशाजिम सिंह को पटव्यो कूप मफार

बन इक बसत बहुत बन चारी
 पातल गाड़ पशुन लै जावे
 मृग गरा मिल यह मतो वनायो
 घर ही घनौ भोग जब पाओ
 वोल्यो सत्य सुकृत जी चीन्हे

आयो तहां के हर भयकारी
 ताते बहु बन उन्हे न भावे
 भेजें भोग तुमें मन आयो
 कर कुचाल क्यो कष्ट बढ़ाओ
 धूर्त न हम धोरेव बंधु दीने

| | |
|--|--|
| <p>از همه مردم بهتر در مکر و کین انچه دروغ نگوید یعنی عن قدر پیریز کر کے قضا و قدر و سبب و برادرانین هر گستا رو تو کل کن تو کل بهتر است تا نگیرد هم قصدا با تو ستیز تا نیاید زخیم از رب الفلق این سبب هم سندیست پیغمبر است با تو کل از انوے اشتر به بند از تو کل در سبب غافل مشو</p> | <p>نفس هر دم از دوزخ در کین جمله گفتند اے امیر با خبر در حدیث شوریدن از شور و شراست با قضا پیچ مزین اے تند و تیز محکم اے ست گزشت بود پیش امر حق مرده باید بود پیش امر حق گفت آری که تو کل بهتر است گفت پیغمبر با و از بلت رحمت ابرار کاسب حمید الله شرف طلال کمانی که نویا پیغمبر الله و تبار</p> |
| <p>در تو کل حید و کسب اولی تر است تا جیب حق شوی این بهتر است</p> | <p>در تو کل حید و کسب اولی تر است تا جیب حق شوی این بهتر است</p> |
| <p>همه میکن کب میکن موبو و د تو از همه دش با نی ایلی</p> | <p>رو تو کل کن تو با کب اے عمو همه کن همه دے تا تا و اری</p> |
| <p>ترجیح بخیر ان تو کل را بر حید</p> | |
| <p>لقمه ترویر و ان بر قدر حلق در تو کل تکیه بر غیر خطاست چیت از تسلیم خود محبوب تر پس همدان از مار سوسے اثر دها انکه بیان پیدا شت خون آشام بود حید فرعون زمین افسانه بود</p> | <p>قوم گفتندش سبب از ضعف خلق پس بدان که کسب از ضعف خا نیست که از تو کل خوب تر پس گریز ناز بلا سوسے بلا حید کرد انسان و حید اش نام بود در به بست و دشمن اندر چنان بود</p> |

तेसे हि मनमानसमठमाहीं
 बोलेमृगजोरेदोऊहाथा
 हृथाकलापकरियेकिमनाना
 यदिहमभीरुविसिततुमपाहीं
 वेदअवज्ञाजोजनकरही
 बोलोसिंहसहजसंतोषा
 भुजाउठाइकहीऋषिवानी
 पुरुषारथीपुरुषप्रभुप्यारे

मुदितमंदमतिजानतनाहीं
 भूरभागभूततुमरेसाथा
 सुखसंतोषसमाननआना
 कठिनरूपागकालकरमाहीं
 दारुणादुखदावानलजरही
 पुरुषारथहुविदितनहिंदोषा
 बिनप्रयत्नसंतोषहिहानी
 कहासंतोषप्रयत्ननिबारे

सतपथशमसंतोषगहिमबलपराक्रमधार
 वर्यविशदवरपाइयेविटपविपत्तिविदार

पुत्रप्रथमपुरुषारथकीजे
 पुरुषारथपथतजहिअभागे

सतसंतोषसंगलैलीजे
 संकटसहंसंतोषहिंलागे

मृगगणो बाच संतोषमुरख्यहै

मुनिननरनजबनिर्वलचीनो
 तजसंतोषपोचश्रमकरही
 संतोषहिअनुपमधनहोई
 तजसंतोषअनिकारही
 असजगकोजिहसुखनसुहादे
 कंसकुर्मअनेकनकीने

पुरुषारथकहिहाहूसदीनो
 संतसदासंतोषहिधरही
 तजेताहिजिहकुमतिविगोई
 मूषकतजिविषधरआदरही
 तजिसंतोषनसुखनरपाये
 कृतिकरफितककालकनलीने

وانکہ او میبست اندر خانہ اش
 رو فتنا کن دید خود و دید دوست
 یابی اندر دید اور کلی غرض
 مرکبش چیز گردن بایا بنود
 در عین افتاد دور کور و کبود
 چہ پریدند از و قاسو کے صفا

کلی غرض
 حاصل
 تدریس

صد ہزار ان طفل گشت ان کینہ کش
 دیدہ ما چون بسے علت و دوست
 دیدہ مارا دید او نفسم العوض
 طفل تا گیراوتا پو یا بنود
 چہ ن نفسولی کرد دست و پانود
 جہانہ کے خلق پیش از دست و پا

چون با مراہبوط بدی شدند
 جس خشم و حرص و خورسندی شدند

گفت الخلق عیال للہ
 صم تو اند کو ز رحمت نان

یا عیالی حضرت یتیم و شیر خواہ
 انکہ اہواز آسمان باران دہد

ترجیع نہادن شیر جہد را بر تو کل

نزد بانی پیش پائے مہماد
 بہت جبری بود ان ایخاطع خام
 دست داری چون کنی بہمان تو جنگ
 بے زبان معلوم شد اور امراد
 اخر اندیشی عبارت باے دوست
 در وقتے ان اشارت جانہ ہی

جہاد کے اشارے کو جان سے بچنا

گفت شیر آرزوے وے رب العباد
 مایہ پایہ رفت باید سوئے نام
 پائے داری چون کنی خود را تو لنگ
 خواجہ چون بیلے بدست بندہ داد
 دست ہمچون بیل اشارتے دوست
 چون اشارتہاش را بر جان تھی

بار بردار دوز تو کارست و بدو
 تا بلی مقبول گردانند خرا

پس اشارتہاش اسرارست و بدو
 حاصل محمول گردانند ترا

خاک کون کون چنانہ

बधे बहु तव सुदेव दुलारे
चित चाहे न होहि उपचार
नारायण निराश नहि फेरहिं
जब लगशि शुनि जब लगी हनारि
तरुण भये तनु तेज बढ़ायो
भये न हम जब लगत नु धारी

तदीप मेरे नहि मारत हारे
राखि ईश सेवा पर भास्व
हरे होहि जिह हरि पर हेरहिं
चष पूनर समतिहि पि नुराखे
भ्रम वश भुवन भोग मन भायो
रहे अमल आवि चल अवि कारि

तन नौक चढ़ि जब चले जगत तरंगि रा माहि
मान मन्यु मद भमर में माया मरुत भ्रमाहि

जिम शिशु स्त्री मिले विनु मागे
जो जल दे जड़ चेतन पालहि

तिम संतोष करिय प्रभु आगे
भजिय दंभत जि दीन दयालहि

सिंह उवाच पुरुषार्थ ही मुख्य है

बोलै सिंह सत्य तुम भाषी
साधन दे समर्थ प्रभु कीना
पग दोउ पाइ पंगु किम रहिये
स्वामि कसी सेवक कर दीनी
कर पदनयन अवश मुख दीने
समरु सैन सम्रति प्रीति पालहु
मुनिवर पुरुषार्थ अग्र कर ही
आज्ञा पालै अमर होइ जावे

स्वामि सबाहि साधन दे राखी
दुर्गति धारि रहिय किम दीना
होते हस्ती ह हर हर खेये
विनु कहियुक्ति परत सब चीनी
मन बुधि चित हित प्राण नवीने
परिहरि प्राणान आज्ञा टालहु
अनुभव मार्ग मोद मन मरही
सो मुनि माधव के नन मोवे

| | | |
|--|--|---|
| <p>قابل امر و عی قابل شوی سے شکر نعمت قدرت بود شکر نعمت نعمت افزون کند جبر تو خفتن بود در رہ محسب ہاں محسب لے کاہل بے اعتبار تا کہ شاخ انسان کند ہر لحظہ باو جب خفتن در میان رہنمان در اشارتہاش را بینی نہ نی این قدر عقلے کہ داری گم شوو زانکہ بے شکری بود شوم و شکار گر تو کل میسکنی در کار کن</p> | <p>نہ تو جبر از رک طاعت کرتا ہے۔ تیری خفتن جو جبر ہے۔ در گاہ حقیقی نہ کہ نہ ہو پنے سخی نہ کہ</p> | <p>وصل جوی بعد از ان وصل شوی منے کی تیر پر کہ جبر تو انکار ان نعمت بود نا شکری کفر نعمت از گفت ہیرون کند تا بہ بینی ان درو در گم محسب جزیریز ان درخت میوہ دار بر سرست دایم کہ یزد نقیل و زاد تو نہ مرغ بے ہنگام کے باید ابان مرد پنداری و چون بینی زنی سے کہ عقل ازوے پیر و دم شود سے ہر دے شکر را در قہر تار کسب کن پس تکیہ بر جبار کن</p> |
| <p>تکیہ بر جبار کن تا وارہی در نہ رستی در بلا و گہری</p> | | |
| <p>باز تر جیج نہادن نخر آن تو کل را بر جہد</p> | | |
| <p>جملہ بادے بانگہا بیداشتند صد ہزار اندر ہزار ان مردوزن صد ہزار ان قرن ز آغاز جہان</p> | <p>کان حریصان کاین سبب ہا کاشتند پس چرا محروم ماندند از زمین پچو اثر در ہا کاشت وہ صد زبان</p> | |
| <p>۱۰۰ جو مرغ بے دقت لالت کو بول دھنڈا ہو سکو نہ کاری ۱۰۰ مثل از دہا کے لوگوں سے ہزاروں ہونہ کو بولے مگر یوں ہی رہ گئے</p> | <p>۱۰۰ جس طرح عقل نہیں ۱۰۰ جس طرح عقل نہیں</p> | |

प्रभु अनुशासन मानै जोई
 पौरुष पाइ प्रकाशहि ताही
 धन्यबाद धन धान्यबढावे
 निद्राग्रसित शिथल जब होई
 तदपि विचार करिय मन माही
 त्वरित सुतरु तन ताप निवारे
 चोरन मां हि थकित चर सोयो
 जोन स्वामिकी सैन ^{मुसफिर} समारै
 बुद्धि विहाय विकल भई बाती
 कर कृत घृता धर्म न सावें
 कृति कर कठिन करियें संतोषा

पुरुषार्थ

पुरुषार्थ कर भक्त जब पहुँचै भगवत माहिं
 भीरु भरोसे भाग्य के भीषणा भय में जाहिं

मृग गरा का संतोष ही मुख्य बताना

मृग गरा पुनिकर धोर चिकारा
 करिकर कोटय त्व पचिहारे
 जब से विधिय ह सुष्टि उपाई

योग्य यज्ञ कर योगी होई
 राक्षस होइ जो निदरै बाही
 निधन होइ धनपति हि भुलावे
 मृत्यु समान विवसन र सोई
 रहिये जहां शीतल बट छाहीं
 छाया देय फूल फल डारै
 चैल गमाइ अचित हरे रोयो
 लोब होइ पुरुषार्थ हारै
 पशु बिन मुच्छ बने ते प्राणी
 घोर नर्क की राह बनावें
 प्रभु सप्रेम पाइये परितोषा

सिसकत सिंह हिकरत प्रकारा
 मनुजन मनगत कारज सारे
 मरे सब हिकर कर चतुराई

مکر ہا کر دندان دانا گروہ
 کرد مکر و حیلہ ان قوم خبیث
 جز کہ ان قسمت کہ رفت اندر ازل
 جملہ افتادند از تدبیر و کار
 کسب جز نامے بدان لے ہویشار
 سادہ مردے جاشت گاہی در رسید
 روش گشتہ زرد و ہر دو لب کہ بود
 گفت عزرائیل در من ایچنین
 گفت ہین اکنون چہ میخوای بخور
 تا مرا از اینجا بہند وستان برد
 باد را فرمود تا اورا شتاب
 روز دیگر وقت دیوان و لقا
 کان سلمان را بخشم از چہ سبب
 اے عجب این کردہ باشی بہر ان
 گفت اے شاہ جہان یہ زوال
 من در و از خشم کے کہ دم نظر
 کہ مرا فرمود حق کا مروز ہان
 دیدش اینجا و بس تیران شدم
 از عجب گفتہ مرا اور احمد پرست
 اگر کے سوہی انک جابین

کہ نہ بن برکنده شد زان مکر کوہ
 گرز ما باورندازی این حدیث
 روئے نمود از پیگال و از عمل
 ماند کار و حکم ہائے کردگار
 جہد جز وہے مہندار اے عیار
 در سدا عدل سلیمانی رسید
 پس سلیمان گفت اے خواجہ چہ بود
 یک نظر انداخت پر از خشم و کین
 گفت فرما باد را اے جان پناہ
 بگو کہ بندہ کا نظر شد جان برد
 برد سوئے خاک ہندوستان بر آب
 شہ سلیمان گفت عزرائیل را
 بنگر یدری باز گواے پیک رب
 تا شود اور رہ او از خان و مان
 فہم کز کرد و نمود اورا خیال
 از تعجب دیدش در رہ گذر
 جان اورا تو بہندوستان ستان
 در تفکر رفتہ سرگردان شدم
 زو بہندوستان شدن دور اندست

حکایت
 عزرائیل

مہم کوئی
 بولا آتھی

ملک الموت

دربار عام

प्रबलपराक्रमपाशपसारे

जाल

हंभदक्षदानबदलहारे

चोलकीमनिपुण

पश्चिममें यदि उगे दिनेशू

गगन माहिवरु मेरु उड़ावे

पुरुषार्थ

नाममात्रकृत कहिये गुसाई

भीरुविप्रइक पहुंचो तहंवा

सजलनयनकंपतसबगाना

दंडपाशकर दशनकराला

राज

प्रारानाथ प्रगावों करजोरी

अर्धचन्द्रधर अर्धाविपारा

शिवजी

समुद्र

गगान ईश आज्ञा असदयऊ

इकादिन जहां श्रीशंभुदिसजा

पूछी बोलि ताहि बृष केतू

गृहसुतबंधु बिन धन दारा

बोलोयम प्रभु कालहि घेरी

नहिं अमर्ष कर देखेउ ताही

क्रोध

आज्ञा दे दूरी मोहि विडारा

विप्रयहां लारि चक्रित रहैउ

नहिं सुपुर्ण जो यह उड़ जावे

पक्षी

भेदित किय बहु भूधर भारे

पेखत

मिठेन विधि जो अंकसमारे

सर्पभोज्य यदि होइ खगेशू

ईश निदेश न जीव हटावे

आज्ञा

शब्द मात्र पौरुष चतुराई

उमा सहित शिवतप करे जहंवा

पद गहि बोलो हे जननाता

क्रुद्ध कृतांत दीर्घजिम ज्वाला

जमराज

बाल विनय सम विनती मोरी

करिय तो होइ प्रारानिस्तारा

जलनिधि पार ताहि ले गयेऊ

दर्शन हित जायेउ यमराजा

क्रोध विप्र पर किय किह हेतू

त्याग विप्र गयो जलनिधि पारा

भई बौध बिरोध विप्र बर केरी

चक्रित रहैउ लखि प्रभु प्रभुताई

हनेउ ताहि तुम जलनिधि पारा

अस्मंजस मोरे मन भयेउ

संशय

किह विध समुद्र पार यह पावे

गङ्गा

| | | |
|--|--|---|
| <p>چون با مریح بهندوستان شدم تو همه کار جهان را بهم چنین از که بگزیریم از خود اے محال انک ز دور ویشی گریز است خشن</p> | <p>عنا کاره است سزا کی</p> | <p>دیشش انجا و جانش بستم کن قیاس و چشم بکشا و بین از که بر تا بجا حق اے و بال نقد حرص و امل زانند خشن</p> |
| <p>سیر یعنی ^{سے} دور ویشان کا خاصہ ہے</p> | <p>توس و دور ویشی مثال ان ہراس حرص و کوشش را تو ہندوستان شناس</p> | <p>نیاز و کوشش کی کیفیت بیکسے کہ کوشش کی کیفیت</p> |
| <p>باز تر جمیع نہادن شیر جہد را بر تو کل</p> | <p>باز تر جمیع نہادن شیر جہد را بر تو کل</p> | <p>باز تر جمیع نہادن شیر جہد را بر تو کل</p> |
| <p>شیر گشت آری ولیکن ہم بین شعبے ابر آرد و جہاد مومنان حق لغائے جہدشان را راست کرد جیلہ با شان جملہ حال آمد لطیفنا دام با شان مرغ گردونی گرفت جہد میکن تا توانی اے کیا باقضا پنچہ زدن نبود جہاد کافر من گریبان کرد دست کس سرگستہ نیست ہن سر را بہند بد محالی حبت کو دنیا بحبت فکر با در کسب دنیا بارد است فکر ان باشد کہ نہ مدان حفرہ کرد</p> | <p>جو نقص کر دے دنیا سے اگلے وہ باعث اجر و ثبات ہو</p> | <p>جہد ہاے انبیاء و مرسلین تا بدین ساعت ز آغاز جهان انچہ دیدند از جفا و گرم و سرد کل شے من ظریف ہو ظرفیت نقصها شان جملہ افزونی گرفت در طویش انہیا و اولیا نرا نکہ این را ہم قضا بر پا نہاد درہ ایمان و طاعت یک نفس یکہ و روزک جہد کن با فی جہند نیک حالی حبت کو عقبہ بحبت فکر با در ترک دنیا وارد است انکہ حفرہ بست ان فکر گیت سرد</p> |

देखेउजाइसमुद्रकेपारा
मायामाहिबिष्वसबमोही
अंतरयामिहिकिहिविधियागे
बौरेनरसंतोषहि न्यागे

हनेउतासुप्रारानवरियारा
प्रभुअद्भुतगतिखतनओही
व्यापकतजकहुकिहरिशभाजें
तृष्णाबंधनफसतअभागे

तैसेहिमायातमग्रस्थोपुरुषतोषकेत्रास
तनतपतजधावततरुणानृष्णाअचलमवास

सिंहउवाच

बोलोसिंहकहेउतुमनीके
आदिसृष्टितेअबलगजेते
पुरुषारथीप्रगल्भप्रतापी
निर्मलजनशुभयुक्तिरचावे
इन्द्रादिकतपबलवशकीने
किममुनिन्द्रमहिमाजिमरिये
यहनकर्मसोंयुद्धकहावे
सात्यकहंकरिईशदुहाई
रेमानीमत्तिमंदअभागी
यूद्धप्रथिहि नयत्नकराही
भीरुभोगमेंउद्यमकरही
जगकारागृहभेदनकीजे

पुरुषारथअरुषिमुनिप्रियजीके
ब्रह्मादिकसनकादिसमेते
थाप्योधर्महनेबहुपापी
अमियनिकटविषकबहुकिआवे
पुरुषारथपथतदपिनबीने
प्रबलपराक्रममेंपंगधरिये
कर्महिंपुरुषारथहिवनावे
किनहुधर्मकरिहानिनपाई
करहुप्रयत्ननित्यसुखलागी
बुधजनरमेअमरपदमाही
भ्रमतजिभीमयोगाचिनधरही
रक्षणाहितकोहेचितदीजे

این جهان زندان و مازندانیان
 چیست دنیا از خدا غافل من
 مال را اگر به دین باشتی حمل
 آب در کشتی هلاک کشتی است
 چونکه مال و ملک را از دل براند
 کوزه سربسته اندر آب رفت
 باد درویشی چو دریا باطن بود
 آب نتواند مرا در اعطی داد
 گر چه جمله این جهان ملک من است
 پس دمان و دل به بند و مهر کن
 کسب کن جلدی نماستی بکن

حرفه کن زندان و خود را و اربان
 نغمه قماش و نقره فرزند و زان
 نعم مال صالح خواندش رسول
 آب اندر زهر کشتی کشتی است
 زان سلیمان خویش جبرئیل خواند
 از دل پر باد فوج آب رفت
 بر سر آب جهان ساکن بود
 اکش دل از نفیحه الهی گشت شاد
 ملک در چشم دل اولاشته است
 پیر کنش از یاد گیر من لدن
 تا بدانی شکر علم من لدن

جهد حق است و دوا حق است و دور
 سنگ را اندر نفی جهدش جهد کرد
 گر چه این جمله جهان پر جهد شد
 جهد که در کام جابل شهد شد

کز جواب ان جبریان گشتند زیر
 جبر را نگذاشتند و قیل و قال
 کاندربین بیعت نیفتد در زیان
 حاجتش بنود لقا ضایع و گمر

ترین منطاب پاد بریان گفت شیر
 رو به واهو و خمر گوش و شغال
 عهد با کردند با شمشیر ثریان
 قسم هر روز به پاید بے ضرر

हमबंदीकारागृहलोकू
^{जेल} कहा जगईश जो देइ भुलाई
 न्याय जोरि धन धर्म लगावे
 विन जलकबहुं किनाव चलाई
 कविजन कहि म्यो^र कृषिकहि गावा
^{राजाजनकेको} घटाहि मूंद मुख वारि दंडारे
 बिरति मरुत जो मनहि बसावे
^{भोग} भव वारि धनहिंसकहि डुवाई
^{पुत्र} विभुवन यदपि वश्य करि आने
 मनमुख मूंद मौन बृत धारै
 प्रबल पराक्रम करहि प्रवीना

छिन्न भिन्न करि रहिय विशोकू
 नहिं धन वित्त स्वजन समुदाई
 जग यश लेय अंत गति पावे
 भीतर भरे तो देइ डुवाई
 नहिं हिरण्य हाटक हिय लावा
^{सुवर्ण} अंतर मरुत सो ताहि उबारै
 सो जलनि^{पवन} धजग माहि ति रावे
 ज्ञान समीराम नहि बसाई
^{पवन} तुराके तुल्य तुच्छति हजाने
 बाधु विराग हृदय संचारे
 ईश्वर प्रेम सरिति जिम भीना

^{वेग} अथा हीन भेष जनहीं पुरुषारथ विन सोइ
 पौरुष की निंदा करहुं तिहि विन बाद न होइ
^{सूर्य} तरंगिनि शाकर यम ^{चन्द्र} अनिल उड़गन ^{पवन} अनल न दीश ^{समुद्र}
 पुरुषारथं प्रतिक्षरा पगे निन्दहि अज्ञ अनीश

उत्तर प्रत्युत्तर बहु धारे
 जेबन शशि गोमायु कुरंगा
^{जेमुनेकेमेद} सब ज जिनीति प्रतिक्षा आनी
 अघट अहार अहर्ही आनहि

^{नारीसतक} भये निदान मृगागण हिय हारे
 सखही कीन तक कर भंगा
 इह मेक बहु होइ नहिं हानी
 यांचारहित यूथ मिलठानहि
 बिन मंगो

سوکے مرغی ایمین از شہ پریان
 او فقاده در میان ^{چراگاہ} حبلہ خوش
 ہر یکے در خون ہر یک میزند
 تا بیا یقہ بر عہ اندر میان
 بے سخن شیر زیان ^{القمہ} است
 قرعہ آمد سر بسر اختیاء
 سوکے ان شیر او دیدے ہچو یوز
 بانگ ز دخر گوش کاخر چند چور
 حبان فنا کر دیم در عہ و وفا
 تا نر بچہ شیر و تو زود زود
 تا بکرم از بلا بیرون جہید
 ماند این میراث فرزدان تان

عہم چون بستند و رفتند انہما
 جمع بنشدند یکجا ان و عوش
 ہر کسے تدبیر و اسے میزدند
 عاقبت شد اتفاق جلہ شان
 قرعہ بر ہر کہ اوفتد او طعہ است
 ہم ہرین کردند ان حبلہ قرار
 قرعہ بر ہر کو فقادے روز روز
 چون بخر گوش آمد این ساغر بدو
 قوم گفتند شش کہ چندین گاہ ما
 تو مجو بد نامی ما اسے عینود
 گفت اسے یاران مرا ^{سر} اہلست
 تا امان یا ید بمکرم جان تان

ہر سبب امتان را در جہان

ہچنین تا مخلصی میخواندشان

در بزرگی مرد مک کس رہ نہر د
 خویش را اندازہ خر گوش دار
 در نیار و ند اندر حاطر ان
 در نہ این دم لائق چون تو کے است
 مرضیے را قوی را نے قتاد

مرد شش چون مرد مک دیدند خورد
 قوم گفتند شش کہ اسے خر گوش زار
 ہر چہ لاف است اینکہ از تو متران
 معجبی یا خود قضا مان در پے است
 گفت اسے یاران ^{خود} حق الہام داد

शपथ कराइ प्रतीति बढाई
 बलिहित बैर बिलाप मचाई
 निज निज नीति निपुणाता आनें
 अति ममत् सबने यह ठानी
 विधि बश जिह कर आवेनाया
 हृदय त होइ ^{आता} अक्षमिल डारहिं
 तज प्रपंच प्रारब्ध आधार
 गरजो शश सुनतेहि निज नामा
 यूथ कही बिलखित सुनि प्रीते
 शठ अपयश भाजन जिन होहू
 वो लो शश दोजे अब काशा
 करि प्रपंच प्रिय प्राणा बचाई

नित्य निशंक चरहिं बन जाई
 दारुणा द्वंद देत दरसाई
 एक एक के बलि की ठाने
 चिह्नी डार होव नाहिं हानी
 भ्रुव सोई जाइ सिंह के धामा
 तिह कर नियत निदेशन दारहिं
 सोइ सृगेन्द्र कर होइ अहारा
 अंतहु ^{सिंह} अस अनर्थ किह कामा
 इतने दिवस देत बलि बीते
 जाउ त्याग निज तन कर मोह
 रचि माया काटहुं तुम पाशा
 हरीं सकल तुमरी कठिनाई

ब्रह्मनिष्ठ नेता सकल निगम नियम मनधार

भव बारिद वोहित भये कीने बहु जन पार

ससार समुद्र नाव

प्राणिानल घुत मरूप निहारा
 बोले यूथ खर्व खल मानी
 तोते पुरुष प्रशस्त पुराने
 हमरो काल किधों नियावा
 शशि कहि गोहि भई न भवानी

गर्वित गौर बनहिं चित धारा
 वो लसि छोटे मुख वाड़ि बानी
 कोउ कुमंत्र न अस जिय जाने
 जो गुरु बन अस गाल बजावा
 प्रभु मेरित प्रबोध मन जानी

जोगुराभ्रमर मांहे हरि दीने
शहतबीभक्तवी

मधुपमधुरमधु देत बनाई

पाटपवित्रहि कीट बनावे
रेशम (बटुई)

नरहिईश-प्रसदीन बटाई

अमरअमर्षकरतजिह देखी
अनभ

विद्याबलजिह जानहिनीका

उदरपरायणा इतउतधावे

मनाहेमंजु गतिजोगप्रभुदीनी

विनप्रत्यङ्ग आतमके चीने
आत

नरअनुहार पत्नीक बनावे
मोति गूत

सो नहिं परत सिंह में चीने

तहां प्रगट प्रभुको प्रभुताई

दन्तन मांहे सो गुरान समावे
हाथी

लोकान्तरकी गतिजिन पाई

को कहि सक प्रभुशक्ति विशेषी

बत्स मनुज मुखदीन मुछीक
बखड़ा

धेनु उपनिषद दुग्धन पावे

सो समुद्र में परत न चीनी

बहिरबाहु बल परत न मीने

भूषणा बसन मुक्त मणी लावे

प्राणप्रयोग न होइ तहं प्रेम प्रवृत्ति न होइ

रत्न अमोलिक रहित है खोजो बुधजन सोइ

रसाशय कर अंगिकारा

सो तनु हानि नतिह पहुंचाई
बुझिये निग्रह

शमदम अछ्छा शुभगुराजे ते

सब गुरा पुरुषहि मांहे देखे

देशकाल निर्गत सो होई

ज्ञान पाइ करि पुंगव हों ही

ज्ञान पाइ नर कहिय सयाने

शुकरहे उष्ट शरीर मंफारा

हरिके ध्यान सो मन रहारि
चेतना

तनु न रहै आतम कर ते ते

अइ आधार में तेन समावे
शरीर

वहु ब्रह्मांड सगाविक सोई

तनु संसार ज्ञान जनु देही

जल चरथल चरम बभय माने

زود شده پنهان بدشت و کوه وحوش
هر یک در جایی پنهان جا گرفت
آدمی با حذر عاقل کس است
میزند بر دل بهر دم کوبشان
به تو آسپه زند در آب خار
چونکه در تو میخسلدانی که هست
از هزاران کس بودنی یک که

زوم بلند و شیر ترسان همچو شمش
زود پری و دیو سا حلیا گرفت
آدمی را دشمن پنهان بے است
خلق خوب دزشت هست ازمانان
هر چیل او در روئے در جو بیاد
گر چه پنهان خار در آب است پست
خار خار شهاب و سوسه

باش تا حساے تو مبذل شود ^{نیاطین}
تا به بینی شان و مشکل حل شود

تا سخن های کیان رد کرد
تا کیان را سر و زود کرده

در بیان آرد آنچه در ادراک است
باز گورائی که اندیشیده
عقل سامر عقل رایاری دهد
مشورت کاملست با موتمن
باز گوتا حلیت مقصود تو زود
جفت طاق آید گم که طاق جفت
تیره گردد زود با ما آینه
از ذباب و زده ب و زده بیت

بعد از آن گفتند که به خرگوش چیست
ایک تو باشی و پر پیچیده
مشورت ادراک و هو شیاری دهد
گفت پیغمبر بکن بے را زن
قول پیغمبر بجان باید شنود
گفت سر را بے نباید باز گفت
از صفا گردم زنی با آینه
در بیان این سه کم جنیان است

در بیان این سه کم جنیان است
در بیان این سه کم جنیان است

सिंहव्याघ्रहयगजवशजाके
^{था}यक्षकुबेरनागगंधर्वा
 नरकेशचुबहुतघटमाही
 कामक्रोधमदलोभअपारा
 मज्जन हेतु धस्योसरिमाही
^{दृष्टान}यदपिदृष्टिगतसोनहिं प्रावा
 विविधविषयविषहूतेबांके

हृदयहेरिजिनहरिपदताके
 आयसुशिरधरसेवाहिंसर्वा
 विरलेजननिनकेसमुहाही
^{साधनोकरतेह}घटमेंघटाटोपअंधियारा
 कंटककाठिनलगोपदमाही
 जानोजबदारुणादुरवपावा
 मानससरितगुप्तजिमनाके

ज्ञानचारु वसुःखुलेंचिन्तचपलताजाइ
^{पवित्र}दुरितदीर्घदुस्खदलनकरद्वददरिद्रनसाइ
 विविधवासनाजीवकेहियबनमाहिरहाहि
 परखोकिनतुमवशकरेकोतुम्हरेवशमाहि

कहुशशशूरशिरोसागाभाई
 कहुसंग्रामसिंहसनकैसे
^{सनाहि}अनुमतिकरियगूढहितभाई
 गूढमंत्रजिहमनहिउचारे
 आशाअधिनकेरचितधरिये
 शशकहगुप्तनचहिषदिसावा
 गूढमंत्रताहियोंकरमीजे
 निजमुखकपहुकाहियनहिंगाई

अभिमतयुक्तिजोहृदयउपाई
^{अथनरह}विभ्रमविगतहोंहिहमजैसे
^{बुद्धि}मेधाबुद्धिहिदेतबढाई
^{सनाहदेनबली}अनुमतानिजधर्मविचारे
 अभिमतअर्थप्रकटपुनिकरिये
 जिहकरहोइफेरपछितावा
 परमनमुक्तमालिनक्योंकीजे
 सुकृतस्वधननिजभेदअताई

در کینت ایست چون دوا نداد
 کل ^{کلمات} سر جادوا را نشین شاع
 جو بید و برون سے گذر گیا اشاعت پا گیا
 بر زمین ناستد محبوبس از اطم
 در کنایت با غلط افکن شوب
 گفت ای شافش جواب دے بے خبر
 تا نداند ختم از سر پائے را

کاین سہ را بسیار ختمست و عدد
 دور بگوسی با سیکے گوالوداع
 گردو سہ پیرندہ را بندسی ہم
 شورت وارید سر پوشیدہ خوب
 شورت کردے پیہر بستہ سر
 در مشالے بستہ گفتے راے را

اد جواب خویش بگرفتے ازو
 و دہوا نش مے بردے غیر یو

ایمان و استیلاست از او
 ہالک ہوا کہ پند نہ بداند

نکر اندریشید با خود طاق و جفت
 شمر خود و وجہان خود میراند باد
 بعد از ان شد پیش شیر پنج زن
 خاک را میکند و مے عمر یاد شیر
 خام باشد خام سرت و نارسان
 چند بفریبہ مرا این دہر چند
 چون نہ پس بیند پیش از حقیقش
 قحط معنی در میان نامہ بل
 لفظ شیرین از یک آب عمر ماست
 خلق باطن از یک جوئے عمر تو
 سخت کیاست روا نرا بجو

حاصل ان جز گوش راے تو نگفت
 باد و شش از نیک و بد نکشاد راے
 ساعتے تاخیر کرد اندر شدن
 زان سبب کا تد ر شدن او ماند دیر
 گفت من گفتم کہ عمر ان خیزان
 و مدد ایشان مرا از خبر فگند
 سخت در ماند امیر بست ریش
 را دہوا است وزیرش دہوا
 لفظ با و نامہ چون دہواست
 عمر چون آبست و وقت او پر جو
 آن یکے رے کہ جو شد آب ازو

हंसहंस हरहि हर्षहियहरी
 भर्मगमाइ होइचित भंगा
 वांधतनूरु^{पसी} हरखियविहगू
 पक्ष^{पक्ष}खुलत पुनिपासन आवे
 अलंकार सह प्रश्न बखाने
 कहि दृष्टांत प्रसंग पसारे

करहिसुपत्न घातइनकेरी
 धारिये^{बरी}अधर पुटमांहीअभंगा
 दुर्गातिधारिरहे^{होइ}जिम पंगू
 कहतहीभेदभवनभरिजावे
 उतरदेइ नहिं मर्महि जाने
 जिहनअभीष्टअमिचनिहारे

अभिमत आशयउतरने अनुभव करियअघाड
 परप्रस्तावन पावही प्रगट प्रतर्क बढाड

रचिनिदानस्वप्रपंचविचारी
 नहिं परिबाद^{भेद}पशुनप्रतिकीनों
 रलोचपलकछुकालविताई
 बलिभेबहुतबितंबविचारी
 मोरप्रतापनपशुगराजाने
 धूर्तधर्मतजिधोखादेही
 सोनृपनिपटन्यूनताधारे
 बरगावेषलखिजिबभुलाने
 पारबबचन बरबुद्धिभुलाई
 सरितासमयप्रायुजिमवारी
 जिहगिरमेमपियूषबढावे
 अमृत

शशनिजमतिमुखतेनउचारि
 निजमंतव्यमाहिरंगभीनो
 पहुंचोजहांरह्योबनराई
 पंचातन^{सिंह}पृथिवीखनिडारी
 ननिजप्रतिज्ञापरचितआने
 करैकुर्मकुशलकिमचहही
 जोनिजभलअनभलनविचारे
 सज्जस्वभावसहजनहिंजाने
 सालिलहिमृतजिमदेतसुखाई
 शोषग्रीष्मइवविषयबयारी
 दुर्लभताहिखोजमुखपावो

که بحق پیوست و از خود شد جدا
 اوصاف بفرستد جدا که خدا پس مانگیا
 طالبان را از وحیات ست و بنوی
 نخواست

است ان ریگای پس مرد خدا
 آب عذب دین ہی جوشد ازو
 پیرین

غیر مرد و حق جو ریگ خشک دان
 کباب عمرت را خور و او هر زمان

تا ازو گردی تو بینا و عظیم
 و نارغ آید او تحصیل سبب
 عقل او از روح محفوظ شود
 بعد از ان شد عقل شاگردی و را
 گر بیکه گامی نفهم سوز و مرا
 خدا من این بود ای سلطان جان
 او ہی دانند که گیر د پاسے جبر
 تا بهمان رنجوریش در گور کرد
 رنج آرد تا بمیرد چون چراغ
 یا به پیوستن رگ بگسته را
 بر که میخندی چه پاد ا بسته
 در رسید او را براق و بر نشست
 قایل فرمان بردار و مقبول شد

طالب حکمت شوا از مرد حکیم
 منیع حکمت شود حکمت طلب
 لوح حافظ لوح محفوظی شود
 چون علم بود عقلش را ابتدا
 عقل چون جبریل گوید احدا
 تو مرا بگذا ازین پس پیش دان
 هر که مانند از کاهلی بے شکر و صبر
 هر که جبر آورد و خود رنجور کرد
 گفت پیغمبر که رنجوری به لاغ
 جبر چپ بود بتن اشکته را
 چون درین رو پای خود شکسته
 و آنکه پایش در ره کوشش شکست
 حامل دین بود او محمول شد

از کتب معتبره است که در این کتاب

مجموعه کتب معتبره است که در این کتاب

تا کنون فرمان پذیرفته نشاد

بعد ازین فرمان رساند بر سپاه

بعد از ان باشد امیر اختر او

تا کنون اختر اثر کرده و رو

ऋषिसोऽप्रचलसुभोसमाना

तनमुखतजिनिजसुखजिनजान

जहांतेभरैअमृतदिनरातो

जननिहपाडुजुड़ावहिछानी

हंसहंसहयहाटक हरहिंहेरहिप्रियअनुहार

हृदयहलाहलमुखअभियतजहुतिनेहटधार

शरणासंतसतगुरकीजीजे

पाइप्रकाशपूज्यतमहोई

होइमुमुक्षुमुक्तहोजावे

प्रथमरह्योवीधकेअनुयाइ

इकपगबुद्धिनिकटतहांगड़ी

शक्तिशेमुखीकीजहांनाहीं

तजिपुरुषार्थप्रमादबढायो

नहिंसंतोषव्याधितहलागी

ऋषिआज्ञातनवनहिभिखरी

कुच्छवतपरकृपाकरीजे

प्रार्तनाराकरदखनउठायो

धर्महेतजोसीसगमावें

भक्तहिधर्मभारकेभागी

होइप्रकाशमोहतमकीजे

अपराविद्यागतिस्वरखोई

आनदधनमेंभगनरहावे

बुद्धिचरिगतिसेवहिताही

तासुतेजनहिंबढतअगाडी

शब्दश्येननहिंतहांउड़ाही

जानतसंतोषहिउरआयो

रोरबमेंतेजाइअभागी

जीयतप्रेमसमतेव्यभिचारि

क्लेशितलखनकष्टहरलीजे

वृथाजन्मलेजगतहंसायो

योगास्तुदयतीकहलावें

विभुवनभूषणभटभयत्यागी

इश्वरआज्ञामेंअचलअनृतअज्ञानीहटार

तासुअनुग्रहअहृततनुलहतअमितअधिकार

मनकेबन्धअबलगसोरहायो अबमनपरअधिकारजमायो

تازہ کن ایمان نہ از گفت زبان
 تا ہوتا تازہ ست ایمان تازہ ست
 کرد تاویل لفظ بیکہ را
 منکر تاویل کردہ ذکر را
 بر ہوا تاویل قرآن سبکتی
 ماند احوالست بہ ان طرفہ کس
 از خودی سرست گشتہ نئے شراب
 وصف بازان شنیدہ در بیان
 گفت من در یاد کشتی خواندہ ام
 ان گس بر برگ کاہ دبول خر
 اینک این دریا و این کشتی و من
 بر سر دریا ہستم را ند او حمد
 بود بے حد ان چمن نیست بد
 عاشق چندان بود کن پیش

اسے ہوا تازہ کردہ در نہان
 کہیں ہوا جز قفل ان دروازہ نیست
 خویش را تاویل کن نے ذکر را
 ذکر را مان و مکر دان منکر را
 پست و کفر شد از تو معنی سخی
 کوہے پنداشت خود رہے کس
 ذرہ خود را بدیدہ آفتاب
 گفت من عتقائے و قتم بے گمان
 تے در فکر ان مے ماندہ ام
 ہمو کشتیان ہے افرخت فر
 مرد کشتیان راہل راے و من
 مے نمودش ان قدر بیرون از حد
 ان نظر کو بیتان را راست کو
 چشم چندین بحریم چندینیش

صاحب تاویل یا طل چون گس

وہم او بول خرد تصور خس

ان گس را بخت گرداند ہما
 روح او نے در خود صورت نمود
 روح او کے یو داند خود قد

گر گس تاویل بگذاورد بر اسے
 ان گس بتو کشتی این غیرت بود
 ہچو ان خرگوش کو بر شیر زد

संविता धर्म संकुल हि लागी
विषय न फल श्रुति अर्थ धुमाये
होइ तुमार दशा पुनि ऐसी
विन मद मत मोह बश मानी
हंस चकोर मयूर बिहंगा
सिंधु सरित संगम सुनि पावा
परेउ पलाल मूत्र खर माहीं
नौका सिंधु अवर नहि कोई
सुनतरहे अब नैन न देखे
तासु हाँस खर मूत्र अगाधा
जेती बुधि विदेह गति तेती

रसना धर्म धर्म रट लागी
^{जिह्वा} विषय न अच्छत धर्म कहां भाई
धर्म हि मत निज ओर चलाओ
संविता धर्म संकुल हि लागी
^{बुद्धि} विषय न फल श्रुति अर्थ धुमाये
होइ तुमार दशा पुनि ऐसी
विन मद मत मोह बश मानी
हंस चकोर मयूर बिहंगा
सिंधु सरित संगम सुनि पावा
^{धान क भुस} परेउ पलाल मूत्र खर माहीं
नौका सिंधु अवर नहि कोई
सुनतरहे अब नैन न देखे
^{अगाधा} तासु हाँस खर मूत्र अगाधा
जेती बुधि विदेह गति तेती
^{पालन करती}

चित में चिंता चाह अभागी
पुण्य मार्ग पट देत लगाई
मन हि धर्म की ओर धुमाओ
संशय संकुल धर्म हि त्यागी
^{मुक्त} अथ विपरीत भाव दरसाये
रही मक्षिका की गति जैसी
मंगल मूल न आपहि जानी
कुक्कुभ मद्गुमान कर भंगा
^{पक्षियों की भेद} नौका निरखन ध्यान लगावा
बैठी करी धार बन ताही
^{मल्लाह} नाविक नीति निपुणा हम सोई
पोत सरित कर कहा परेखा
भयोन कुछ तिहकर अपराधा
उतनी दृश्य दृष्टि है जेती

जिन की माति माया फसी ते मक्षिका समान

रास भ मूत्र पलाल इव वारि दयो त बखान

नुच्छहु जो निज पक्ष हि त्यागे
^{पक्षपात}
नुच्छन होइ जो पक्ष न सावे
शशकि होइ सु सिंह समाना

^{समुद्र} मंगल मूल महत पद यागे
^{नाव}
तन नुषतरि आतन तट धावे
^{वैकल}
सकृत् सत्त्व वल हेने उनि दाना
^{एकदम अतः करेगा}

शब्द

केहर क्रुद्ध भयोजिम काला
 तिनके प्रबल प्रपंच प्रसादा
 अब हम शपथहु सांचन आने
 सपदि सुखेन समूह दिदारीं
 होइ प्रपंच सुबचन विलासू
 शब्द त्यागि निज अर्थ विचारे
 बंचक कहि मृदु बचन रिहाविहिं
 जल पर जो कोइ चित्र बनावे
 बचन देखि बंचक बश होही
 नृपणा तजि तांडव कर गावे
 प्रभु प्रेरित मति जिन चित्त धारी

तुच्छ मृगन हम बांधे जाला
 हम प्रफुल्लतन कीन प्रभादा
 सहसा कर पाछे पछिताने
 खाल खैंच खल खर्वन मारो
 चारि बीच कर कहा विश्वासू
 जिय विनु देहन कारज सारे
 सुनि सन बचन साधु गति पाविहिं
 चिन शेवे गन बह त हरावे
 लेश पाइ कर मीजहि सोही
 प्रभु गुणा कर परिचय सोइ पावे
 अमल प्रदल प्रदूत अघ हारी

नृपति निदेशन नित्य होइ निधुन होइ मिट जाइ
 आधिनिदेश परमेशू युन जब लग सी छिर हाइ

मग में कछु विलंब विस्तारी
 पंचानन समीप सोई प्रावा
 बुद्धि विमल वारिध प्रवगाहा
 कोमनुष्य मति की गति पावे
 तिह सागर हमरी गत कैसी
 विनु जल सीप समुद्र तिरावे

गूढ मंत्र निज मनहि विचारी
 मंत्र मन गढत चाहिय सुनावा
 अगम असीम अगाध अथाहा
 जोन सहस्र समुद्र समावे
 तुंवी तिरै नोय निधि जैसी
 स्वाति बंदलह सिंधु समावे

१ सत एह वाक्य के सरल बचन सुन कर भी उन की गति नहीं जानते॥

صورت ماموج یا از روستی
زان ویست بگرد و راند ازوش
تا به بیند تیسر دور انداز را
مید و اند اسب خود را تیز تیز
و اسب خود او را کشان کرده چو باد
هر طرف پرسان و جویان در بدر
اینکه زیر ران تست بخواجه حلیت
تا شناسد مرد اسب خویش باز

در این شعر که در کتاب
در این شعر که در کتاب

عقل نهانست و ظاهر عالمی
هر چه صورت می ویست سازوش
تا به بیند دل و مهند راز را
اسب خود را یاوه داند و دستین
اسب خود را یاوه داند و دستین
در فغان و جستجو خیره شده
کانکه دزدید اسب مارا کو کیت
وصف بار استمع گوید بر از

جان زبید اسه و نژد یکی ست گم
چون شکم بر آب و لب خشکی جو شتم

عقل که در جوفی پنهان بود
عقل که در جوفی پنهان بود

تا به بینی سبز و سرخ و زرد را
اصناف اوصاف اله
تا به بینی پیش از آن سه نور را
شد ز نور ان رنگار و پوش تو
پس بدیدی دید رنگ از نور بود
همچنین رنگ خیال اندرون
وان درون در عکس انوار عکاست
کوز چشم از نور لها حاصل است
کوز نور عقل و حس پاک و جداست
پس بخت نور پیدا شد ترا
رنگ چه بود هر که کوز و کبود

در این شعر که در کتاب
در این شعر که در کتاب

در درون خود بقیه ادر را
که به بینی سبز و سرخ و زرد را
یک چون در رنگ گم شد هوش تو
چونکه شب ان رنگار استعد بود
نیست دید رنگ نه رنگ برون
این برون از افتاب و از سه است
نور نور چشم خود نور دل است
باز نور نور دل نور حس است
شب بید نور و ندیدی رنگ را
شب ندیدی رنگ کان بے نور بود

अनात्म

आत्मगुप्त प्रगट संसारा
 दृश्यहि जिन निज दृष्ट वनायो
 रहें दृष्टि गोचर शराना
 खोयो अपनो अप्रव बनावे
 अप्रवासी नन जानत ताही
 कम्पाति रुदन करत अति भारी
 कहात स्फुर जहली नतुरंगा
 सुनतहु गूढ विष श्रुत बानी

अथवा वीचिसो वारि मंजारा
 सत्य स्वरूप नति हृद सायो
 सोन दीव जिह शर संधाना
 दूढ़ न ताहि बहुत दौड़ावे
 विभ्रम विवश विषम गति जाही
 खोजत गिर बन गहन मंभारी
 किह पर चढे भई मति भंगा
 नहि निज बाजि परत जिह जानी

जो अति सूक्ष्म अति बड़ो अति समीप अति दूर
 अति व्यापक दीखत नही मरे बहिर मुख कूर

तप बल दिव्य दृष्टि जब पावे
 हरित अरुणामित वरणा अने कू
 वरा मान भई बुद्धि नुमारी
 निशतम निविड़ वरानहि भासे
 वहि प्रकाश जिय वरणा दिखावे
 रविशशि बहिर प्रकाशन हारो
 लोलक चक्षु न स्वयं प्रकाश
 आत्म प्रकाशक अंतः केरो
 तम कर नात न वस्तु दिखावे
 धर्म विरोधी करत विवेकू

आत्म अनात्म प्रकट दिखावे
 किन प्रकाश भासन नहिं स्फू
 बरान दांकली न उजियारी
 जानि सत वहि प्रदीप उजासे
 अंतः द्युति संवित हिलखावे
 आत्म प्रकाश बुद्धि
 आत्म प्रभा अंतः उजियारी
 अंतर्गत द्युति तिह मग भासे
 बुद्धि इन्द्रियगत जा सु उजरो
 पाप प्रकाश पुरुष तिह पावे
 हिम आत पजिम कीहिय न स्फू

नन विरत हुआ कि हम प्रकाश के दूर तक

دیدن نورست انگه دید رنگ
 رنج و غم راحت پے ان آفرید
 پس نہانی با بصد پیدا شود
 کہ نظر بر نور بود انگه برنگ
 دیدن نورست انگه دید رنگ
 پس بصد نور دانستی تو نور
 نور حق را ایست خندے در وجود

وین بھند نور دانی نے درنگ
تا بدین خند خوشدلی آید پدید
چونکہ حق را نیست خند بہان بود
خند بھند پیدا شود چون نوم درنگ
این بھند نور دانی بے درنگ
خند خند را مے نماید در صد و
تا بھند اورا توان پیدا نمود

لا جرم ایضا ما لا تدرك
وهو يدرك بين تو از موسی و که

یہ رنگا ہیں ادراک ادسکو نہیں کر سکتے
اور وہ رنگا ہونکو ادراک کرتی ہیں

صورت از معنی چو شیر از پیشه دان
این سخن را و از اندیشه خاست
لیک چون موج سخن بیدی لطیف
چون ز دانش موج اندیشه بتاخت
از سخن صورت بزاد و باز مرد
صورت از بے صورتی آمد بدون
پس ترا هر لحظه مرگ در جبینست
فکر تاثیر نیست از هو در هوا
هر نفس نو میشود دنیا و ما
عمر همچون جو نونو میرسد

یا چو او از سخن ز اندیشه دان
تو ندانی بجز اندیشه کجاست
بحران دانی که باشد هم شریف
از سخن او از اصدورت بساخت
موج خود را باز اندر بحر برد
باز شد گاتا الم را جعون
مصطفیٰ فرمود دنیا ساعته است
در هوا کے پاید آید تا خدا
نے خبر از نوشتن اندر بقا
ستمری سے نماید در بند

۵۵۔ ہم سب اپنے بندے کے طرح جانیو گے۔

देखि प्रकाशवराणपुनिदेखिय
 दुखविनसुखविनबैसनेह
 बिनुविरोधनहिगुप्तदिववे
 भेदहिबस्तुमात्रविलगावे
 लखि प्रकाशपुनिवरीलखावे
 तमकरतरंगितेजतुमजानो
 जासु प्रकाशविरोधनहोई

धर्मविरोधविनाकिमपेरिवय
 दिवसरात्रविनुजाननकेह
 ईशविरोधनसोकिमपावे
 श्वेतप्रयामविनुजाननपावे
 विनुवैधर्मनतिहविलगावे
 विनविरोधनहिपरतपिछानो
 अनुपमनाहिलखेकिमहोई

अमलप्ररूपप्रशब्दअजप्रकृतः कविः कृतज्ञ
 अंतर्गामी अखिल प्रभुप्रच्युत अभय सर्वज्ञ

प्रत्यक्षहि परोक्ष दसवे
 वाराणी मानस माहिरहार्द
 बचनवारिजवनिर्मलहोई
 वारिदबुद्धिसोबीचिविचार
 होइ स्थूल पानि शब्दबिलाई
 सूक्ष्मही स्थूल वपुपावे
 छिनछिनजन्ममृत्युहमपावहिं
 शरसमानसंकल्पहमारे
 प्रतिछिनहमनवजीवनपावहिं
 अभिनवप्रायुसरितजिमवारी

भाषराअंतर्गताहेजनावे
 मनकिहआश्रतरहतसदाई
 हृदयसमुद्रस्वच्छपुनिसोई
 शब्दरूपहुइजगतपसारा
 उर्मीजिमनिजउदधिसमाई
 कारजकाररामाहिहसमावे
 तिहछिनमात्रविश्वकृषिणावहिं
 प्रभुप्रेरिततिहनिकटपधारहिं
 धिरजानततिहध्याननलावहिं
 मिलतप्रवाहनजातनिहारी

ان ز تیزی ستم شکل اندر است
شاخ آتش را بجنبانی باز
این درازی مدت از تیزی ضلع
طالب این سیر اگر علامه است

چون شیر کش تیز جنبانی بدست
در نظر آتش نماید بس دراز
میناید سرعت انگیزی ضلع
نگ حسام الدین که سامی نامه است

وصف او از شرح مستغنی بود
رو حکایت کن که میگردد شود

شیر را افزو دشمن و شد نفور
میدودند دشت و گستاخ او
کز شکسته آمدن بهمت بود
چون رسید او بیشتر نزدیک صفت
من که پیلان را ز بهم بدریده ام
نیم خر گوشه که باشد ایچنین
گفت خر گوشش الا مان عذریم
باز گویم گر تو دستور می دهی
گفت چه عذراے قصور ابلیهان
عذر احق بدتر از جرمش بود
عذرت اے خر گوشش از دانش تھی
گفت اے شعله که را کس شمار
خاص از بهر زکاة جابه خود

دیدگان خر گوشش مے آید ز دور
خشمگین و تند و تیز و ترش و
وز و لیری دفع هر زیست بود
بانگ بر زد شیران لے ناخلف
من که گوشش شیر ز مالیده ام
اجز را افسگند او بر زمین
گرده عفو خداوندیت دست
تو خداوندی و شاہی من رہی
این زمان ایند در پیش شومان
عذر نادان ز هر هر و نشش بود
من نه خر گوشم که در گوشم نهی
عذر استم دیده را گو شدند
گر بے را تو مران از راه خود

वेगविवशनिहिं विलगलखावे
परतनर्तुलाकारिदखाई
दीर्घकालछिनछिनमिलहोई
जिह्वाविगूढमर्मयहजानों

ज्योंलूकालैताहिधुमावै
यदपिआगिनतहांअल्परहाई
प्रभुअद्भुतगलिलखतनकोई
विद्यावारिधतिहअनुमानौ

सदगुरुसंतसमानचितसुखसर्वज्ञसुजान
तिनकीमहिमाकेकहतशारदशेषलजान

शशआवतदूरहीतेदेखी
निपटनिशंकनिंकुशमानी
भयसदैवअवनतिकरहेतू
सिंहसमीपजबहिशशआवा
भालबराहवाघकनागा
शेख सुअर भंडिया हाथी
तुच्छशशाकिदीठप्रसहोई
शशाकहिपाहिपाहिभृगुहोई
स्वामिजानबिनवोंकरजोरी
कहुखलनीचअधमप्रभिमानी
हइअन्मतकीनअपराधू
युक्तीशून्यवादकसठानत
कहशशबुद्धिहीनमेंस्वामी
प्रभुनिजप्रभुताओरनिहारी

पंचाननभाक्रुद्धविशेषी
सिंह
आवतचपलअचिंतगुमानी
साहससंसृतदुखकरसेन
कालसमाननिनादसुनावा
शब्द
नित्यविनीतिदेहिसबभागा
आज्ञाभंगकरहि किमकोई
कृपादेखिकहुकरबडिठोई
समिये नाथचूकबड़भोरी
योग्ययुक्तिमनमेंजिहठानी
करनप्रबोधनीचनिमसाधू
किधोंअबुधहमहूकोजानत
आर्जनारादुखहरानमामी
उपकता
ममदुखदुसहदेहुसबतारी
कोठन

بحر کو آبے بہر چوئے وہ
ہر خستے را بر سر و رومی نہند

مفتی

گفت دارم من کرم ہجائے او
جامہ ہر کس برم بالائے او
جو اب خرم گوش

گفت بشنو که نباشم چاک لطف
من بوقت چاشت در راه آمدم
با من از بهر تو خر گوشه دیگر
شیرین اندر راه قصه بنده کرد
گفتمش ما بنده شاه بنده ایم
گفت شاه بنده که باشد شرم داد
هم ترا و هم شربت را بردم
گفتمش بگذار تا بار دیگر
گفت همرد را اگر و نه پیش من
لا بیکردنیش بسم سوخته نکرد
ماندان همرد گرد در پیش او
یارم از زلفتی سه چندان بلکه من
بعد ازین زمان شیرین ^{بهری} ره بشد

سه ندام پیش از در پا عفت
بار فین خود سوخته شاه آمدم
جفت و همرد کرده بودند آن نفر
قصه هر دو همرد اینده کرد
خواجہ تاشان که آن در گهیم
پیش من تو یاد هنرناکس سیار
گر تو بیا بست بگردی از درم
روشنه بنیم برم از تو خبر
ورنه قربانی تو اندر کیش من
یار من بسته مرا نگذاشت فرد
خون روان شد از دل بخویش او
هم با لطف و هم بخوبی هم به تن
حال ما این بود با تو گفته شد

شیرین قصه من بگریزانی خیر بود

—کمزور جب بھی باغی ہو کر اُڑے تو میری تیر مار میں جھکنا پڑتا ہے۔

सिंधुसरितसर पोखन हारा
तामु प्रमित महिमान घटाई
असीम

सिंहोवाच

तुच्छतराहिनिजशिरजनधारा
प्रगटप्रकाशिततिह प्रभुताई

बोलौ हम अरि दर्प दलि देत दीन दुख खोइ
करहि कृपा जन जान हम जो जिह लाय कहोइ

शशा उवाच

जोन दया भाजन हम होही
प्रभु मता पलरि वप्रात पयाना
उभय अनुपउ पदार उपाई
हमरी गगन गेनु ^{भेद} इक घेरी
पद गहि विनय कीनति हपाही
बोलो हमहि होहि वन राजा
तोहि सहित तब नृपति हमारीं
कहेउ जो प्रभु आशा हम पावें
छोड़ो छक छलोजिन मोही
कीन प्रशंसा हम बहु भांती
सो असहाय रहेउतिह पासा
रह्यो सो पीन पुष्ट प्रभु लायक
दैनिक दान दीन उनरो की

नित्य

कतिन दाण्ड पावहि हम सोही
अनुज सहित चित में हम गाना
प्रभु की ओर चले दोउ भाई
कीन प्रा राहित घात घनेरी
पुन्य पुंज प्रभु पर हम जाहीं
को प्रभु आन कहत नहिं लाजा
उतर देत मुख जीभ निकारीं
प्रभु दर्शन करि हम फिर आवें
छिपै कहां वो ल्यो नृपद्रोही
तजेउ मोहिरि वलीन सगाती
परवश मोर फिर न कर आशा
मैं कृप जान तजेउ बन नायक
प्रभु के अछत करि हे विशो की
प्रभु के होते

از وظیفه بعد ازین مسدود
حق ہے گویم ترا الحق مر

گرد وظیفہ بایست رہ پاک کن
ہین بیاد دفع ان بے باک کن
رفتن شیر با خر گوش

گفت بسم اللہ بیانا او کجاست
تا سزاے او و صد چون او دہم
اندر آمد چون قلاب و وزے پر پیش
سوے چلبے کو نشانش کرده بود
مے شد در این ہر دو تا نزد یک چاہ
آب کا ہے راہیا من مے برد
دام مکر او کمند شیر بود
حال ان کو قول دشمن را شنود
دشمن از پتہ دوستانہ گوید
گر ترا قندے دہد ان زہر دان
چون قضا آید بینی غیر بوست
چون چنین شد اہتہال غاز کن
الہیکل کاے تو علام الغیوب

پیش رو شو گر ہے کوی تو راست
ور دروغ ست این سزا تو دہم
تا بردار اور البسے دم خویش
چاہے مخ را دم جانش کردہ بود
اینست خر گوشے جو آبے زیر گاہ
آب کوئی را عجب چون مے برد
طرفہ خر گوشے کہ شیرے را بود
ہین جز اسے آنکہ شد یا جرسود
دام دان گر چہ زندانہ گوید
گر بتو لطفے کند ان قہر دان
دشمنان را باز شناسی زدوست
نالہ و بیج و روزہ ساز کن
زیر سنگ مکر بہ مارا مکر ب

نہ جہانے خلد سے بار نکلا

استقامت از انکس اندر تو نیست
یا کریم انہ فوستار العیوب

| | |
|---|---|
| भावितभक्षनअबफिरआवहि | करुमेवजसनसवहिनभावहि <small>आवधि</small> |
| भूपजोचाहोभागनिजतोभीषराभयदार <small>कहि</small> राजकरियरिपुरहितननुराहियेसदापनमार सिंहकारखरहाकेसाथजाना | |
| <p>कहांसपत्नचलिदेहुदिखाई <small>वेरअपानदसरासिंह</small> दुष्टहिदंडदेहुताहिदेखज आगेशशशृगेन्द्रपुनिपाछे <small>सिंह</small> लिहउदयामइष्टनिजमानो <small>कुआ</small> दोडधरदृष्टिकूपदिशजाहीं गिरसेसदाबारिउपजावे शशप्रपंचपंचास्यफसावा <small>सिंह</small> शत्रुसिखावनजिनशिरधारी <small>चै</small> अहितकहेजोहितकीबानी मधुमदजानिजजियअरिरेरो <small>शहत शराव</small> कालकराललेतयतिहंकी त्यागबुद्धिवलहरिवललहिये हेअपंडअजअंतर्दामी</p> | <p>असकहिचलोसंगबनराई दुर्गततोरअनुतजोपेखत <small>हु</small> जालिमजातजालमेंप्राछे <small>अन्याई</small> पापरपाराहरनहितठानो जिमनृणांसरितउदधिकेमाही अहोअम्बुकिममेरुवहावे <small>जल परबत</small> मशकफूकजिममेरुइडावा <small>मच्छर</small> परैसिहसमकूपमंभारी तजियअमृतहूविषवतजानी हीरमाहिविषहोइधनेरो नहिअरिभित्रपरततबभांकी कुसमयजानिधर्मपथगहिये बारबारपदकमलनमामी</p> |
| मोहविदशमेंमन्दमतिमानसमलिनअधीर भूतनाथप्रभुभवजनितहरहुभयंकरभीर <small>मसार</small> | |

انچه در کون ست اشیاء هر چه هست
 گر بکس که دریم اے شیر افرین
 آب خوش را صورت آتش بد
 از شراب قهر چون مستی دای
 چیت مستی بند چشم از دید چشم
 چیت مستی سها مبدل شدن
 این قضا ابرے بود خورشید پوش
 اے خنک انکو نکو کاری گرفت
 هم قضا پوشد سیه چون ثبت
 این قضا صند بار گر را هست زند

و انما جان را بهر صورت که هست
 شیر را انکار بر بایزین کین
 اندر آتش صورت آئے منه
 نیست بار صورت هستی دای
 تا نماید سنگ گوهر چشم
 چوب گز اندر نظر صندل شدن
 شیر و اثر در با شود زده پوش
 زور را بگذشت اوزاری گرفت
 هم قضا دستت بگیرد عاقبت
 بر فراز پرخ خر کا هست زند

از کرم دان اینک که می ترساندت

تا بملک ایمینی بنشاندت

پادرس کشیدن خرگوش از شیر چون نزدیک چاه رسید

شیر با خرگوش چون همراه شد
 بود پیشا پیش خرگوش دلیر
 چونکه نزدیک چاه آید
 گفت پادرس کشیدی تو چرا
 گفت کو پایم که دست و پا گرفت
 رنگ رویم را نمی بینی چون زرد

پر عفتب بر کینه و بدخواه شد
 ناگهان پادرس کشید از پیش شیر
 که زده آن خرگوش ماند و پاکشید
 پادرس او را پس کشید پیش اندر
 جانمن لرزید و دل از جا گرفت
 و اندرون خود سید هر گم خبر

मैंतब माया माहि भुलाया
 यदपि कृपरा हम कूर कुचाली
 शुभहि अशुभ अशुभहि शुभजाने
 जबहि हृदय उन्माद बढावे
 चारु चसुनहि चेत रहाई ^{गुहिलत}
 भेद मोइ मन भ्रम पड़ जावे ^{अष्ट}
 कठिन कृतान्त केर कुटिलाई ^{कील}
 धन्य जगत में ते तन धारी
 बिधि बश घोर घटा धिर आवे ^{मोहन}
 सोई सकृत् सुख सदन सुहावन

ज्ञान दान दीजै करि दाया
 तदपि करिय निज प्रसा प्रतिपाली
 अमृत भाव करि बिषाह लुभाने
 हमें असत्य सत्य दरसावे
 चूरी होइ चित की चतुराई
 नेत्र रोग जिम पीत दिखावे
 तराणि धरा भू धारि धरिखाई ^{हृय सुख सुख}
 जिन तजि दम दीनता धारी
 दारुणा दुसह दुःख दरसावे
 छावे वर्य मुनिन मन भावन

नैसर्गिक गुणानहि सजे दीजै तिह सुख जार ^{मुक्ति उमन कोर जलाइ}
 धन्य सो दुख संशय दमन जिहि दरसे दीदार
 कुआ के पास पहुँचते ही शशका खड़ा हो जाना

शश और सिंह चले संग जाहीं
 भये उसो गड़ सकृत् तिह आगे ^{एकदम}
 कूपनिकट भीषण भयल हेऊ
 काहे न बढ़त कहहु शश आगे
 शश कहम मकर पद थिस्ताही
 मुख द्युति हीन गार् अरुणाई

द्वेष अमर्ष ताप मन माहीं ^{क्रोध}
 जनु शाबक के हर भय लागे ^{हिरनकावच्छा}
 शिथिल प्ररीत मनहु शश भयेऊ
 धमक धरहु पाग भ्रम भय त्यागे
 कम्प शरीर शंक मन माही
 अंतर्गति सुख देत बतलाई

حق جو سیمار امعوف خوانده است
 رنگ بو غماز آمد چون ^{آنکه تعریف} خبیرس
 رنگ درو سے سرخ و اید بانگ شکر
 درمن آمد آنکه دست و پا برود
 آنکه در هر حبه در آید بشکند
 درمن آمد آنکه از گوشت مات ^{خات و گد}
 چشم عارف سوسے سیمامانده است
 از فرس آگه کند بانگ فرس
 رنگ درو سے زرد و اید و صبر و نگر
 رنگ درو قوت و سیمایم
 هر درخت از بیخ و ازین برکت
 آدمی و جبال و جاد نبات

این خود اخباریند و کلیات ازو
 زرد کرده رنگ و فاسد کرده باو

تا جهان آگه صابرست و پیشک
 افتاب کو بر آید تلخ گون
 اختران تافت بر چار طایف
 ماه کو آنکه زودتر اختر در جبال
 این زمین با سکون و با اید
 اسے بسا که زمین بلایه نمانان
 این هوای روح آمد مقتدر
 آب خوشید کور و اید همیشه شد
 آتش کو با و اید و در پرورت
 خاک کو شمشاد مایه کل در سیمار
 حال در بازار اضطرار سیمایم
 جبرخ سرگردان که نام زیسته و جبرسته
 بو تان آگه غمخوار شد و گمراه عور
 ساسد دیگر بود او سرنگون
 لحظه لحظه مبتلا کے احتراق
 شد ز رخ و رخ و اید چون طلال
 اندر آرد زلزله است و در لرز و تپ
 گشته است اندر زمین چون ریگان
 چون قضا آید و با گشت و عفن
 در عذیر سے زرد و تلخ و تیره شد
 جگر با و سیمایم و خواندیموت
 ناگهان با و سیمایم و زود مار
 قسم کن بعد یلماک هوش او
 حال او چون حال فرزندان او

این خود اخباریند و کلیات ازو
 زرد کرده رنگ و فاسد کرده باو

प्रापसभ्यसुठसाधुसयाने
 चेष्टा चीनचतुरसबजाने
 मुखप्रसन्नमुखकोसरसाई
 हरीरुतांतकलेवरकानी
 चितवहि कालहाष्टकरजहा
 जिहबशविकलसुनहुवनराना

मरिचिभुवलिखअंतर्गतिजाने
 शब्दसुननशकुनहिपहिचाने
 दुखदरिद्रमुखकोपियराई
 बाढोशोकगईशुभशांसी
 व्यसनविकेबसातुकिनेही
 जीवजनुजडचेतननाना

विद्याधरकिल्लरप्रसरनिर्जरदेवपिशाच
 चतुराननमधेवाश्रानलशशिरबिजिहडरनाच

सबजगउत्पतिलयकेमाही
 त्वाणिगभातप्रसराप्रगटाई
 उडुगगगगलगहनबनचारी
 कबहुकलानेधिकांतिधनेरा
 कबहुधरातुल्यधरदग्मावे
 शैलविशालशिरिखशुचिशोभित
 प्रगरप्रभंजनप्रागाप्रधारा
 सलिलसदाप्राशानसुखदाई
 ज्ञातवदजगज्योतिपसारी
 भेषजभूरिभूमिउपजावे
 उदाधिउभगउग्रजिहभाही
 गगनसबनप्रिलविलगरहावे

विकसेबनपुनेकबहुसुखाही
 संध्यासमयसहजमुकजाई
 चंद्रसभीपप्रभातिनदारी
 कबहुक्षीराप्रतिपरतनहरी
 पुनिभीषराभूकंप्रभावे
 रजसमानप्रलयानलसोभित
 कालप्रभावकरैसहारा
 नीचकीचमिलप्रागासुखाई
 काररापवनतासुलयकारी
 नाहिसपलसमीरसुखावे
 व्याधिविषमताप्रगटदिखाही
 घटमठगाहिअनेककहावे

گره حقیض و گره میانگاه اوج اندر دوازده و نهم فوج فوج

گره شرف گاه صعد و گره فرج
گره دپال و گره سقوط و گره ترج

از خواست جز وی ز کلمات مختلط
چون نصیب همگان و دوست و رنج
چون کلیات را رنج است دور و
خاصه جزو است که از اصد دست جمع
این عجیب بود که پیش از گرگ است
صلح دشمن و ارباب شد عاریت
زندگانی زشتی ضد هاست
صلح اخلاص دوست عمر این جهان
روز که چنانچه از هر اسیر صلحت
عاقبت هر یک بجوهر باز گشت
لطف باری این پلنگ و رنگ را
لطف حق ز شیر را و گور را
چون جهان در بخور و زندانی بود
خواند بر شیر او ازین رو پند را
شیر گفتش تو ز اسباب مرض
پایه را و پس کشیدی تو پیرا

فهم میکنم حالت هر سینه
که تران را که تواند بود گنج
جز و ایشان چون نباشد زرد
ز آب و خاک و آتش و باد است جمع
این عجیب که پیش دل در گرگ است
دل بسوی جنگ تا زو عاقبت
مرگ آنکه در میان شان جنگ است
جنگ اخلاص است عمر جاودان
یا خدا اند اندر فضا و رحمت
هر یک با جنس خود انبار گشت
الف داد و برد و از ایشان جنگ را
الف داد و ست این دو ضد را در
چه عجیب در بخور گر فانی بود
گفت من پس مانده ام زین پند را
این گو که خاص این استم غرض
میدهمی باز بچراغ اسرار

گفت ان شیر اندرین چه ساکن است
اندرین قلعه زافات ایمین است

یار من است ازین در حیا و برد
تقریب بگزید هر کوه عاقل است
بر گرفتار از ره و پنهان بود
ز آنکه در خلوت صفا باشد

ऊंचनीचमध्यमगतिहोई

भलअनभलजानेकिमकोई

तमप्रकाशगुरादोषमयकबहुसुबस्तकुबस्त
तुंगारवर्बनहजबकहोइकाबहुउदयपुनिअस्त

^{महाभूत} भूतस्वयजबथिरनरहाही
^{करिया} महनमाहिमुदप्रकटनकाई
^{जोनि} करियामाहेकुशलजहांनाहीं
विपुलविरोधसोभूतरहाही
अतिआश्चर्यरहेंमिलसोई
शत्रुसंधिनेमिजिकजानो
^{मिजाप आषाधिक} जीवनतनकरमेलउपावे
भूतनप्रेमआयुनिजजानहु
कछुकदिवसमिलरहेपस्यर
पुनिप्रधानप्रभुपालिरजाई
^{मायाप्रकृति} महिमाप्रामातजगनपतिकेरी
शशशार्दूलरहैएकसंगा
^{सिंह} जगजंगलजंतुजवजाये
शशशिक्षाशुचिकहोघनेरी
कहुनिजव्यासिंहप्रसकहेऊ
जिहकरमूढरहेउअरगाई ^{लडाहुआ}

^{कुला} कुलापकायकिहलेखमाही
^{कामे उर} अल्पअमर्षअयनकिनहोई
कारजतासुहोइपरछाहीं
निहकरचितशरीरनिकाई
सत्यसिंधुमहिमानहिगोई
^{ईपवर} निजरकाराभरतपयानो
गिनफीकलहसोभृत्यकहावे
विग्रहतासुभृत्यपहिचानो
^{लडाई} वैरविरोधविसारभूतवर
निजनिजकाराभाहिसमाई
^{पंचभूत} छागवाघरहेंवैरनिवेरी
^{वकरी सिंह} प्रगटतासुप्रभुप्रेमअभंगा
जीवितरहतसदाकिहभाये
परतनपांवभृत्यनिजहेरी
किहकाराकेशिननुमभयेऊ
कारातासुकहहुसमुझाई

शशकहिकोपनकरियप्रभुयाहिकूपकरवास
मतमहापमृगेन्द्रजहंलीनिसअचलभवास ^{अदृष्टाह}

लीनछीनआताममयेही
रेशनिजनिपश्चितपावें
^{रहाव}

लेसोगयेउउदपानहितेही
निरसविमलविषकवढावें
^{कुसी}

ظلمت چہ بد کہ ظلمت پائے نوا
گفت پیش از خیم اور آقا پرست
گفت من سوزیدہ ام نان انشی
تا بہ پشت تو من اسے کان کرم
چونکہ شیر اندر بر خویشمش کشید
چونکہ در چہ بنگرید اندر اسب
شیر عکس خویش دید از آب یغیت
چونکہ خصم خویش را و را اسب دید
درقت او اندر چہ گوشت دہ بود
جا ہنڈ گشت ظلم ظالمان
ہر کہ ظالم تر چشش با بول تو
اسے کہ تو از ظلمت ہستی میکنی

لا جو دنیا کا بنا دیند رستگرت و در آن کسی نیست کرکنا لا

شیر اندر اندک گیر د پاسے خلوت
تو بین کان شیر در چہ حاضر است
تو مگر اندر بر خویشمش کشی
چشم بکشایم بچہ در بنکر م
در بناہ شیر تاجہ سے دوید
اندر اسب از شیر او دریافت تابا
شکل شیر فر بہ خر گوش زفت
مرد را بگذاشت اندر چہ چسید
ز آنکہ ظلمش بر سرش ایندہ بود
این چنین گفتند جملہ عالمان
عدل فرمود دست بدتر را بتر
از بر اسے خویش دلے می تہی

بر ضعیفان کر تو ظلم میکنی

دان کہ اندر قہر چاہے بنی - بجلی تہ پوٹ گئی ہو۔

بر ضعیفان کر تو ظلم میکنی
گر و خود جوان کرہ پیسہ بدقت
بر ضعیفان را تو بنے خصمے دان
اگر ضعیفے در زمین خواہد امان
کہ بدندانش گزی بر خون کنی
شیر خود را دید در چہ وز غلو
نفس خود را او عدوے خویش دید
اسے بس ظلمے کہ مینی از کسان
اندر ایشان تاختہ ہستی تو

لا ضعیفہ را در کو شاہ بخاں اب اللہ پوٹ گئی تو

دان کہ اندر قہر چاہے بنی
بہر خود چسہ میکنی اندازہ کن
از جتنہ از جاہ نصر اللہ بخوان
غلغل افتد و سپاہ آسمان
ورد دندانتا گیر و چون کنی
خویش را شناخت اندم از عدو
لا جرم بر خویش شیر کشید
خورے تو باشد در ایشان ایغیان
از انفاق و ظلم و بد ہستی تو

परियकूपनहिं करियकुसंग
 कहिकेहरनिशंकपगधरह
 कहशशभोमेंनाहंमनुसाई
 तबबलपाइलेहुतहांहेरा
 लीनसिहनिजपीठचढ़ाई
 भंकाकनकालकवरजलमाही
 वारिवीचप्रतिविंवविगजा
 शूलशत्रुलखिअप्यभुंलाया
 गिरैजोअवरनकूपखुदावे
 भेषभुजगभयंकररक्षक
 कुटिलकठोरकुलहनिनपावहिं
 अवरनहेतजालजिनताना

संसारिनसंगकरिचितभंग
 सिंहअहेयहांकहिभ्रमहरह
 हांजोलेहुनिजअंकलगाई
 चितचंचलतामिटैघनेरी
 नहिंजानतशशकीकुटिलाई
 शशसहसिंहदोखनिजझाही
 सम्भ्रमसाजशशावनराजा
 शशतजकूदकूपमेंधावा
 वोदबबूरदारवकोखावै
 कहतकपालुकविजगरक्षक
 अयशपाइपुनिनर्कसिधावहिं
 कसनफरैतिहमाहिअयाना

दुर्दिनदीनदुखीनपरदीनअनीतिद्वार
 निश्चयगहरेगर्तेमेंगिरैसोबेगगमार

करिअनीतिदीननपरनाना
 पाटकीटसूत्रदिलपटाई
 दीननशक्तिहीनमतजानो
 दुखियनहूकउठतमन्माही
 भुजवलभंजविकलनरकराई
 कुल्लकूरगाकूपभंभारी
 नहिअरिभीतक्रोधवशजानेउ
 लोकनमाहिजोद्वेषदिखावे
 तुमरोहिद्वेषअनीतिप्रमादा

करतरसातलमाहिपयाना
 मरनहेतनिजकरतउपाई
 शम्भुशरणाप्रशस्ततिनआनो
 धराधराधरकम्पतिताही
 भुजनरहेतबभयनिनभरही
 निजरूपहिपौरपंथनिहारी
 आत्मघातपरशरसंधानेउ
 तनस्वभावतिनमेंदरसावे
 तिनमेंप्रगटकूपजिमनादा

آن تو ہی دان زخم بر خود میسزنی
در خودان بدرائے بینی عیان
حکم بر خود میکنی ای سادہ مرد
چون بقعر غوغای خود اندررسی
شیر را در قعر پیدا شد کہ بود

بر خود این ساعت تو منت نیکنی
ورنه دشمن بوده خود را بجان
پنجهان شیر که بر خود حمله کرد
پس بدانی که تو بودان تا کی
نقش اوان کشد اگر کسی محو نمود

هرگز دندان نمی بیند
کاران شیر غلط بین میکنند

اس کے بدیدہ حال بدبر و دے عزم
مومنان آئینہ یک دیگر اند
پیش چیمت دشتی شیشہ کو
گم نہ کو رہی این کیودی دان زخوش
مومن از منظر بنور اللہ بتود
چونکہ تو بی نظیر بنوار اللہ ہدی
اندک اندک آیت ہمتش بزن
تو بزن یا ربنا آب ^{عینی چوڑی} ^{ظہور}
کوہ و ذریا ^{مناجات} ^{روقت} حملہ در فرمان تست
بے طلب تو این طلب مان دادہ
بے شمار و حد عطا ہا دادہ
بے طلب ہم یہی گنج نہان
خان و مان وادی و عمر جاودان
این طلب در ما ہم ایجا دست

عکس خال تست ان از غم میخیزد
این خبر را از بیمبر آورند
زان سبب عالم کبودت می نمود
خونیش را بر گوشت کس را تو بیش
عیب مومن را برینه چون نمود
در بدی از نیکوی غافل شدی
تا شود نابرتو تو را بخواه کن
تا شود بدین نارسا لم حبله نور
اب و آتش را خداوند آن تست
کنج احسان بر همه بکشاوه
باب رحمت بر همه بکشاوه
رایگان بخشیده جهان و جهان
سایر نعمت که ناید در بیان
رستن از بیدار یارب داد تست

با طلب چون ندی ایسے حسی و دود
کز تو آمد۔ جلگی جود و دود

करिनकुठारहनननिजचरणा
निजदुष्कृतनहिं तोहिरिखाई
निजतनुबेधतकरिनकृपाराणा
करियविचारबैठमनमाही
निजप्रतिविंबकूपमेंदेखी

लज्जितकरकूपयभाचरणा
अजअहितअपनौअन्याई
हरिजिबहर्षहनेनिजमाराणा
आपनैदोषअंतकहुनाही
सिंहकल्पकृतकोधविशेषी

दीनदुखितकरदुष्टनरजिहभयकुधुरडुलाहि
सिंहसमानसहजसौनरजिहसबसकलसिराहि

तुमरोहिद्वेषतातप्रगटाई
जनमनमुकुपरस्परधारहि
असिनादशप्रसगतजामू
अंधअन्यकरअशुभविचारहि
सत्यसत्त्वसज्जनसबमहर्षी
होइद्वेषयुतहोइतुमारी
द्वेषदहनशुचिवारिबुझाओ
विश्वस्मरवरवारिविचार
बनिहवारिधरभूधरभारे
विनुअभिलाषकाजसबसारा
बिबिधदानप्रतिपादनकीने
रचिप्रपंचपोखेबिधिनाना
भूरभक्तिपदमभुप्रभावफल
अभितअनुगहआपउपाये

लोकमंजुमनपरतदिरवाई
सलतजमंशयसकलनिवारहि
नीलनिकायनिरीसतितामू
सज्जनसततस्वदोषनिहारहि
निमिरजागाहितजनमुदिकहही
सदगुरारहितअमंगलकारी
तजिसंशयसदातिजिहपाओ
देहुदलहुद्रुतद्वेषदवास्
सिद्धशक्रयमवश्यतुम्हारे
कृपाअमितकोबररोपारा
बहुलबुद्धिबलपरतनचीने
तुमअकामकामदभगवाना
कूलकलमषबुद्धिनुमरेबल
आधुअभीष्टअर्थमनभाये

अंतयामीअमरअजसबहिअथाजितदीन
ललितलालसापरसोप्रभुकरतिकीआशाहीन
आधेना

مژده بردن خرگوش و سگے نخچران که شیر در چاه افتاد

| | | |
|---|--------------------------------------|--|
| <p>چونکه خرگوش از دایان شاد گشت شیر را چون دید مجروح و خالیست شیر را چون دید گشت که خالیست شیر را چون دید و چه گشت کار دست میزد چون رسید از دست مرگ شاخ و برگ از جیب خاک ادا شد برگها چون شاخ را بشکافتند بادبان شطاه شکستند بے زبان هر باد و آب و دانا چاهانای بسته اندر آب و گل در هوای غنی حق نقصان شوند جسم نشان در قفس چاهان خود بین شیر را خرگوش در دندان نشاند در چنان تنگی و آنکه با عجب</p> | <p>له نایست و خط ازین سگے نخچران</p> | <p>سوسه نخچران روان شد تا بدست سوسه تو سگے خود و دید او پیش پیش می دورید او شادمان و بار شد جبرخ میزد و شادمان تا مرعوب سبزه دهان دور بود چون شاخ و برگ سر بر آورد و در حلقه باو شد تا میالاسه و درختان شاد شدند میسرایه هر بر و برت جدا میسرایه شکر و شمع خدا چون رسید از آب و گل شاد و دل میسرایه بدربل نقصان شوند و آنکه گرد و جهان از امان خود میسرایه تنگ شیر سگے که خرگوشی همانند فخر دین بخوابد که گویند ت لقب</p> |
|---|--------------------------------------|--|

اسکے دوست شیری در کبابین چاه و هر
 نفس چون خرگوش چون گشت به قهر

| | | |
|--|-------------------|--|
| <p>نفس خرگوش به صحرادر چرا سوسه نخچران و دیدن شیر گیر مژده مژده کان عدو سگے چاهان مژده مژده اسگے که ده عیش ساز آنکه از پنجه بے سر با بکوفت</p> | <p>سگے نخچران</p> | <p>تو بقدر این جسم چون و چرا کابشتم یا قوم از چاه ابشیر کتد صحرای نقش و نه انسا کان سگدوزخ بدوزخ رفت با همچو خس جادوب مرگش هم بر وقت</p> |
|--|-------------------|--|

सिंहकेमारेजानेकीबधाईलेजा
नखरहाका मृगगरा के पास ॥

प्रमुदित^{प्रानिदित}शशानहिंमनदुचिताई
घोर^{प्रानिदित}व्याधवाधहिदेखी
हानिकेहरिहिहर्षमनमाही
केहरलिहकूपमेंजाची
पेलिकृतांताहि^{कालभानिसिंह}कोनपयाना
भूमिभेद^{कालभानिसिंह}रजिमानेकसे
लतापरासंकुलबनमाही
पत्रपत्रप्रतिरसनबनाई
जिह्वाहीनपत्रदलनाना
फसोप्रकृतिमेंपरुषपुरातन
प्रेमप्रकाशप्रफुल्लितहोई
प्रतिआनंदजासुतनमाही
प्रात्मसिंहसमसमरथसोई
प्रतिआश्चर्यप्रनात्मफसाता

मृगगरा^{मधुरशब्द}माहिलौबनजाई
चलामनहिधरिहर्षविशेषी
मुखप्रसन्ननिखतपारछाहीं
निर्तननिडरचलाग्रभिमानी
करतकुतूहलकलरवगाना
पल्लव^{कोपल}नवदलसहत^{वस}रुविकसे
कुसुमितीविरपसघनजिह्वाही
प्रभुमहिमागावतमुखदाई
गरापतिगूढगुणानकरमाना
निकसेपाइसुकृतिवलसज्जन
पूराचन्द्रसमप्रगटेसोई
आत्मदशालखिकविमकुचाई
धकजोमनशशकेवशहोई
अधिपिंडितमुनिनामधरावा

सिंहसमानस्वतंत्रतूसांमकूपसंसार

समरमाहिमनशशसहशसहजकीनसंहार

मनस्वतंत्रविषयनवनमाही
^{शश}मृगगरा^{समान}माहिमुदितमनधावा
हनेउविपुलविपुलवलधारी
रहहुनिशकशोकसवगयेऊ
जागलजीवजंतुबहुजाती
जंगलकेजीव

बधनकूपजीवविललाही
शुभसूचक^{सिंह}शुचिशब्दसुनावा
ईश्वरकोपकूपमेंडारी
नारकगौरबनाचकभयेऊ
हनेसांराजहतेउत्पाती

| | |
|---|---|
| <p>آنکه جز بظلمش دیگر کار سنبود گردنش بگرفت و مغزش برود جمع گشته انزبان جلد و جوش حلقه گردند او چو شمع در میان توزشته آسمانی با پری هر چه هستی جهان ما قربانست را اند حق این آب را در چیه تو مازگو تا قصه در مان ما شود مازگو ان قصه کو شادی فراست گفت تا سید خدا بود ای جهان</p> | <p>آه مظلومش گرفت سوخت زود جان ما از قید محنت و آه پید شاد و خندان از طرب در ذوق و جوش سجده کردندش همه صحرایان بلکه عزرائیل شیران نری دست بردی پوست و بازویت دست آفرین بردست و بر بازو کس تو بازگو تا مرهم جا نماند روح ما را قوت و دل را جان فرست در نه خرگوشه چه باشد در جهان</p> |
|---|---|

تو نم بخشید و دل را نور داد

نور دل مردست و بار را زور داد

پند دادن خرگوش نجاران که از مردن خصم شاد میشوند

| | |
|--|---|
| <p>از بر حق رسد تفصیل جمله فضل او ست و ایند ^{فصلیت} یچنین حق بدور و نوبت این تا سید را چون نبوت میدهند این دولت پن یکک نوبتی شادی مکن آنکه ملکش برتر از نوبت ^{بسیار} مند</p> | <p>باز هم از حق رسد تبدیل سجده اش از جان دل آید ^{نقصیت} هین منه نماید اهل ظن و دید را از چهره پشیمان و اثر سببست ای تو بته نوبت ازادی مکن برتر از هفت انجمن نوبت ^{چونانی} مند</p> |
|--|---|

तजअनीतिकलुकाजनजाही
 श्रीवागहिनिहकालगिरावा
 जम्बुकशशभृगवयभृगाला
 प्रेमप्रफुल्लितगईउदासी
 तनधरदेवकिधोपगधारेउ
 भहोभहहिहमआज्ञाकारी
 तुमोहिहाथखेतविधिरावा
 किहविधहनेउबुष्टदुखदाई
 कहहुकपालुकथासुखकारी
 शशकहनाथरूपाअधिकार्ई
 श्वर

दुखितपुकारपजारेउतुही
 दीननदुखदलदेवबचावा
 सवहिनिमानसनेहविशाला
 करतप्रणामसवहिवनबासी
 रुचिररूपधरिकष्टनिवारेउ
 बदैसदाबलशक्तिनुमारी
 धन्यसेजितनफलजिनचाखा
 कहहुसुमंत्रभवरासुखदाई
 हृदयहर्षदायकभयहारी
 शशशकसिंहहिगईमिलाही

मकृतिपारमभुदीनममप्रणामकाशबदाई
 पाइपराक्रमप्रचुरवलपष्टप्रगल्भहिढाई
 खरहाकामुगगगाकोसीखदेनाकिबीकोपाप्रानन्दितमतहो

रजहिमेरुकरकुशानिधाना
 भहोअमितमहिमाप्रभुकेरी
 चपलचक्रलखिचिंतालावें
 चक्रविशसबजगतधुमाई
 लोलजगतपरकहाइतरावें
 आत्मानन्दचलअनुरागी

सकहिमेरुकरधूरसगाना
 तनमनअर्चकारिवचनेरी
 मुनिजनविमलविरतिउपजावें
 किहबलयहप्रहमितप्रधिकार्ई
 दृश्यपदारथधिरनरहावे
 असलअमरपदेकीतिहिभागी

برتر از نوبت ملوک باقی اند
 ترک این شراب از بگویی یکدور دور
 یکدور و زکجه که دنیا ساعت است
 معنی ترک راحت گوش کن
 برسگان بگذار این مردار را
 اے شهبان کشتیم با خصم بیرون
 کشتن این کار عقل و هوش نیست
 دوزخ است این نفس دوزخ از دهاست

۱۵۰
 اینها جملہ و طایفه باطلان است

دود دایم در چهار اساقی اند
 ترک کنی اندر شراب ^{عادت الهی} غلبه پوتر
 هر که ترکش کرد اندر راحت است
 بعد از آن جام بقادر نوش کن
 خرد بشکن شیشه بندار را
 ماند ز خصمیت سر در آمدن دل
 شیر باطن سخنه تر گوش نیست
 گو بدریا با نگر دد کم و کاست

هفت دریا را در استاده هنوز
 گم نگر و دسوزش این حلق سوز

سنگها و کافران سنگ دل
 هم نگر و دساکن از چندین غذا
 سیر گشتی شیر گوید نه هنوز
 علایق را لقمه کرد و در کشید
 چون که جزو دوزخ است این نفس
 حق قدم بر دس نه انداز لا مکان
 این قدم حق را بود کور کشد
 در مکان نه نیست آلا تیر راست
 راست شو چون تیر و وارد از مکان

اندراست اندر و خوار و خجل
 تاز حق آید مرا و را این ندا
 اینت آتش اینت تابش اینت سوز
 معده اش نعره زنان اهل من مزید
 طمع کل وار و همیشه خبر و با
 انگه او ساکن شود از کن و کان
 غیر حق خود که کمان او کشد
 این کمان را و از گون کثر تیر است
 از کمان هر راست بجد بیگمان

प्रेमपियुषजेमनरहही
^{अमृत}

मोहभलिनमदजोविसाओ

क्षारिकसुखदसंसृतसुखसेई

त्यागहिअमृतत्वष्टुतेगावे
^{आप्तपद}

जगतकुरापकुक्करसंसारी
^{सुरदा}

हंतहनेउजिहअहितहिराही
^{हां}

रहतवहिमुखबुद्धिसयानी

कामहिरौमदनककहावे

धन्यसोनरध्रुवधामसिधाही
^{निश्चलगति}

आत्मानंदअभियतवपाओ

नृणासमत्यागतृप्पनरहोई

निश्च्रेयसपदत्यागदिवावे
^{मोक्ष}

ताहित्यागिपुनिहोवसुखारी

शत्रुशिरोमारीअंतरमाही

सोकरिसकहिनतिहकरहानी

जातुज्वलनजड़जाहिनपावे
^{कभी अविन}

शोषेअरौवअगमशतअभिमानीअधराश
^{समुद्र}

अमितलोकभक्षणाकरैतदपिनकामविनाश

महनमहीधरकोटफजारे

तबहुसुधितनितनकरहार्द

तड़ितकोटसमअनलप्रचंडा
^{बिजली}

गिरनग्रासकरबहुविधिगर्जे

कामहिहोइनर्ककशभ्राता

समसंतोषसोताहिसिरावे

कामधनुषआतमशरजासू

अग्रावारासुसरासनप्रेरे
^{सींचा}

हेअवक्रशरइधनुमाही
^{शीधा}

दुर्जनअगारितखातनहारे

धृष्टबुधुसितरहतसदाई
^{भूषा}

छिनमेंभषेअमितब्रह्मंडा

तीक्ष्णाक्षुधातपुनइबतरजे
^{प्रोगन}

भषिवैलोकहिजोनअघाता

सरससुधासमताहिवुजावे

विनईशरखेचेकोतासू

कुटिलवक्रशरइधनुकेरे
^{दृढ़}

सरलहोनखोड़ेधनुताही

| | |
|---|---|
| <p>روئے آوردیم به پیکار درون با منی اندر جبار اکبریم تا بسوزن بر کسم این کوه قاف توجیع طالب نفس اماره</p> | <p>چونکه واگشتم ز پیکار برون قدر جبار من جبار الاصفی توئے خواهم ز حق دریا شگاف چون از لب</p> |
| <p>سپهر شیرین دان که صفایافته شیرانت آنکه خود را بشکند</p> | |
| <p>در بیان پستی و شکستگی بزرگان</p> | |
| <p>در مدینه از سیاهان لغول تا من اسب وخت را بجا کشم مرعرا قصر جان بس روشنی است همچو درویشان مراور اکازه است چونکه در چشم دولت رست است و زنگهان دیدار قصرش چشم دار از دود بین حضرت دایوان پاک هر کجا آید و کرد و جب الله بود که بدانی شمع جب الله را همچو سر اندر میان اختران اوز هر ذره به بیند آفتاب هیچ بینی در جباران انصاف ده عیب جز آن گشت نفس شوم نیت</p> | <p>بر عزم اندر قصر یک رسول گفت کو قصر خلیفه چشم قوم گفتندش که اورا قصر نیست گر چه از میری و را اوازده است اے برادر چون به بینی قصر او چشم دل از موی و علت پاک او هر که هست از هو سها جان پاک چون محمد پاک شد زین نار و دود چون رفیق و سوسه بدخواه را حق پدیدست از میان دیگران هر که اباشد زین فستج باب دوسر انگشت بر و چشم نه گر به بینی این جهان معدوم نیت</p> |

समरसपत्नसहजहमजीते
^{बेरी}वीरनहोइजोजगतेलरई
 हेप्रभुबिनतबकृपाअघाई

अंतरअहितरहेविपरीते
^{बेरी}शूरवहीजोमनबशकरई
^{उलटे}पापपहाइसकेकोढ़ाई

समरसहसदलरिपुहने सोनहिं सिंहकहाइ
 सोम सोईनरसिंहहैजिहकरअहमनसाइ
^{हेपुत्र}महात्मा लोगोंकादीननाहीकर्तब्याथा

अंगुलउमरआत्मवितपाहीं
 कहां प्रासादनृपतिकरभाई
^{महल}लोकनकहेउकोटनहितासू
^{किला}अमीततिहलोकनकरगावा
 तिहकररुचिरजनाप्रयभाई
^{शोभित}विगतदोषलोचनजबहोई
^{मंडप}जिहमनविगतमानमदमोहा
 हरियशविशदजेमनरहाहीं
 मनसंकल्पसहसकीसानी
 प्रभुप्रकाशपूरितसबराहीं
 हृदयजासुहिंसाहठहीना
 अंगुलिदोउलोचनपरआने
^{अंगलीसे आंखिबूंदकरले}नदपिअभावनजगकरहाई

गामुमुक्षरिवन्नांतरसाहीं
^{असार दोषसे दुरित}वाजिवांघठहरेतहाजाई
^{घोड़ा}आत्मिकसुधस्त्रायतनजासू
^{स्थान}परीश्रालिअरषिसरसबनाव
^{फूसकीकुटी}नेत्रदोषनहिपरतलखाई
 मन्दिरतासुविलोकनसोई
 सहजपावसोइसुखसंदोहा
^{समूह}जहांमनजाइसमाधितहाहीं
 भक्ततग्रंथअधमअभिमानी
 उदयइन्दुजिमउड़गनमाहीं
^{चंद्रमा}रुचिररामरूपहिंतिनचीना
 कछुनदीखतिहजीवजहाने
 अंगुलिदोषजानसबकोई

نور چشم انگشت را بردار بین
و انگھانے ہر چہ میخوای بہ بین

لاجرم با دیده و نا دیده اند
ویدانت انگہ دید دوست است
دوست باقی کو نباشد دور بہ
در سماع آورد شد شتاق تر
دیده را بر جستن عمر گذشت
میشد سے پرسان او دیوانہ وار
وز جهان مانند جان باشد بنان
لاجرم جویندہ یا بندہ شود
گفت عمر نک بزمیران شخیل
زیر سایہ خفتہ بین سایہ خدا
مر مر را دید و در لرزہ فتاد
حالتے خوش کرد و جانش نزول
این دو صند را جمع دید اندر جگر
پیش سلطان سبگزیدہ ام
ہیبت این مرد ہوشم را ربود
من ہیبت اندم لرزان جیت بین
ہیبت این مرد صاحب و کنیت
ترسد ازوے جن و انس و فرکہ زید

روے و سہر با جاہا پیچیدہ اند
آدمی دیدست باقی پوست است
چونکہ دید دوست بنود کور بہ
چون رسول زوم این الفاظ تر
رخت را واسپ را ضایع گذشت
بر طر اندر سپے ان مرد کار
کاین چنین مردے بود اندر جان
جست اورا تابش چون بندہ شود
دید اعرابی ز نے اورا خیل
زیر خسرمان ز خلیان او جدا
آمد و انجبا و از دور ایتاد
ہیبتے زان خفتہ آمد بر رسول
نہر و ہیبت ہست جند ہمدگر
گفت با خود من شہان را دیدہ ام
از شہاغم ہیبت و تر سے بنود
بے سلاح این مرد خفتہ بر زمین
ہیبت حق است این از خلق تبت
ہر کہ تر سید از حق و لقبے گزید

سید الشہداء علیہ السلام

श्रीशंकराचार्ये
 प्रेमप्रक्षिप्ततनुमउभय अंगुलिलेहु हटाइ
 हेउन
 जइ जंगमजगमें जिते सबहि परत दर साइ

लिपटेनेन आवरा पटमाही
 नरन होइ जो हाए न धार
 लोचनहीन जो प्रियनहि देखे
 नै आत्मा को न देखे वह अधा है
 सुनि मुगुधु अस प्रभृतवाही
 बाजि बांधि बन बस्तु बिहाई
 चहुं दिश प्रेम विवश सोधावा
 पावन पुरुष प्रगट परिधाना
 कर्म वचन मन तिह कर चरो
 युवति रकति हृदय कलनिहारी
 उमर जगत जन सकल विहाई
 नाम महाना
 द्रुम दिश देखि दूर भया बाढा
 नाक तनेज नास तनमाही
 अस्के तेज को देखि
 आश आस दोउ विलग भुभाऊ
 करत विचार सो हृदय विरोधी
 कजहु आसनहि अम उर आवा
 अस्त्र शस्त्र दुह निकटन कोई
 जग को भय न होइ मन मेरे
 ईश्वर भय भिन के मन माही

लोचन सहित अंधा हू जाही
 दृष्टि वही जो अभीष्ट निहारे
 नित्य न होइ तौ प्रिय किह लेखे
 जो सदैव न रहे तो वह आत्मा नही
 हृदय लालसा प्रति श्रीधकारी
 दर्शन प्रीति न हृदय समाई
 प्रीत भग्न तनु बोध भुलावा
 दृष्टि न आवत प्रारास माना
 पावत मिह परने ह घनेरो
 बाली वचन मुह दू अनुहारी
 होवत तरुतट जहा अमराई
 विपश्यरो म हर्ष रातनु बाढा
 शरीर को ध्यान
 आश विवश मुख मन न समाही
 मन में प्रगट देखि मत भाऊ
 इह देखत किम बोध गमावा
 किह नो धि कम्प काय मर होई
 ईश्वर भय भय प्रारा न मेरे
 दुज देवनर ताहि डराही

| | |
|---|--|
| <p>بعد یک ساعت عمر از خواب جفت گفت پیغمبر سلام انگه کلام مرد دل تر شده را ساکن کنند</p> | <p>اندرین فکر تبحر دست بست کرد خدمت مر عمر را و سلام هر که ترسد مرور ایمن کنند</p> |
| <p>اندل از جارفه رادل شاد کرد خاطر ویرانش را آباد کرد</p> | |
| <p>در صفات پاک حق نعم الریفیق دین مقام ان خلوت آید با عروس وقت خلوت نیست جز شاه عزیز خلوت اندر شاه باشد با عروس نادرست اهل مقام اندر بیان دو سحر با کسی که دلش یاد داد و در مقام قدس اجلالی بدست پیش ازین دیدست بر دوازده فتوح و ز امید و تمهید مشتاق پیش جان او را طالب اسرار یافت مرد چاک بود و حرکت در گهی بسیار تیرا میزد</p> | <p>بعد از آن گفتش سخنهای دقیق حال چون جلوه ست زان زیبا عروس جلوه بیند شاه و غیر شاه نیز جلوه کرده عام و خاصان را عروس هست بسیار اهل حال از عارفان از مناز تهاپ جاننش یاد دادم دزد زبانی که زان خیالی بدست دزد هوای کاندرو می رخ روح هر یک بر دوازده از افاق پیش چون عمر اغیار روز ایا ریافت شیخ کامل بود و طالب مشتقی چند صفا می آید</p> |
| <p>دیدان مرشد که او ایشاد داشت تخم پاک اندر زمین پاک کاشت</p> | |

| | | |
|---|------------------------|---|
| <p>संशय अस्मजसवशमनमनुरागा गिरेउ प्रचाने तलकरत प्रणाम देखिसभात अभयतिह कीन्हा</p> | | <p>इकमुहूर्त पाछे मुनि जागा आशिषदे पूछे उ मुनिनाम लोचन सजल लाय उरलीना</p> |
| <p>संसृत सागर मोह जल तृष्णा तरंग अपार बोहित ज्ञान चढ़ाइ किय सदगुरु नाविक पार</p> | | <p>संसृत सागर मोह जल तृष्णा तरंग अपार बोहित ज्ञान चढ़ाइ किय सदगुरु नाविक पार</p> |
| <p>कहि विष्णु ज्ञान कहानी वरणाहे कांता केरनिकाई ललन रव रूपहि जगत निहारहि जगन दृष्टिगतता सुस्वस्वा जगमें बहु साधू गुन खानी ज्ञान भूमिका सकल सुनाई आत्मा अमर अनादि बतायो अमित शक्ति तिह भाहिर हाई इक इक शक्ति सहज सरवदाई उमर आतिथि अधिकारी जानेउ शिष्याहि मुनि सुदिसरल निहारा</p> | <p>नाने मल्लाह</p> | <p>बर विज्ञान भक्ति ससानी रुम्पति मिलन मोदन दिखाई सकन विलोक विविक्त विहारहि विज नरहस्य जानि तिह भूषा कोइ कोइ अविमुनि वर विज्ञानी आत्म अवस्था प्रमल दिखाई शाश्वत शुद्ध सनातन गायो दुखित अनात सचित फसाई कवि जनमति गतिकहत लजाई सहमत सुधी जानि सनमानेउ चपल तुरंग चतुर असवार</p> |
| <p>निरखि मुमुक्षु मंजु मनि विगत मोह मद मान आलस पाप ताप दुदित मन दीनेउ मंत्र महान</p> | | <p>निरखि मुमुक्षु मंजु मनि विगत मोह मद मान आलस पाप ताप दुदित मन दीनेउ मंत्र महान</p> |

سوال کردن رسول از امیرالمومنین عهده رضی الله عنه

مرکز گفتش کاکه امیرالمومنین
مرغ بے اندازه چون شد در قفس
بر عدم باکان نثار و خیمه و گوش
از نسون او عدم باز و زود
باین بر موجود افشونے جو خواند
گفت در گوش گل و خندانش کرد
گفت با جسم آیت تا جان شداد
باز در گوشش و مد نکتہ خوف
گفت بانه تا که شکر گشت او
تا بگویش ابران گویا چه خواند
تا بگویش خاک حق چه خوانده است
در ترود هر که او شفته است
تا کند محبوبش اندر دو گمان
هم ز حق ترجیح یا بد یک طرف

حافظه یا سواد این

جان ز بالا چون در آمد بر زمین
گفت حق بر جان نسون خواند و قصص
چون نسون خواند بے آید بچوش
خوش محلق میزند سوئے وجود
زود او را در عدم دوا سپه راند
گفت با سنگ و عقیق کانش کرد
گفت با خورشید تا رخشان شد او
در رخ خورشید افتد صد کسوف
گفت با بے و گوهر گشت او
کو بوشک از دید خود بشکر اند
کو مرا قب گشت و خاشاک نهد است
حق بگویش او معما گفته است
ان کنم کان گفت یا خود خدا
زان دو یک بار بر گزیند زان گفت

گر بخوای و ترود و هوش جان
کم فشان این پنبه اندر گوش جان

تا کنی اوراک رمز قاشش را
و حی چه بود گفتن از حسین تسمان

تا کنی فهم ان معما هاشش را
پس محل و حی گرد و گوش و جان

प्रश्नकरना मुमुक्षु का महानामसे

परमसंतविनवोंपुनितोही
 प्रमरजीवकिप्रबंधफसावा
 प्रभुव्यापकसचराचरार्द्र
 ऊर्णानाभिजिमंतनुपसारै
 पुनिप्रभुजवल्यचाहियकीना
 प्ररुणा प्रसूनहरितरुलाये
 प्राराविभूषितकरजङ्कया
 निजप्रकाशकरकरतगुमाना
 तिहप्रसादपुनिमधुरसाला
 तिहप्रसादवारिदजलदाता
 प्रभुप्रसादवसुधागुरारखानी
 चिंताचक्रचित्तजिनकेरे
 दारुणाद्वंददशाकेमाही
 हारगहे एकहिहिनहेतू

राविकाशिका प्रोक्त

रूपाकराक्षवतावहुमोही
 तबमुनीशमृदुवचनसुनावा
 ईक्षारामात्रसृष्टिउपजाई
 तिमप्रभुयहसबजगविस्तारे
 कल्पप्रतिकरतनवीना
 पाहनमांहरतनउपजाये
 सहसकिराससाश्रवउपाया
 ग्रमेराहुतिहदीनसमाना
 वारिशक्तिगतभौतिकवमाला
 उपेजंजुहीजोंकजलबाता
 सदाशांतिसमताउरआनी
 कर्मअनुसारफसेप्रभुप्रेरे
 दुहुदिशिदुविधाधिरनहाही
 ईश्वरविनुकिहोदचितचेतू

प्रतये

शमसंतोषआजयराकरसुनहुवेगतुमनाद
 शिशुकरअद्धाभवरातेकादोनूलप्रसाद
 पुन

गूढरहस्यअनूपलखते
 निगमनिचोरसुनेनमवानी
 वेद

मिरागंधीसुमकनवआवे
 आत्मिकध्वनिप्रभोदकीखानी

| | |
|---|--|
| گوش جان و چشم جان جز این حس است | گوش عقل و گوش حس زین مفلس است |
| لفظ جبرم عشق را بے صبر کرد وانکه عاشق نیست حبس جبر کرد | |
| این معیت با حق است و جبر نیست و ر بودین چه جبر عیا نیست جبر را ایشان شناسند که پسر غیب و اینده بر ایشان گشت فاش اختیار و جبر ایشان دیگر است هست بیرون قطره خور و زبرگ طبع نافت اهو است ان قوم را تو گو کاین نافه بیرون خون بود تو گو کاین سس برون شد مخفّر اختیار و جبر و تو بد خیال | این تجلی مه است و ابر نیست جبران آثاره خود کانه نیست که خدا بکشادشان در دل نظر ذکر ماضی پیش ایشان گشت لاش قطره اندر صدف ها گوهر است در صدف درها سه خور و سترگ از برون خون و ز درون شان شکها خود بود در ناف مشکین چون بود در دل اکثر چون گشت است زر چون در ایشان رفت شد نور جلال |
| نان چو در سفره است ان باشد جاو در تن مردم شو و او روح شاد قوت جانست این اے دست خوان تا چه باشد قوت ان جان جان | |
| نت قوت تن و لیکن در نگر وشت پاره آدھی از زور جان | تا که قوت جان چه باشد اے پسر مے شگافد کوه را با بحر و کان |

| | |
|---|---|
| आत्मदृष्टिउद्बोध करई <small>ज्ञान</small> | इननयनननहिंपरतलखाई |
| आपहि परवशजानि प्रेमी विरतिबढ़ावहीं <small>ज्ञान</small> | कामी कामभुलानि विवश आप को जानकर |
| आत्मसमर्पणविवशनकरई ईशवशात अहं पदजाई ईशप्रधाररहै नर सोई ते त्रिकाल दर्शी हूँ जाहीं बलनिरबलता की परछाही न्यून अधिक जलविंदु समाना कृष्णसार मृगनाभिसमोई तिहुपुन शशिगत कहत न आवे लोह करालन कहि सक कोई स्वबश विवश सब तुमरे हि भाये | कैर प्रकाशन प्रावृत धरई कामवशात वदैं कुटिलाई देवदृष्टि जिन की दृढ होई सब जगजिम कैर वकरमाही होइ असाधारणति न माहीं शुक्ति माहि मुक्ता हल नाना मलिन रुधिर मृगमदसम होई मृगनाभी कछु दिवसर हावे पारस परस कलक जब होई भगल मय मुनिमान सपाये |
| जगत माहि प्रभु जड़चे भोग अन्न और तोय जंगम जहरानल सो मिल जीवन दाता सोय पुरुष शक्ति करि पिंड मिल जो होइ प्राण समान प्रबल पराक्रम को कहै जो प्राणानकर प्राण | जीव आत्मन के संगी सेज अन्न शक्तिको पाता है फिर परमात्मा कमिलन की शक्ति कोन कहै |
| शारीरिक बल अन्न बढ़ावै बुधिबल विपुल तुच्छतन धारी | सद्गुण आत्मिक शक्ति लाये नारि बायु गिर बश कर डारी |

اگر کشاید دل سیرایان را ز
 و ز زبان گوید ز اسرار نهان
 که حق و کرد ما هر دو بسین
 گم نباشد فعل حق اندر میان
 خلق حق افعال ما را موجب است
 لیک هست ان فعل ما مختار ما
 تملق یا حرف بیند یا غرض
 اگر بمعنی رفت شد غافل ز حرف
 ان زمان که پیش بینی ان زمان
 چون محیط حرف و معنی نیست جهان
 حق محیط جمله آمد ای پسر
 گفت ای زو جان ما را است کرد

۱۰۰
۱۰۱
۱۰۲
۱۰۳
۱۰۴
۱۰۵
۱۰۶
۱۰۷
۱۰۸
۱۰۹
۱۱۰
۱۱۱
۱۱۲
۱۱۳
۱۱۴
۱۱۵
۱۱۶
۱۱۷
۱۱۸
۱۱۹
۱۲۰
۱۲۱
۱۲۲
۱۲۳
۱۲۴
۱۲۵
۱۲۶
۱۲۷
۱۲۸
۱۲۹
۱۳۰
۱۳۱
۱۳۲
۱۳۳
۱۳۴
۱۳۵
۱۳۶
۱۳۷
۱۳۸
۱۳۹
۱۴۰
۱۴۱
۱۴۲
۱۴۳
۱۴۴
۱۴۵
۱۴۶
۱۴۷
۱۴۸
۱۴۹
۱۵۰
۱۵۱
۱۵۲
۱۵۳
۱۵۴
۱۵۵
۱۵۶
۱۵۷
۱۵۸
۱۵۹
۱۶۰
۱۶۱
۱۶۲
۱۶۳
۱۶۴
۱۶۵
۱۶۶
۱۶۷
۱۶۸
۱۶۹
۱۷۰
۱۷۱
۱۷۲
۱۷۳
۱۷۴
۱۷۵
۱۷۶
۱۷۷
۱۷۸
۱۷۹
۱۸۰
۱۸۱
۱۸۲
۱۸۳
۱۸۴
۱۸۵
۱۸۶
۱۸۷
۱۸۸
۱۸۹
۱۹۰
۱۹۱
۱۹۲
۱۹۳
۱۹۴
۱۹۵
۱۹۶
۱۹۷
۱۹۸
۱۹۹
۲۰۰
۲۰۱
۲۰۲
۲۰۳
۲۰۴
۲۰۵
۲۰۶
۲۰۷
۲۰۸
۲۰۹
۲۱۰
۲۱۱
۲۱۲
۲۱۳
۲۱۴
۲۱۵
۲۱۶
۲۱۷
۲۱۸
۲۱۹
۲۲۰
۲۲۱
۲۲۲
۲۲۳
۲۲۴
۲۲۵
۲۲۶
۲۲۷
۲۲۸
۲۲۹
۲۳۰
۲۳۱
۲۳۲
۲۳۳
۲۳۴
۲۳۵
۲۳۶
۲۳۷
۲۳۸
۲۳۹
۲۴۰
۲۴۱
۲۴۲
۲۴۳
۲۴۴
۲۴۵
۲۴۶
۲۴۷
۲۴۸
۲۴۹
۲۵۰
۲۵۱
۲۵۲
۲۵۳
۲۵۴
۲۵۵
۲۵۶
۲۵۷
۲۵۸
۲۵۹
۲۶۰
۲۶۱
۲۶۲
۲۶۳
۲۶۴
۲۶۵
۲۶۶
۲۶۷
۲۶۸
۲۶۹
۲۷۰
۲۷۱
۲۷۲
۲۷۳
۲۷۴
۲۷۵
۲۷۶
۲۷۷
۲۷۸
۲۷۹
۲۸۰
۲۸۱
۲۸۲
۲۸۳
۲۸۴
۲۸۵
۲۸۶
۲۸۷
۲۸۸
۲۸۹
۲۹۰
۲۹۱
۲۹۲
۲۹۳
۲۹۴
۲۹۵
۲۹۶
۲۹۷
۲۹۸
۲۹۹
۳۰۰
۳۰۱
۳۰۲
۳۰۳
۳۰۴
۳۰۵
۳۰۶
۳۰۷
۳۰۸
۳۰۹
۳۱۰
۳۱۱
۳۱۲
۳۱۳
۳۱۴
۳۱۵
۳۱۶
۳۱۷
۳۱۸
۳۱۹
۳۲۰
۳۲۱
۳۲۲
۳۲۳
۳۲۴
۳۲۵
۳۲۶
۳۲۷
۳۲۸
۳۲۹
۳۳۰
۳۳۱
۳۳۲
۳۳۳
۳۳۴
۳۳۵
۳۳۶
۳۳۷
۳۳۸
۳۳۹
۳۴۰
۳۴۱
۳۴۲
۳۴۳
۳۴۴
۳۴۵
۳۴۶
۳۴۷
۳۴۸
۳۴۹
۳۵۰
۳۵۱
۳۵۲
۳۵۳
۳۵۴
۳۵۵
۳۵۶
۳۵۷
۳۵۸
۳۵۹
۳۶۰
۳۶۱
۳۶۲
۳۶۳
۳۶۴
۳۶۵
۳۶۶
۳۶۷
۳۶۸
۳۶۹
۳۷۰
۳۷۱
۳۷۲
۳۷۳
۳۷۴
۳۷۵
۳۷۶
۳۷۷
۳۷۸
۳۷۹
۳۸۰
۳۸۱
۳۸۲
۳۸۳
۳۸۴
۳۸۵
۳۸۶
۳۸۷
۳۸۸
۳۸۹
۳۹۰
۳۹۱
۳۹۲
۳۹۳
۳۹۴
۳۹۵
۳۹۶
۳۹۷
۳۹۸
۳۹۹
۴۰۰
۴۰۱
۴۰۲
۴۰۳
۴۰۴
۴۰۵
۴۰۶
۴۰۷
۴۰۸
۴۰۹
۴۱۰
۴۱۱
۴۱۲
۴۱۳
۴۱۴
۴۱۵
۴۱۶
۴۱۷
۴۱۸
۴۱۹
۴۲۰
۴۲۱
۴۲۲
۴۲۳
۴۲۴
۴۲۵
۴۲۶
۴۲۷
۴۲۸
۴۲۹
۴۳۰
۴۳۱
۴۳۲
۴۳۳
۴۳۴
۴۳۵
۴۳۶
۴۳۷
۴۳۸
۴۳۹
۴۴۰
۴۴۱
۴۴۲
۴۴۳
۴۴۴
۴۴۵
۴۴۶
۴۴۷
۴۴۸
۴۴۹
۴۵۰
۴۵۱
۴۵۲
۴۵۳
۴۵۴
۴۵۵
۴۵۶
۴۵۷
۴۵۸
۴۵۹
۴۶۰
۴۶۱
۴۶۲
۴۶۳
۴۶۴
۴۶۵
۴۶۶
۴۶۷
۴۶۸
۴۶۹
۴۷۰
۴۷۱
۴۷۲
۴۷۳
۴۷۴
۴۷۵
۴۷۶
۴۷۷
۴۷۸
۴۷۹
۴۸۰
۴۸۱
۴۸۲
۴۸۳
۴۸۴
۴۸۵
۴۸۶
۴۸۷
۴۸۸
۴۸۹
۴۹۰
۴۹۱
۴۹۲
۴۹۳
۴۹۴
۴۹۵
۴۹۶
۴۹۷
۴۹۸
۴۹۹
۵۰۰
۵۰۱
۵۰۲
۵۰۳
۵۰۴
۵۰۵
۵۰۶
۵۰۷
۵۰۸
۵۰۹
۵۱۰
۵۱۱
۵۱۲
۵۱۳
۵۱۴
۵۱۵
۵۱۶
۵۱۷
۵۱۸
۵۱۹
۵۲۰
۵۲۱
۵۲۲
۵۲۳
۵۲۴
۵۲۵
۵۲۶
۵۲۷
۵۲۸
۵۲۹
۵۳۰
۵۳۱
۵۳۲
۵۳۳
۵۳۴
۵۳۵
۵۳۶
۵۳۷
۵۳۸
۵۳۹
۵۴۰
۵۴۱
۵۴۲
۵۴۳
۵۴۴
۵۴۵
۵۴۶
۵۴۷
۵۴۸
۵۴۹
۵۵۰
۵۵۱
۵۵۲
۵۵۳
۵۵۴
۵۵۵
۵۵۶
۵۵۷
۵۵۸
۵۵۹
۵۶۰
۵۶۱
۵۶۲
۵۶۳
۵۶۴
۵۶۵
۵۶۶
۵۶۷
۵۶۸
۵۶۹
۵۷۰
۵۷۱
۵۷۲
۵۷۳
۵۷۴
۵۷۵
۵۷۶
۵۷۷
۵۷۸
۵۷۹
۵۸۰
۵۸۱
۵۸۲
۵۸۳
۵۸۴
۵۸۵
۵۸۶
۵۸۷
۵۸۸
۵۸۹
۵۹۰
۵۹۱
۵۹۲
۵۹۳
۵۹۴
۵۹۵
۵۹۶
۵۹۷
۵۹۸
۵۹۹
۶۰۰
۶۰۱
۶۰۲
۶۰۳
۶۰۴
۶۰۵
۶۰۶
۶۰۷
۶۰۸
۶۰۹
۶۱۰
۶۱۱

جان لبوئے عرش سازد تر کتاز
آتش افروزد لبوزد این جهان
کرد مار است و آن پیداست این
پس بگو کس راجرا کردی چنان
فعل با آواز خست از دست
زوجز آگه نور ما گه نار ما
کے شود یکدم محیط دو عرض
پیش و پس یکدم نہ بنید هیچ طرف
تو پس خود کے بہتی این بدان
چون بود جان خالق این ہر دوان
و اندازد کارشیش از کار دیگر
ماد کو ایک کام آدیش سے روک نہیں سکتا
چون نڈا نڈا نگہ را خود مست کرد

چھپ چھپاکیا گیا وہ ۱۵۵ اسکونہیں جانتا

طبیعت از هر که لطیفتر

یار را خوش کن صر سجان و مبین

لوہوں کے لئے ہے
جیسی حالت اچھے

مست کورزان بود از ارغواش
 برود جیشش آفریده حق شناس
 زان پیشانی که لازما نیدیش
 نرغشش را کے پیشانی دیدہ
 بخت عقل است این جہ عقل از دیہ
 عقل جن ایقین کے لئے مانی ہے

و انکه دست راست را اوله زانی ز جاش
نیکساز توان کرد این با آن قیاس
چون ایشان نیست در دگر قش
بر چنین پیریه چه بر شپیه
تا حدیقه نرسد پیر و انجمنه اگر

© 2000 The McGraw-Hill Companies

अमलशालपरजोचितलोवे
 गूढरहस्यरसनयदिभावे
 जिह्वा
 प्रभप्रतापसुप्रगतजगमाहीं
 करनबमाहिदसयदिनाहीं
 कुशल
 करपदनयनबुद्धिहरदीने
 हमस्वतंत्रमदसदेकेमाही
 सनअसन
 शब्दसुनेवाअर्थविचारे
 अर्थमाहिगाशब्दमुलाना
 पुरुषप्रतीकापूर्वदिशपेखे
 प्रत्यक्षानबशजीवविचारा
 सर्वधारसर्वगतस्वामी
 कहाछिपेअनुपमकारतारै

लोकांतरलवमाहिलखावे
 जगतजालज्वरजनकरनाशे
 महादीष्टहीजादु
 हमहुस्वच्छंदबिषयो कछुनाही
 वृथादोषकिमदीजियताही
 सुखसाधनदेसमरथकीने
 नर्कस्वर्गजिहबशहमजाही
 युगपतज्ञाननमनविस्तारे
 एकसाथ
 सकृदुभयदिशहोउनज्ञाना
 एकदम दोना
 पृष्ठमाहिसोकिहविधंदेरेवे
 करनसंकैसंभवसंहारा
 उत्पन्न प्रलेय
 शुचिसर्वज्ञप्रशाकअकामी
 जोजगसृजपालेसंहारै

शम्भुशक्तिमतशुद्धिशुचिशमनशोकसंताप
 शोकनोशोक
 शुभगतिअधिकारीसोई जोनिर्मद निष्पाप
 निरभिमान

कंपेकंपवायफरइककर
 हात
 कंपनदशादुहुनसमहोई
 ब्रीडाबहुतएकमनमाहीं
 लज्जा
 रोगीअबमानितनहिहोई
 लज्जित
 तहांकिंतुकाकुतूहलकारी
 मंडी

एककपायेजानिबूझकर
 भूरिभेदभाखेसबकोई
 एकरोगबशलज्जानाहीं
 दीनहिंदोषदेयनहिंकोई
 कुंदितबाहुय बुद्धिबिचारी

ان دگر باشت که بحث جان بود
 بادۀ جان را قوامے دیگر است
 بحث جانے یا عجب یا بوالعجب
 لازم و ملزوم و ثانی مقتفی
 از عصا و از عصا کش فارغ است
 و در بسم اتم ان ایوان دوست
 در به بیداری به دوستان نیم
 و ز نخت نیم اختران برق و نیم
 در بصلح و عذر عکس مهر دوست

بحث عقلی گردد و مر جان شوند
 بحث جان اندر مقام دیگر است
 بحث عقل و حس اثر دان یا سبب
 ضرور جان آمد نماند است
 ندانکه میناے که نوزش باغ است
 اگر سبیل ایمم ان زندان اوست
 در بخت و اب ایممستان و نیم
 در بگریم ابر پر زرق و نیم
 در بخت و جنگ عکس قهر است

ما که ایم اندر جهان پیچ پیچ

چون الف او خود چار پیچ پیچ

اندرین ره مرد مغرورے شوی
 دل ازین دنیاے فانی بر کنی
 روشنی در ویش آمد بدید
 گفت فارغ از خطا و از صواب
 بهر حکمت کرد در بر سرش رجوع
 حبس ان صافی درین جلے کرد
 جان باقی بسته ابدان شده
 معنی را بند هر فیه می کنی

چون الف اگر تو مجرورے شوی
 چندی کن تا ترک غیر حق کنی
 از هر چون ان رسول این را شنید
 محو شد پیش سوال هم جواب
 اصل را دریافت بگذشت از فروغ
 با هر گفت ان چه حکمت بود و سر
 اب صافی در نگله پنهان شده
 گفت تو به شکر شکر می کنی

१- बलि विवेकमात्रा १३५५ ता. ११/११/१९५५

پس چرا در کار کل اری تو دوست
 نه جدال و ترش و گمردن بود
 گوهر و سنگ گنجین شوارشگر
 چون فلانکست و اندر ضبطیت
 نے رسالت یادماندش نے پیام

تو کار کل اری تو دوست
 نه جدال و ترش و گمردن بود
 گوهر و سنگ گنجین شوارشگر
 چون فلانکست و اندر ضبطیت
 نے رسالت یادماندش نے پیام

تو که حسرتی کار تو با فایده است
 شکر یزدان طوق هر گردن بود
 سر که را اگر راه یا بدر جگر
 معنی اندر شعر خیر با خط نیست
 آن رسول از خود بشد زین یکد و جام

واله اندر قدرت الله شد

ان رسول اینجار سید و شاه شد

دانه چون آمد بدید بجز رعنه گشت
 ذات ظلمانی او انوار گشت
 گشت بینائی شد اسجادید بان
 با وجود زنده پیوسته شد
 مرده گشت و زندگی از وی بگشت
 بار و ان انبیا آمیختی
 ماهیان بحر پاک کبریا
 انبیا و اولیاء دیده گیر
 مرغ جانت تنگ آید در قفس
 می بخورید رستن از نادانی است
 انبیا در سیر شایسته اند
 که ره رستن ترا نیست این

دانه چون آمد بدید بجز رعنه گشت
 ذات ظلمانی او انوار گشت
 گشت بینائی شد اسجادید بان
 با وجود زنده پیوسته شد
 مرده گشت و زندگی از وی بگشت
 بار و ان انبیا آمیختی
 ماهیان بحر پاک کبریا
 انبیا و اولیاء دیده گیر
 مرغ جانت تنگ آید در قفس
 می بخورید رستن از نادانی است
 انبیا در سیر شایسته اند
 که ره رستن ترا نیست این

سیل چون آمد بدید بجز رعنه گشت
 موم و بهیم چون فدا شد
 سنگ سرسبز چون که شد در دیدگان
 اے خنک ان مرده که خورد رسته شد
 دایه ان زنده که با مرده نشست
 چون تو در سر آن حق بگریختی
 هست قران حال اے انبیا
 در بخوانی و نه قران پذیر
 در پذیرائی چه بر خوانی قصص
 مرغ کواند در قفس زندانی است
 روحی که در قفس پارسه است
 از برون آوازشان از برون

| | |
|---|---|
| <p> ^{अज्ञानी} भंदहुकरतलाभचित्तधारे तासु भक्तिहितहोइहमारो बिपुलबादबलब्रह्मनजाने ललितरहस्यलेखनहिअवे सुनिमुमुक्षुसुधअपनभुलावा </p> | <p> ^{इश्वर} किमसर्वस करेअविचारे तर्कत्यागतिहशरणपधारे मायिनमिलमायामतिअने ^{मायापति} नहिसमुद्रघटमाहिसमावे प्राणाअपानगतहिविसरावा </p> |
| <p> भानिमग्ननिजसुखनिपटनिर्मदअरुनिर्वाद ^{आत्मसुख} नर्तनफललाहिनिमिषजनुनरपतिभयेउनिषाद </p> | <p> ^{राजा} ^{नीचजन} धान्यभूमिगतद्रुमगति सोई ^{बीज} ^{वृक्ष} तजितमरुएज्वलनहुइभासे ^{अग्नि} जिमअंजन दृगदोषनसाई </p> |
| <p> सरितसिंधुमिलसागरहोई ^{अग्नि} पावक परसतकाष्टप्रकासे पाइसुसं । सचहिसुखदाई धन्यसोनरजगमेंबडुभागी धुकजोसकामिनसंगतभोयो सुलभनसतसंगतिजगमाहीं सदाचारजहांविदितअविनके जोनधारनामेंमनराता अरुजोमननमाहींमनलागा फसिमलीनतनजिहनगलानी भूरिभागभवबंधनद्वोरी कहतसुकृत सज्जनसतभाऊ </p> | <p> ^{जीवित} ^{शबहुइजन्म} ^{बिगोयो} जिनजरधिमुनिमिलइच्छात्यागी रमराकरियसदग्रंथनपाही भीनमनोहर मोक्षसरितके दर्शनमात्रतासुफलप्राता तनममतातजिहोइबिरागा चेहनमुक्तिइहसमकहाहानी भयेसंतसंभ्रमघटफोरी इहसमहोइ नआनउपाऊ </p> |

| | |
|---|--|
| <p>ما بدین رستم زمین تنگین قفص خویش را رنجور ساز و زار زار</p> | <p>جز که چاره نیست این ره زمین قفص تا ترا بیرون کنت از آشتیاد</p> |
| <p>کاشته از حلق بست محکم است دره این از بنداهن کے کم است</p> | |
| <p>حکایت بر سبیل تمثیل</p> | |
| <p>دود باز رگان مرا و را طوطی و نکه باز رگان سفر را ساز کرد هر غلام و هر کنیزک را از جود هر یک از وی مرادے خواست کرد نفت طوطی را چه خواهی از میان فتش ان طوطی که اینجا طوطیان فلان طوطی که مشتاق شماست رشتا کرد و او سلام و داد خواست نفت میثاید که من در اشتیاق ین روا باشد که من در بند سخت چنین باشد و فاکے دوستان د آید اے جهان زمین مرغزار د آید از محبت هائے ما دیوار ان یار را میمون بود</p> | <p>در قفص محبوبس ز بیاطوطی سوئے هندوستان شدن آغاز کرد گفت هر تو چه آرم گوئے زود جمله را وعده دهران نیک مرد کارست از خطه هندوستان چون به بینی کن ز حال من بیان از قضاے آسمان در حبس است از شما چاره ره وارشاد خواست جاند هم اینجا بمیرم از نسراق گه شام بر سبز گاهے بروخت من درین حبس شمار در بوستان یک صوبه در میان مرغزار حق مجلس هائے صحبت هائے ما خاصه کان لیلے وین مجنون بود</p> |

इहविधिहमबंधनसेछूटे
दुर्गतिदीनदुखीबनजाओ

अन्यविषमभवभीरनदूटे
मानप्रतिष्ठा महतमिटाओ

बिबिधबड़ाईविश्वकीइहसमबंधनआन
विष्टासमपरिहरहुजोचाहोपदनिर्बान
बिनामरेसंसारसेछूटनहींसक्ता

रह्यौवैश्यइकबहुधनधारी
सुदिनसकलसजिसाजसयाना
कहेउकलत्रभृत्यसुतपाही
सबनकहा^{जो}जिहमनमाना
शुकसनकहाकहौकहाचहहू
शुककहतहांवहुममसहचारी
जिमचकोरशशितुमतनचाही
अमिबादनकहैबिबिधसाराही
नुमचरगानचितचाहधनेरी
कहेउकिहमइहबंधफसाये
प्रीतिप्रतीतिपरेखाभारी
कवहुकृपाकिंकरपरकरहू
पुरबहुपूरा^{दास}प्रीतिपुरानी
मेरेमनाहिसुख्यअसदेकू

पालेउकीरएकसुखकारी
व्यापारहिजबकीनपयाना
कहोजोबस्तुजाहिजोचाही
सबकहंपरितोषेउविधिनाना
मतिअनुरूपनुमहुकछुकहहू
तिनसोंबर्गोउव्यथाहमारी
विधिबशफसेउसोपिंजरमाही
मुक्तिउपाइबतावहुनाही
विरहबियोगविपत्तहिघेरी
स्वतरुस्वतंत्रसोतुममनभाये
हमपिंजरनुमविपिनबिहारी
निश्चयनिजजननामसुमिरहू
जिनविसरावहुनिजजनजानी
चिम्मातहोहुननुमबिनएकू

اے حریفان بابت موزون خود
من تسبیح اے خورم بر خون خود

گر ہے خواہی کہ میدہی داد من
چونکہ خوردمی جبر عمر خاک دین
وعدہ ہائے ان لب چون قنبر کو
چون تو یا بد بد کنی پس فرق چیست
با طرب ترا از سماع بانگ چنگ
و انتقام تو ز حبان محبوب تر
یا تم این خود تا کہ سورت چون بود
وز لطافت کس نیا بد غور تو
عالم اگر بیاں شود خندان شود
وز تر جسم جور را کمتر کند
اے عجب من عاشق این ہر دوشہ
چون بنا شد عشق کز دے نیت بد
ہمچو بلبیل زین سبب نالان شوم
تا خور و او چار را با گلستان
جملہ ناخوش شہاز عشق اور خوش

یک قنجر می نوش کن بر باد من
یا بیاد این قنادہ خاک بیز
اے عجب این عہد دان سو گند کو
اگر ^{انتقال} راق بندہ از بندگی سست
این بدی کہ تو کنی در وقت جنگ
اے جفاے تو ز دولت خوب تر
از تو این نارست نورت چون بود
از خلاوت ہا کہ وارد جور تو
فے المثل جور ت اگر عریان شود
نال و ترسم کہ او باور کند
عاشقم بر قسم و بر لطفش بید
عشق من بر مصدر این ہر دوشہ
والعدا ازین خار درستان شوم
این عجب بلبیل کہ بکشاید بان
این نہ بلبیل این نہنگ آتش است

عاشق کل رست و خود کل ست او

दुःखपादुतममुदितमनमगनस्वजनसमुदाय

वाक्ये

हमविचितक्याकुलविरहबंधुवर्गविसराय

अकेले

बंधुजन

निरदयानाहिरुहसुहाही

पियतप्रेमभदतुमरुहही

प्रायसाहितकहाप्रणामभुके

प्रम

जोबिवागविहारीवशचेरे

जोबिवागहमारे

कुनमला मय है

दुःखविषादविकलातामोही

दुस्तुखसमभयमंगलदाता

प्रभुमेरितप्रचंडपविपरहीं

वज्र

मधुरआलौकिकदुखजंआवा

दुःखविनाकोभीतिबढ़ावे

तनकरसुखमनभजनभुलावे

कहरमहरदुखसुखदिवनरुका

स्वामी

दुःखदीनताहमहिमुहाई

दुःखदीनताहमहिमुहाई

दुःखदीनताहमहिमुहाई

दुःखदीनताहमहिमुहाई

दुःखदीनताहमहिमुहाई

प्रीतिरितिफिरचहियनिवाही

हमरेहिनामहीरक्षितनाही

धरती

कहांगूढव्रतगोप्यघनरे

फौदथालुकाहिकरतोहिदेरे

सुखसमानशतनिदरतओही

मरणाभलोजीवनसेभ्राता

मुदमयसुखवर्गानकोकरही

प्रेमीबिनुकोतिहगतिपावा

जानियथारथजनसुखपावे

प्रेमजालदुखहमहिमुहावे

हमआसक्तदुहुनतजितरका

जिहबिनुछिनहूजीवननाहीं

निहबिनुयादेमनविकलाई

प्रेमीधन्यजोदोउसमजाने

अशुभाहुमेमहाष्टिशुभखानी

हिहितनितभक्ततरहाम्रघटसोघटाहरहाइ

श्री

ماشوق خویش است و عشق خویش چه

| | |
|---|--|
| <p>قصه طوطی حسان ز میان لبها کو یک مرغی ضعیف بے گناه چون بنا لہزار و بے رشکر و گلہ ہر دوش صد نامہ صد بیک از خدا ذلت او بہ ز طاعت ہائے خلق ہر دے اور ایک کے معراج خاص صورتش بر خاک و جہاں بر لاسکان لا مکا نے نے کہ در قسم آیدت مرد ہا ز رگان پذیرفت این پیام چونکہ در اقصائے ہندوستان رسید مرکب استائید و بس اواز داد طوطے زان طوطیان لرزید و بس شد پشیمان خواجہ از گفت خبر ان مگر خویش است با ان طوطیک</p> | <p>کو کیے کو محرم مرغان بود و اندرون ابوسلیمان بادشاہ افتد اندر مہفت گرو و غلطہ یار بے زو شصت بیک از خدا پیش کفرش جہلہ ایسا ناسے خلق بر سر فرخش ہند صد تاج خاں لا مکا نے فوق و ہم سا رکان ہر دے دروے خیائے زایدت کو رسا ند سوے جنس اسلام در بیابان طوطے چندے بدید ان سلام دان امانت باز داد اوققاد و زود بگشتمش نفس گفت رفتہم در ہذا کجا نور این مگر دو جسم بود و روح یک</p> |
|---|--|

این چہ اکروم چہ اودام پیام
سو ختم بیچارہ را زین گفت خام

| | |
|---|--|
| <p>این زبان چون سنگ قہم این ش است سنگ و این را ہرن بہ ہم گزاف</p> | <p>و انچہ بجد از زبان چون آتش است کہ ز روے نقل و گہ از روے لاف</p> |
|---|--|

प्रापनप्रपनेप्रेममंआपरहालपटाइ

आत्मरूपशुककरयहगाथा

बंधविवशव्याकुलवलहीना

निस्पृहनहतहर्षअरुशोका

तिहतनशतकरुणाकरद्वेरे

प्रेमनिमग्ननिदानअयाना

छिनछिनभाहिप्रकाशअनेका

धरिआदेहमनध्वनिध्रुवमाहो

सकृतनसज्जनमनतहांजाही

शुकसंदेशकरअंगीकारा

पहुंचप्रदेशसहर्षविशेषी

करहंकारप्रेमरंगभीनी

सुनतप्ररातमजरेउविरहागी

कहिपछिनातमुपराप्रणाम

शुकसगोत्रप्रसगुनिमनभाही

सगा

कहाआतमवितसहजमनाथा

कहांशुभशांतिशिरिवरअसीना

नीदकरतकंपतितिविलोका

एकहुबारगमकहिद्वेरे

तिहकिपावपादिवेदपुराणा

अचलतामुहितशतअभिषेका

मनबुर्धाचिततासुगतिनाहीं

मनसंवेगसोसहजसिराही

क्रियविक्रियहितचलेउजारा

शोभितशुकओरीबनदेखी

तितकहंधनिकधरोहरदीनी

धरिआपोउडूकरासानत्यागी

हनेउहायहमप्रारानिकाम्

प्रेमगंभीरमिरागमनाही

कौरकहावतकठिनकहिकरतकरालकलाप

कंठग्रसेउकरुणारसहिकुशलविमारेउआप

रसनउपलमुखलोहसमाना

पाहनलोहनभोरेहुमारौ

शब्दअनलनिकसैतहंनाना

चुहलदमहितहमनमारौ

زنانکه تار یک است و هر سینه زار
 ظالم ان توئی که چشمان دوختند
 عالمی را یک سخن ویران کنند
 جانها در اصل خود عیبی دم اند
 اگر حجاب از جانها برداشته
 اگر سخن خواهی که گوی چون شکر
 صبر باشد شتهای زیر کان
 هر که صبر آورد بر گردون رود
 صاحب دل را ندانان زیان
 زانکه صحت یافت در بهر زیست
 گفت پیغمبر که ای طالب جری
 گفت احمد که نمی خواهی زلل
 در تو نمودی ست در آتش مرو

در روز دین است عین کلمه

در میان پنبه چون باشد شراره
 زان پنجهای عالمی را سوختند
 رو بهان مرده را شیران کند
 یگزمان زخم اند و دیگر مرهم اند
 گفت هر جانے مسیح آساست
 صبر کن از حرص دان حلوا مخور
 هست حلوا از روی کدو کان
 هر که حلوا خورد داس پس تر رود
 اگر خورد او ز هر ستاقل راعیان
 طالب مسکین بیان تب دست
 مان کن با هیچ مطلوبی مری
 بین مسکن با هیچ مطلوبی جدل
 رفت خواهی اول ابراهیم شو

چون مسباح دے دریائے
 در میفکن خویش از خود راستے

ناقص از زبرد خاکستر شود
 زانکه اندام تلبیس است در پو
 دست او در کارها دست خداست
 چل شد علی که در ناقص شود

کاملے گر خاک گیرد زر شود
 دست ناقص دست شیطانست و پو
 چون قبول حق بود او خرد راست
 چهل آید پیش او آتش شود

۱۵ خلیفگی بر او بود و بخت او

१
 तान्निमिपुनिनूल पसारु
 नोचननेत्र मृदकर भाई
 शब्दहि गढ़गिर ग्रामहि ढावे
 प्रमृत गरल बसत इकठोंई
 उरत अविद्या पटल पुराना
 तुम्हरे उबचन होहि हितकारी
 कठिन तितिसावु धजन प्रानहि
 संयमसाध सिद्ध नर सोई
 सिद्ध सरल चित होहि अदंडा
 भोग बिरुज कहं बलहि बढावे
 भ्राममुमुसुन कहत पुकारी
 गुरुजन मोनहि करिय डिवाई
 पावक नहि प्रह्लाद पजारी

तूल माहि किमरखिये अंगारु
 निधन कीन बह नर समुदाई
 शब्दहि शशको मिह बनावे
 जगामे पज दोउ जिह्वा माही
 स्वयं सबहि नर सिद्ध समाना
 इन्द्रन विषय जो देहु बिसारी
 बाल बुद्धि विषयन सुख मानहि
 विषय प्रयोगाति भारग होई
 चन्द्र मौल जिम गरल प्रचंडा
 सरुज शरीर हि सहजन सावे
 शिखर धिन कर रौरव कारी
 भल न विवाद ब्रह्म वित पाही
 प्रथम भक्ति तिहु प्रसी चत धारी

जब बिबेक बोहिन नहीं बहेन बोध बयार

भव निधि गुरु नाविक बिना किह बिध उतरौ भार

भोग निष्कृत्य जनिह भार
 सदा रहत सकल्प सकामी
 निष्कामी निस्संशानि राशी
 अज्ञानहु संतहि सिखलावे

धर्महु पुरुष सकाम न ताये
 संशय सदन संशय अनुगामी
 प्रज्ञानिष्ट निरुपम सुखाशी
 ज्ञानहु शरीर मान सिखलावे

| | |
|--|---|
| <p>کفر گیرد کمال ملت شود سرخو اهی برد اکنون پالے دار کوشه را حق بفرمود الصنو مدتے شد بود خامش جمله گوش از سخن گویان سخن آموختن خوبش را گنگ گیتی یکند در بگوید چو گوید بے شک لال باشد کئے کند در نطق جوش سوے منطق از ره سمع اند را واطلبوا الاذقان من اسبابها ^{ذوق کو اسباب سے ڈھونڈو} جز کہ نطق خالق بے جمع نیست</p> | <p>هر چه گیرد علی علمت شود ^{جنگل دل بیارید} اے مری کرده پیاده با سوا توجه گوی او زبان بے جنس تو کودک اول چون بر این شیر نوش مدتے میبایدش لب و دوختن ورنه دارد گوش فی فی میکند تا نیاموزد نگوید صدیکے کبر اصلی کش بنو آغاز گوش از آنکه اول سمع باید لطق را اخذوا الابیات من البوایها ^{گورن میں دروازہ نہیں ہرگز کرنا چاہو} نطق کان موقوف راہ سمعیت</p> |
| <p>تاریخ اوستاد و محتاج مثال دین واسکے گیرد جو ویرانہ اشک تر با شد دم توبہ پرست تا بود گریان و نالان و حزین در طلب میباش و ہم در طلب او یوستان از ایر و خورشید است تاز</p> | <p>باقیان ہم نہ حرف ہم در مقال زین سخن گریستی. بیگانه از آنکه آدم زبان عتاب از اشک رست هر گریه آدم آمد بر زمین گر ز پشت آدمی در صلب او ز آتش دل زاب دیدہ نقل ساز</p> |

अहंमित सहित तपहु दुखदाई
हयास्तुष्ट पैदल किम संग
^{घड़िका समार}
तू श्रुति सम बहु ^{जिह्वा} समाना
जन्मत दे ^{मूक} अवाच्य कहु काला
कहु दिन ^{जिह्वा} सम नद मन सुत कीजे
अवरा ^{वच्छा} रहित अर्भक यदि होई
विनु शिक्षा शिशु शुद्ध न भाखे
अवरा शक्ति जिह में नर हाई
मुख्य अवरा शक्ति हि शिव कीना ^{परमात्मा}
द्वार बिना को ^{घर} सदन सिधार
जा सुगिरा नहि श्रुति प्राधीन

भोगहुनिर्मम कहं सुखदाई
मशकत रुकर कहारारांगा
श्रुतिकर विषय शब्द कर जाना
^{वच्छा}
शिशु श्रुति रूप सो होइ विशाला
^{कान}
शिशु सम प्राचे अवरा मृत पीजे
आआ करत मूक कहैं सोई
अर्थ रहित यद्यपि रुचिराखे
मूकहि को सक मुखर बनाई ^{वाचाल}
भाषा भद्र ता सु ^{शुभ} आधीना
कारण रहित कार्य को सारे
सो सर्वज्ञ समर्थ प्रवीराणा ^{परमात्मा}

सर्व जनक जनिता रहित ज्येष्ठ जनन करतार ^{पिता} ^{कारण} ^{प्रारंभ}
निराधार निरुपम निखिल नायक सर्वाधार

तजई प्रवर सब हीत बुधारी
सम भगये उय दिव चन बिलास
निज प्रबुध गाल खिने न जुड़ावे
नरतन कर फल यह जग माहीं
जन्म पाइ जो मन जु कह आवहु
प्रेम सूर्य हग जल जहां नाहीं

शब्द रुशिक्षा के अधिकारी
ब्रति बपु करि या बजन बन बासु ^{जुनि} ^{सुकान्त}
इश्वर को पहित्व रित सिरावे
दीन मलिन तन रहिये सदा ही
प्रियतम प्रभु पद प्रेम बढावहु
मन आराम तहां कुमलाहीं ^{वर्णिना}

تو چه دانی زون آب اسے شیشه دل
 تو چه دانی ذوق آب و بگکان
 اگر تو این ابنان ز ناز خانی کنی
 طفل جان از شیر شیطان باز کن
 تا تو تار یک و ملول و تیسر ^{صفحات}
 لقمه کو نورافنده و دو کمال
 روغن کا بد چسبیده اش ماکشده
 علم و حکمت ز اید از کسب حلال
 چون از لقمه تو حسد بینی و دهم
 لقمه تخم است و برش اندیشه
 ز اید از لقمه حلال اندر دهان

ز آنکه چون خرد شدی تو با بگل
 عاشق نانی تو جو تا دیر گان
 پر ز گوهر یاسه اسبلای کنی
 بعد از آتش با ملک ایشار کن
 و آن که باو یوسفین همیشه ^{و شوق تو هم}
 ان بود آورده اند کسب حلال
 آب خواش چون چسبیده اش ماکشده
 عشق و رقت آید از کسب حلال
 جبل ز غفلت ز اید از او ان تمام
 لقمه بجز و گوهرش اندیشه
 میل خدمت عزم رفتن انجمن

ز اید از لقمه حلال اسے به حضور
 در ول پاک تو و در و یار تو

رو بار زگان تجارت را تمام
 ملاسے را بیاور و از مخان
 نت طوطی از معان بنده کو
 ت سمن خود پیشانم از ان
 چه ای پیام خاس از گزاف
 تا اسے خوا چه یثیمانی از چیت

باز آمد سوت منزل شاد کام
 هر که بیزک از بختشید او نشان
 آنچه گفتی باز دیدی باز گو
 دست خود خایان در نگستان گزین
 بروم از بیدار تشی و از نشانی
 بهیت ان کین خشم و غم را بقتضی ^{بقتضی}

कहा जानहु तुम प्रेम प्रभावा
 कहा जानौ दृगनीर बहाई
 तप करि तीक्ष्णानृणा त्यागहु
 विषय ममान आत्म शिशु घेरो
 जब लग मनन प्रकाश बहाई
 आनहु अन्न परिग्रह त्यागी
 आत्म दीप जो देत बुझाई
 उदर परिग्रह बिनु जो भरई
 जो अपवित्र परिग्रह जाया
 अन्न बीज फल जल विचारु
 पांड पण्डित मग्निय अहारहि
 यज्ञाश्रित

खर सम दल दल माहि फंसावा
 नहिं विरग रहै विषय फसाई
 प्रगत पाल प्रेमहि अनुरागहु
 तिहत जपाव प्रकाश घनेरो
 जानेहु विषय भूतल पटाई
 जो न उजीव ज्योति जब जागी
 होइ न तेल होइ जल भाई
 मनहिं प्रेम द्रवना दृढ करई
 बोद काम क्रोध मद माया
 अन्न उदधि मति विद्रुम चारु
 भक्त लगे परलोक सुधारहि
 प्रेम मति

दास भाव इन्द्रिय दमन होइ अशान शुचि पाय
 हृदय दीप्त मुख द्युति विमल दिव्य दृष्टि हे जाय
 भोजन

जबहि बरिषाक बरिषा ज्यविहाई
 दीन बुलाइ बस्तु मन भाई
 शुक कह कहो हमें कहालाये
 लज्जा प्रत विप्रतिह सम भावे
 कहे उ संदेश कुदिलता कीन्ही
 कह शुक तात ब्रथा पछिताहू

गमने उग्रह लौ द्रव्य अघाई
 पुत्र मित्र अनुजीवन पाई
 विहंस कहहु बलि वचन सुनाये
 कठिन काल गतिक कहत न प्रावे
 मति भ्रम भये उ बुद्धि भई भीनी
 विधि बश होहि हानि अरु लाहू

| | |
|---|--|
| <p>گفت گفتم من شکایت کا تو آن یکے طوطی ز دردت بوسے برد من پشیمان گشتم این گفتن چه بود نکته گمان جست ناگه از زبان و انگرد و از ره ان تیر اسے پسر چون گذشت از سر حبار اگرقت فعل را در غیب اثر از او نیست بے شریک جملہ مخلوق خدا ^{بند ہوئے} ^{است} زید پراشد تیرے سوئے عمرو ^{بلا شرکت} مدتے سائے ہے ز اسد درد</p> | <p>باگر وہ طوطیاں ہمتا سائے تو زہرہ اش بدرید و لرزید و بگرد یکا چون گفتم پشیمانی چہ سود ہچو تیرے دان کہ جست او انکمان بند باید کرد سیلے راز سر گر جہان میران کند نبو شکفت وان مواید پیش بجاک خلق نیست ان مواید ارچہ نیست شان بہا نیست عمرو را بگرفت تیرش ہچو غیر در دہار افریند حق نہ مرد</p> |
|---|--|

زید رائے اندم از مرد از وجل
 در دہائے زاید اینجا تا اجل

| | |
|---|--|
| <p>زان مواید و حج چون مرد او ان وجہا را بدو منسوب دار او لیارا ہست قدرت از الہ صاحب وہ بادشاہ جمہاست بستہ درہائے مواید از سبب فرغ دید آمد عمل بے ہیچ شک مردش چون مرد یک دیدند خرد</p> | <p>زید را از اول وجہ قتال گو گرچہ ہست ان جملہ صنع کردگار تیر جہتہ باز گرداند ز راہ صاحب دل شاہ دہائے شہاست چون پشیمان شد ولی از دست رب پس نباشد مردوم الامر دمک در بزرگی مرد یک کس نہ نبرد</p> |
|---|--|

कहाकहेउहमतोरकलेशा
 करुणाकरइककीरकिशोरा
 निजमुखकहिकहालाभलजाय
 मुखसेबहिरशब्दजबभयेऊ
 प्रविशेकिमनिखंगशरआई
 बढतप्रबाहभयकरभारी
 रचिपरोक्षपुष्कलपरिवारा
 कारुणीककोतुकसबकरही
 सोहनछांडेउविशिरकराला
 तिहकरचिरसोइरेहउअधीरा

शुकसमूहप्रतिसकलसंदेशा
 नजेउप्राणमुनितोरनिहोरा
 करिकुतर्कपुनिकहापछिताये
 धनुतेमनहुशिलीभुखगयेऊ
 रोकहुसरितस्रोतनटजाई
 बोरहिबनजनगजबलधारी
 पुरुषनकेरनतहांअधिकारा
 यदपिलोकहमेशिरधरही
 मोहनग्रसेउजाइजिमव्याला
 ईश्वररचनजनतिहपीरा

विधिवशधातुकघालसरसपदगयेउयमलोक
 याबनमरगाव्यथितरहेउमोहनचिरतिहशोक

ताहितीरलगतिहतनुत्यागा
 करतबयदपितीनकरतारा
 भगवतभक्तभक्तिबलभाई
 प्रवनीप्रवरशासकशरिरके
 भीषणभेषुनभुवनतापके
 तत्त्वदृशीतारकारतनसे
 नेत्रजारकासमलघुजानी

धातुकधोरअयशतिहलागा
 जानिनिमित्तकलंकसोधारा
 काढतकर्मनकीकरुआई
 शमनशोकआषिप्राणभीरुके
 शंभुशरानिप्रविशियचापके
 हररात्रासत्रियतहिनतरासे
 तन्वीतुच्छनतिहयाद्विचानी

من تمام این را بنیاد گفتم از آن
چون فراموشی خلق و یادشان
صد هزاران نیک بدر آن ہی
روز یادش از آن پر میکند
ان همه اندیشه پیشانها
پیشہ فرہنگ تو آید بہ تو
پیشہ زرگر با من گر نہ شد
پیشہ باو خلق ہا ہرچہ جہیز
پیشہ باو خلق ہا از بعد خواب
صورتے کان بر نہاوت غالب

منع می آید ز صاحب مرکز ان
باوے ست اور ارسد فیادشان
میکند ہر شب زوہا شان ہی
ان صدف ہا را پر از در میکند
مے نشا سدا ز ہدایت جا ہنا
تا و را سباب بکشا ید بہ تو
خوے این خوشخو بہ ان منکر نشد
سوئے خصم ایند روز رستخیز
واپس آید ہم کجھم خود شتاب
ہم بر ان تصویر حشرت واجب است
حسرت حالت ہر روز گے او سہم ہتا با انجام کوگا

ہر چہ بینی سوئے اصل خود رود

جس نہ سوئے کل خود را جمع شود

چون شنید ان مرغ کان طوطی چہ کرد
خواہ چہ چون دیدش فدا و چہ چنین
چون بدین رنگ و بدین حالش بدید
گفت اے طوطی خوب خوش چنین
اے دریا مرغ خوش اواز من
اے دریا مرغ کارزان یافتہ
اے زبان تو بس زبانی مرا

ہم ہر زید و فتاد و گشت سرد
بر جمید و زد کلمہ را بر زمین
خواہد بر جست و گریبان بر درید
اے چہ بود ان چرا گشتی چنین
اے دریا ہمد و ہماز من
زور داز وے ان بر تا فتم
چون تو ی گویا چہ گویم من ترا

نہ کہ میں نے کسی مرد کو بڑا بیجا اور بڑا کڑوا کر کہا تھا کہ میں نے

तिह प्रताप जो प्रगट जनावा

उनके प्रताप को जो कोई कहना चाहे

अशुभ रारि शुभ गुण प्रगट वें

निज जन मन जड़ नाई नासहि

जन मन शुक्तिहि प्रेरि विभूती

सीपी

बल बुधि जह विचार बढ़ावहि

दुष्ट न सुख न जो भनु जक सावे

कुकर्म सुकर्म

नहि मदार प्रब फल लागे

लकड़ी को नाम

पावहि पाप पुन्य तनु धारी

जो जिह काज करत नर सेवे

सत्त्व मां हि निह गुण अधिकार्ड

अतः करणी

मनहु वारि पर भीत बनावा

जन दुख हरन जनक सम धावें

घोर अविद्या रजनि विन प्रसहि

पिता

गुण मुक्ता कर करहि प्रसूती

रात्रि

भेती

जननी

प्रबल भाग्य बल जिन उर आवहि

सुख दुख विवशता सुफल पावे

दुष्ट स्वभावन साधु हिलगे

दाय भाग जिम निज अधिकारी

मीरास

जागत जीवता हि जग जेवे

अंत ताहि तिह गति लै जाई

राम रसायन जिह रंगे तिह मन राम रमाय

रागर सहि जिह ग्रसर है रौर बजरक सिधाय

सुनत दशा सहचारि न केरी

धरनि देखि धड़ परे उनिकामा

पृथ्वी

धुनत सीस मुख आवन वचना

हा शुकहा मम प्रांरा पिरिने

विषम वियोग विवश प्रकुलार्ड

शुभ दिन जब अस शुक हम पावा

तोता

अनरथ मूल रसन महारानी

जिह्वा

अवनि परे उशुक मूर्छा घेरी

पृथ्वी

कह विश आज भये उविधवाभा

वैश्य

उलटा

शोका कुल लखि अद्भुत रचना

किह विध आज भये विपरीते

मनहु बुरा कनिज मूरग साई

वैश्य

सर्वस आज सो सहज गमावा

किं कहैं तो बिनु बनत न बानी

چند این آتش درین خرم زنی
گر چه هر چه گویشش ان میکند
هم آتش و حشت هجران توئی
هم بلیس و ظلمت و کفران توئی
اے توزه کرده بکین من کمان
در جر اگاه ستم کم کن چرا
یا مرا اسباب شادی یاد ده

یہ جو تو پوچھتی ہے اس کا جواب ہے کہ اگر کون سا جواب ہے۔

اے زبان ہم آتش ہم خرمی
در زبان جان از تو افغان میکند
اے زبان ہم گنج بے پایان توئی
ہم خفیہ در ہنر یار ان توئی
چند اما غم میدہی اے زبان
نک بہر ایندہ مرغ مرا
یا جواب مابده یا داد ده

اے درینا نور ظلمت سوز من
اے درینا صبح روز افزو من

ابنہ فقہور کا عزت رکھ کر

ز انتہا پریدہ تا اعزاز من
وز کبد صافی بدم در جوے تو
وز وجود نقدر خود بریدنت
کو دے کن حکم حق صد بار نیت
آنکہ افزون از بیان و مدد است
تا شمار دلبر نہ میا بدے
تر جان نکرت و اسرار من
روز اول گفت تا یا و آیدم
بیش ز اعجاز وجود اعزاز من
عکس اورا دیدہ برای من وان

یہی نوعی کا شمار ان میں کیا جائیگا۔

اے درینا مرغ خوش رفتار من
از کبد فارغ شدم بار وے تو
اے درینا با خیال دیدن ست
غیرت حق بود و با حق چارہ نیست
غیرت ان باشد کہ او غیر ہمہ است
اے درینا شک من دریا پرے
طوطی من مرغ زیر کس پیار من
ہر چہ روز سے داد نا داد آدم
طوطے کا یہ روحی ادا ز او
اندرون تست ان طوطی ہنار

कृषिपालननहिनजलवपुधारे
 यदपि प्राणतयबशसहहानी
 तोहिबलमनुजविपुलधनपावे
 कहंगुरुहुइजीवननिस्तारे
 सबविधिकरीतोरपहुनार्ड
 करहिजदमनदरुबमोहिरीना
 अबहुदूतपनतजिहृदबैठो

अग्निहोइखलियानपजारे
 तदपिकरततेरीमनभानी
 तोहिकनकटकीहिकुशलनसावे
 कहबहकायनकमेडार
 निधनकीनमोहिधरिनिराई
 विकलकीनजिमजलतिनुमीना
 सुमिरदयालुदुसहदुखमेदौ

सुखंसरोजसबहीमुंदेअथयेआतमभान
 दुखउलूकनिधरकचरहुपापतिमिरअधिकान

नबदशनदुखदोषनसाये
 पामरजन्मदृश्यहितहारे
 दृश्यअनतईश्वरसेघालहि
 दृश्यक्षरिाकनश्वरजड़होई
 विशअधीरहगजीबहावे
 हाशुकशुचिशोभाकीसानी
 जबहउबशहमभ्रमपरिजाही
 निगमनिचोरकहतनभबानी
 सोइमुदमयमनमन्दिरमाहो

रूपरेउजाहिबाजजमराजू
 प्रेमसरितमलधोइबहाये
 निजस्वरूपसुखनाहिंसमारे
 कोनईशअनुशासनपालहि
 ईश्वरअमरअजरअजसोई
 पुनिरमायाताहनचावे
 मुनरभनोहरममगतिजानी
 सूचकपापपुण्यमगमाही
 नियमनीतिपरमारथसानी
 जइतनुप्रगजसुपरछाहीं

| | |
|--|---|
| <p>مے برو شادیت را تو شاد از دو اے کہ جان را بہر تن میسوختی سوخته چون قابل آتش بود اے در یغا اے در یغا اے در یغا</p> | <p>مے پذیرے ظلم را چون داد از دو سوختی جان را و تن را فروختی سوخته بتان کہ آتش کشن بود کا پنخان ماہے نہان شد پیر متیغ</p> |
| <p>چون ز تم دم کا تیش دل تیز شد شیر ہجرا شفته و خون ریز شد</p> | |
| <p>انکہ او ہوشیا رخو دتند دست بست شیرستی کز صفت بیرون بود قافیہ اندیشم و دلداد من خوش نشین اے قافیہ اندیش من حرف چہ بود تا تواندیشی ازان حرف و صوت و گفت را بہر ہم زخم اندے کز آومش کردم نہان اندے کز دے میجا دم نترد با چہ باشد نعت اثبات و نفی من کسی در نا کے دریافتہم جملہ شاہان بردہ بردہ خود اند جملہ شاہان پست پست خویش را دلبران بر بیدلان فتنہ بجان</p> | <p>چون بود چون او قدر گیر و دست از بسط مغرار افسزون بود گویدم ہامدیش حسرت و یداد من قافیہ دولت توئی در پیش من صوت چہ بود خار دیوار ازان تاکہ بے این ہر سہ با تو دم زخم یا تو گویم اے تو اسرار جہان حق ز غیرت نیز بے با ہم نزد من نہ اثباتیم بے ذات و نفی پس کسی در نا کسی دریافتہم جملہ خلقان مردہ مردہ خود اند جملہ خلقان ست مست خویش را جملہ معشوقان شکایہ عاشقان</p> |

हरलीनिसतननुषतबसाना
 अरेमदांधमंदमतिभीरू
 आत्मप्रकाशेउजिनतनुजारी
 जोमृदुमंजुमानमदत्यागी
 हाविधुविमलजहामलनाहीं

श्लोक!

मनकाननमेंजबलगीबिरहदंवारिप्रचंड

बादल

भगेसकलकामादिखगुप्रगटीज्योतिअखंड

पक्षी

जेनरनिखिलनेहरतनाकर
 जेजनअससुखपाइअनंदे
 शब्दहेतुजबहमचितधारी
 बैठसुखेनशब्दकहाअटको
 शब्दशोकसागरकाघाटी
 अक्षरशब्दबचनकरिदूरी
 मुनिमनप्रगमजहानहिजाई
 शेषमहेशध्याननहिआवे
 जोनिजनामनिसाननसावे
 अमरभयेउमरधर्मनसाई
 निजनीचहुतरनाहनिवाजें
 मंजिनबशजिमहोहिभुआला
 प्रभुनिजप्रेमिनकरप्रणापालहि

पक्षी

बदेरासुबिधुसुमिरगुणाकर
 नरपुंगवहुपायतिनबन्दे
 प्रभुकहुनुमनिजरूपनिहारी
 निजस्वरूपतजिकिहभ्रमभटको
 शब्दहिब्रह्मसेत्रकीटाटी
 हरिमूरतिसेइलखेहजूरी
 सौरहस्यतोहिकहबबुभाई
 अहंत्यागबिनुसोकहांपावे
 अलखअरूपगतहिमोपावे
 अतःअपनपौदीनमिटार्इ
 जगजघन्यजीवहिजिमसाजें
 पुत्रनपितरकरहिंप्रतिपाला
 पलकपूतरीपितुजिमिबालाहि

पक्षीचन्द्र

श्लोक

सित

आइ

नीच

राजा

| | |
|----------------------------|-------------------------------|
| مے شود صیبا و مرغزار اشکار | تہا کتہ ناگاہ ایشان را شکا |
| ہر کہ عاشق و دلش معشوق دان | کو بہ نسبت ہست ہم این و ہم ان |
| تشنگان گراب جویند از جہا | آب ہم جوید بعالم تشنگان |

چونکہ عاشق دوست تو خاموش باش
او چون گوشت میبشد تو گوشت باش

| | |
|--------------------------------|-------------------------------|
| بند کن چون سیل سیلابی کند | در نہر سوانی و ویرانی کند |
| من جبہ غم دارم کہ ویرانی کند | زیر ویران گنج سلطانی بود |
| غرق حق خواہد کہ باشد غرق تر | ہمچو موج بحر جان زیر و زبر |
| زیر دریا خوشتر آید یا ز بر | تیرا و دلکش ترا آید یا سپر |
| بس زبون و سوسہ باشی فلا | گر طرب را باز دانی از بلا |
| گر فرا دست را مذاق شکر است | بے مرادی نے مراد دلبر است |
| ہر ستارہ اش خون بہاے جہد ہلا | خون عالم بر یخچق اور احسلا |
| ما بہا و خون بہا را یافتہم | جانب جان با ختن بشتافتہم |
| اے حیات عاشقان در مردگی | دل غیبیابی جز کہ درد دل بردگی |
| منش جستہ با بنیاز و بے ملال | او بہانہ کردہ انداز و دلال |
| گفتم آخر غرق تست این عقل و جان | گفت رور و بر من افسون و خوان |
| من ندانم انجہ اندیشیدہ | اے دو دیدہ دوست را چون دیدہ |
| اے گمراہ جان خوار و پستی مرا | ز آنکہ بس ارزان خریدستی مرا |
| ہر کہ او از زان خرد از زان دہد | گو ہرے طفلی بقرص نان دہد |

| | |
|--|---|
| <p>प्रथम व्याधि पक्षिन वश होई ^{शिकारी} भक्त हरि हि हरि भक्त न चहों प्रेमी जिम बिनु संत दुखारी</p> | <p>पक्षिन वश्य करै पुनि सोई दोऊ अन्योन्य प्रेम वश अहों ^{परस्पर} तैसेहि संत चहत अधिकारी</p> |
| <p>तरे तेई बूढ़े जे नर प्रेम पयोध अपार ^{प्रेम समुद्र में जो बूढ़े सोई तारोये} अवशा शब्द पर धरहु जिम सी पस्वांतिके वार</p> | |
| <p>प्रभु परेश कर रूप बिशेखी ^{प्रकृत को स्वामी} पाचक माहि पतंग न सावे जो नर प्रेम पयोध समाना मग्न प्रेम वारिद ^{समुद्र} अब गाही दुख सुख भेद करहि जो प्राणी प्रभु प्रेरित दुख से विषयाना जिह प्रकाश ^{जिस परमात्मा को प्रकाश} बिशशिगत होई जन्म लहेकर फल हम पावा तनहि त्याग जीवन जन पावाहि ^{देहा ध्यास} खोजत ताहि प्रेम नहि थोरा केहे उकि तोहि निमान मन प्राणा ^{सुखाब्द प्रकट कराहि कि अपना अस्तित्व भी समाप्त है} अपतन होरि हरि हि प्रनु राग निज अनमोल प्राणा प्रिय तोही सहज मिले सो सहज न सावे</p> | <p>दिव्य चक्षु बिनु परे न देखी पुन्य पुंज प्रियतम पुनि पावे ऊर्मि सारि स अध ऊर्ध्व समाना ^{लहर की भाँति आहें जे आहें हो या नीचा} दुख सुख जन्म मृत्यु समताही नहिं आतम वितवहु अज्ञानी नर इच्छा कि होइ बलवाना उत्पत्ति स्थित लय में सम सोई प्राणा दान कर जिह हम पावा सुखी होहि जो मगहि न सावहिं निपट निरु नहिं आन निहोरा बोल्यो तो मंत्र हम जाना ^{सुखाब्द प्रकट कराहि कि अपना अस्तित्व भी समाप्त है} एक चित्त बौद्ध बौद्ध न लाग सौम्य सलम कर जानि समोही जिम शिशु मधु हित न गमावे ^{कच्ची मिठाई लाल}</p> |

नर प्रेम पयोध अपार

| | |
|--|---|
| <p>غرق عشقه شو که غرق ست اندرین مجالش گفتیم که درمزان بیان</p> | <p>عشقهای اولین و آخرین در نه هم انعام سوز و هم زبان</p> |
| <p>من چو لب گویم لب دریا بود من چو لا گویم مراد الا بود</p> | <p>من ز بسیاری گفتارم خوش در حجاب رویش با شرم نهان</p> |
| <p>تا که شیرینی ما از دو جهان تا که در هر گوشش نایه این سخن او چو جانت و جهان چون کالبد هر که محراب نمازش گشت عین هر که شد در شاه را او جامه وار هر که با سلطان بود او هم نشین دست پوششش چون رید از بادشا گر چه سر بر پا نهادن خدمت است شاه را عزیزت بود بر هر که او تالم ان را ناله با خوشش پیش چون نیم در حلقه ستان او چون بنام شمع بچو شب بے روز او تا خوشش او خوشش بود بر جهان عاشقم بر رخ خویشش و در خویش</p> | <p>کالبد از جهان بریزد نیک و بد سوی ایمان افتش میدان تو نشین است خسران بر شاهش از آزار بر درش شستن او و حیف و عین گرگزیند بوس پاپا شد گناه پیش ان خدمت خطا و دولت است بوگرفت بعد از ان که دید رو از دو عالم ناله و غم با پیشش چون نه تالم تلخ از دوستان او بے وصال رو بے روزا فرد او جهان فدای یار دل ریختن من بهر خوشنودی شاه فرد خویش</p> |

لایحه شاه روزان که یکایک با او بایستد

योग्ययज्ञजपतपव्रतदाना
गूढरहस्यनशब्दसमावे

अबमिलहोहिनप्रेमसमाना
अनुभवगम्यकहतनहिंआवे

सुलभनपावहिंसबहिनस्कहतसैनसमुझाड

सुरगाथाकीओटमें आक्षरअक्षररहाड

अक्षरान

हावमोम बोधसाधुअश्वान

अर्थद्वैतवराहम

मधुरहुरवायरहउमुरचखोरी

प्रेमकथानओदमनभरही

सबाहिअवराणुटगतनसुडाई

जड़तनसमयहजीवजहाना

जोस्वस्त्वसमारसंचारी

जिहमरारत्नकनकप्रधिकारा

चूषनकेरजेतनेकदनिवासी

भेटातेयूपतिजाहिप्रतिप्रीती

यदीपिभक्तचरणानप्रनुरागा

प्रभुहिलजावतअधमप्रभागा

प्रेमाहेकरप्रसन्नप्रभुहोई

लीरनाकरनिजखबहिछिपावा

करतबिलापविकलभइबानी

सोदुखदर्दहमहिमुखकारी

सकलशोकअयस्करसोही

करुणेशांकर

रहउमूकलखिजनमतिभोरी

जेगुणादोषारोपराकरही

कछुकसमयसकोचवशगार्ड

प्रभुमोरकप्रारानकरमाना

तिनहिननीतिशास्त्रसुखकारी

सोकिबराकबनफिरहिवजरा

भोरैहुतिनहिकिसोहखवासी

चराणपरतकोकहिअसनीती

सोहनसोसहचरसहभागा

तजिनिजरूपबिवादहिलागा

प्रणयताहिप्रियअवरनकोई

दरसलांगलोचनललवावा

कृषतनुअहिजिमकियमरिहानी

तनमनप्रारातासुबलिहारी

स्वामिरजायमाजशिपसोई

आज्ञा

शिष्य

خاک غم را سینه بزم کو خشم
تا ز گوهر پر شود و بجب چشم

اشک کان از بهرا و بارند خلق
گوهرست و اشک پند از بند خلق

| | |
|---|---|
| <p>من ز جهان حسان شکایت میکنم دل همه گوید از ورنجیده ام راستی اے تو خضر استان استان و خضر در معنی کجاست مرد زن چون یک شود ان یک توی این من و ما بهر ان بر ساختی تا تو یا ما و تو یک جوهر شوی این من و ما با همه یک جاشود اے همه هست و بیا اے اگر پشیم چشمانه اند و بدست لی که او بسته غم و خند بدست نکه او بسته غم و خند بود رخ سبز عشق کو بے شهادت ساشقی زین هر دو حالت بر دست ز کاست روست خود اے خوب رو</p> | <p>من نیم شاکی روایت می کنم وز لقا بستیست خندیده ام اے تو خضر و من درت راستان ما و من ان طرت کو کان یا راست چونکه یک با محو شد انک توی تا تو یا خود و خود دست با خستی عاقبت محض چستان دلیر شوی عاقبت مستغرق جانان شونده اے منزه از بهیان و از سخن در خیال آرد غم و خند بدست تو بگو که لایق این دید نیست ادب بین دو عاریت زنده بود جز غم و ششادی در و بس میو است بکجهارده به خزان سبز و ترست شش جان شمره شمره باز گو</p> |
|---|---|

نکته در صورت بین نا احوال

کز کمر شمره شمره و سازه
بردم بهن ساده و ایش تازه

جلیات گوناگون

महसंतमसरित्यतिकोबल
समुद्र

देउचषु शुक्तिसर्वाहिमुताहल
चक्षु

जग मनमंदुदप्रभुजलवारिदलोचनचारु
समुद्र आसु बादल
प्रेमसीपयुक्ता भये दीने हरि पद डारु

प्राणनाथ प्रियपद उरलाये
हमहु हंसतकहंमनगतकेही
सत्त्वसेव्यनुमसकलसहायक

तुच्छतुंगानहिआतममाही
नीचा ऊचा

जातिवराकुलजहानलखावे
मनुष्यादि ज्ञादि ब्रह्मादि

इहसबकल्पितमायामाहीं

भवमूलकप्रसभेदबिकारी

सबनिजकाराकरहिपयाना

हेशासकशिवशचिसतरूपा
प्रचालक उपवित्र

चर्मचक्षुनोहिसकतनवाही

हर्षा मर्य दुःखसुखमाही

बिकललोककाल्पितसुखपीरा

प्रेमविपिनगतहर्षविषादा

निविधिबायुबहिभंगलमूला

सोहिफलदेहबाहुबलप्यारे

नहिरिसबशहमकहतसुभाये

मुखरिसहृदयहर्षअतितेही

हमजननीचेंआपसबलायक

जहंग्रहमममसकलविलाही

एकअनेकाहुकहतनआवे

व्यवहारिक पर्मीर्थिक नाहीं

आतम एकअमलअविकारी

सबकरशरणाअंतभगवाना

ओमतशुभ्रअशब्दअनूपा

हर्षशोकयुतपावाननाही

तेजनबबहुनहारेसमुहाही

कबहुसहर्षरुकबहुअधीरा

फलअनेकप्रभुपरिप्रासादा

सराएकंससकलसफूला

विरहवंतजिहदोंहिसुखारे

शोभानिरवेगलौकिकमनबुधिचित्तलुपान

विरहजालमेंप्रसेउजिमहसविनुजलअकुलान

| | |
|---|--|
| <p>غتم چه ریزی در دل غمناکیان همچو چشمه شرفت در جوش یافت آن بهانه شکرین بهات را از تن بجان و دل افغان شنو شرح بیل گو که شد از گل جدا از غم و شادی نباشد جوشش ما تو مشو منکر که حق بس قادر است منزل اندر جو رو در احسان کن حادثان میرند و مع شان در است جان جان و تابش مر جان توئی در صبحی با من منصور تو باده که بود تا طرب آورد مرا چرخ در گردشش اسیر بوش ما</p> | <p>چون گریزانی زنانه خاکبان ایکه بر صبحی که از مغرب بتافت چه بهانه نمیدهمی شیوات را اس جهان کنه را تو جان تو شرح گل بگذار از بهر خدا با خیال و دهم نبود هوشش ما حالت دیگر بود کان نادر است تو قیاس از حالت انسان کن جو روحسان رنج و شادی حادث است عذر خواه عقل کل و جان توئی تاقت نور صبح ما از نور تو داده حق چون چنین دار مرا باده در جوشش گداز جوش ما</p> |
|---|--|

باده از ما است شده ما از
 قالب از ما است شده ما از
 ما چو زبوریم و قالب ما چو موم
 خانه خانه کرده قالب را چو موم

صد پراگنده همه گفت این چنین
 گاه سودا که حقیقت بکوه مجاز

اجه اندر آتش در و در چنین
 به تنافض گاه ناز و گاه سوز

करुणाकरियकलहनहिंसाई

उवा पूर्वदिशतेपगधारे

आतकल की अरुणाई

सदासहजसबकीसुखदाई

विपतबंधुतुमप्रारानप्यारे

अकथअलौकिकअबलअबली

दुखसुखसहितहोंहिंसारी

मेभिनदशाअलौकिकहोई

साधारणजनजिनजियजानी

दुखसुखपरोपकारअपकार

हेसर्वज्ञसर्व हे स्वामी

तुमहि प्रकाशकमनबुधिजीके

प्रेममद्यजिनकीहितकारी

तरणिकिहोईबिरहतेतातो

सूज

मुकुरनहमाहिदिखावहीहमाहिमुकुरकलकाहि

दरिद्र हमसकाशतनुद्योतमयतनसकाशहमनोहि

अनुपमअजअद्वैतअभुपूरांघरघटमाहि

इसुसुधुरतातेलतिलधृतपयजिननदिखाहि

दुख

दुख

वैश्यव्याचिंतमनथिलाहीं

कबहुगोमविह्वलहूजाई

बिरहवंतंयाकुलमनमांहीं

दिनकरसरिसप्रकाशपसारे

मंदहविरहदुसहदुखआई

एकबिनयबलविपुलहमांर

प्रेमितकरकछुकहोंकहानी

आमंजसगतउमंगहमारी

बिनहरिकुपाकिजानेकोई

देरिवशुभाशुभकरहुगलानी

सबचलएकअचलकरतारा

सर्वप्राणसर्वोतर्यामी

तुमहिप्रदायकप्रेमअमीके

सुरानतिहकरसकेसुखारी

मद मद्यकिपियहिप्रेमरंगरातो

कोटविकल्पगुनतमनमाहीं

कबहुदीनताधरिपछिताई

مرد غرق گشته جانے میکند
تا که آتش دست گیرد در خطر
دوست دارد دوست این شفقتی
آنکه او شاه ست او بیکار نیست
بهر این فرمود رحمان اے پسر
اندین ره می تراش و می خراش
تا دم آخر دم احسن شود
هر که اومی کوشت در هر دوزن است

۵۱ الله تعالی کسی وقت غافل نباشد و نه غافل باشد

دست را در هر گیسو میزند
دست و پائے میزند از بیم
کوشش بیهوده به از خفتگی
نالہ از وے طرفہ کو بیمار نیست
کل یوم ہوتی نشان اے پسر
تا دم آخر وے فارغ مباش
کہ عنایت با تو صاحب مبر شود
کوشش و چشم شاہ جان بر روزن است

افگندن خواب طوطی مرده را

بعد از آتش از قفس بیرون فلند
طوطی مرده چنان پرواز کرد
خواب حیران گشت اندر کا مرغ
روے بالا کرد و گفت اے عندلیب
او چه کرد آنجا کہ تو اموختی

طوطیک پرید تا شاخ بلند
کا قباب از شرق ترکی تاز کرد
بے خبر ناگہ بدید اسرار مرغ
از بیان حال خود مانده نصیب
سوختی مارا و خود افسر و خمتی

گفت طوطی کہ بفسلم بند داد
کہ رہا کن نطق و او از و کشاد

زانکہ او از دست ترا در بند کرد
یعنی اے مطرب شدہ باعام و خاص
دانه باشی مرغ گانت پر چنبد

خویش را مرده پے این بند کرد
مرده شو چون من کہ تایابی خلاص
غنچه باشی کو دکانست برکت بد

प्राणा हेत हस्ती हुहियहारो
करुणा करकोइ ताहिउवारे
रहिय शोकवश करमनुसाई
त्रिभुवन पतिहु ज्ञानतपलागे
^{इश्वर} ^{यस्य ज्ञानमयतपः}
पुरुषारथहि सिद्धिभूतिगावा
पुरुषारथसेकृषिनिप्रधाहीं
पुरुषारथ प्राणातन हंरहि
मनबचनारीनरजोधावहि

बचन

डूबत तृणा करलेत सहारो
हाथपांउबरवश हुइ मोरे
भलवेगार नभल ठलुआई
केवलकर्म कुतूहल पागे
^{तमाशा}
कृतिमय पुरुषहि वेदबतावा
जबलंग प्राणारहेँ तनमाहीं
भनक परत प्रभुभयसवतारहिं
अंतर्यामिहि कवनजनावहिं

तोते को बाहिर फेंकना

शोकित बिभ्रतिह शुक्रशब्जानी
^{वैश्य} ^{मुखा}
धरणी परतरवा त्वरित उड़ावा
^{पृथ्वी}
लखत वैश्य असप्रदुतरचना
शुकमिज कथा कहहु समुगाई
उहशुक तोहिकहा कहिसमुगांवा

फेंक दीनतिह सहित गलानी
मनहु शरासन ते शरधावा
^{धनुष} ^{तीर}
चकितचितै बाल्योइह बचना
जिहविधि मोर भेदभ्रमजाई
जिहजीवित इह जाल छुड़ावा

करकरतब करुणायतन कीरमोहि समुगाव

दयालु

कलरुबं कामुक बचनतजिजो तोहिकुशल सुहाव

मोवाबोल

कीनबद्ध यह कोकिल बयना
फसेउ सबहि मृदुबचन सुनाई
पक्षी भंषीहंजो धान्यहु होई

^{मुरदा}
शबहुइ छूटकीन यह सयना
मोसम शबहुइ छूटहु भाई
मुकुलित बाल बिदारिहि तोही
^{कली}

| | |
|--|---|
| دانه پنهان کن بکلی دامن شو هر که داد او حسن خود را در جزاد چشمها و چشمها داشک با دشمنان او را از غیبت میدرند انکه غافل گشت از گشت بهار در پناه لطف حق باید گر بخت تا بنائے یابی انکه چه پناه نوح و موسی را نه دریا یار شد آتش ابراهیم را نه قلعه بود | غنچه پنهان کن گیاه با دم نشو صدق ضنائے بد سوئے اور و نهاد بر سرش ایزد چو آب از مشک با دوستان هم روزگارش میبند او چه داند قیمت این روزگار کو هزاران لطف برار و اح رحمت آب و آتش هر ترا گر دو سپاه نے براعد اشان بکین قمار شد تا بر اور داند دل مرزود دود |
|--|---|

و دل کردن طوطی خواجہ را و پند دادن و پریدن

| | |
|--|---|
| یک دو بندش داد طوطی بآفتاب الوداع اسے خواجہ رفتم تا وطن خواجہ گفتش فی امان اللہ بڑ | بعد ازان گفتش سلام الافران هم شوی از اور و زے همچو من مر مرا اکنون نمودی راه تو |
|--|---|

سویکے ہندوستان اصلی رو نہاد
بعد شدت از فرح دل گشت مشاہ
تن قفص شکل ست وزان شد خا رجوان
از فریب د اخلاص و حنا ر جان

| | |
|----------------------------|---------------------------|
| اینشش گوید من شوم ہمارا تو | واتش گوید نے منم انبار تو |
|----------------------------|---------------------------|

| | |
|---|---|
| <p>जीराजालहुइजीवनकीजे तपविद्याबैराग्यदिखाये नेत्रनदोषरोषविपरीते ईर्षाबश^{भैर}प्ररिप्रारानलागू लोहतावसरिवारसमाना ^{लोहेकातावेड्डा दोनेपरकामनही आना} ईश्वरशराउदधिअवगाहा प्रसप्रभुकरशरागागतपाई अरुषिअगस्त्यवारीशअपारा ^{समुद्र} प्रल्हादहिलरिवअनलजुडानी ^{बडीहोगई}</p> | <p>दूवदेहुधरिदुखसहलीजे ^{घास} आवतदुखनिकायसुभाये प्रावतचहुंदिशतेअनचीते हरहि समयप्रियप्रतिअनुरागू खोवतस्मयअमोलप्रयाना निहविनुत्रिभुवनहूननिवाहा हुतभुक्तदधिकारहिसिबकाई ^{आदि} ^{समुद्र} अंजुलितीनताहि करडारा तजिनिजधर्मसईजिमपानी</p> |
|---|---|

शुककाउड़जानास्वामीकोआशीर्वाददेकर

| | |
|---|--|
| <p>द्वेइकशुभशिक्षाशुककीनी आशिषदेपुनिचलेउपराई धनिकसराहिसीखलेभारी</p> | <p>करप्रणामअंतिमरंगभीनी तुमरेउबंधुछुडोवैसाई फिरेउसदनसुखसदनसंभारी ^{घर} ^{परमात्मा}</p> |
|---|--|

शुरुगमनेउनिजगृहभगनप्रभुगुरागराकरगान
सुखीभयेउअतिपायजिमबूढतजनंजलयान ॥
आतमहिततनमान्यताकृषिहशूलकीबार
^{नाच}
^{श्रीगुरुमिमान}
समयहेतुअरिमित्रदोउमनहिअशुद्धअहार

सहमतहोइइककरतबढ़ाई

सहचारीइककारिसिबकाई

| | |
|---|---|
| <p>در کمال و فضل و در احسان وجود جمله جانها ماطفیل جهان است آتش گوید گاه نوش و همد می از تکبر میرود از دست خویش دیو افگندست اندر آب جو کترش خور گوهر آتش لقمه ایست دود او ظا هر شود پایان کار از طمع میگوید او من پے برم روزها سوزد دست زان سوزها کان طمع که داشت از تو شد زیان در بندج این حالت است از من مایه کبر و خدا را حبان شود</p> | <p>آینش گوید نیست چون تو در وجود آتش گوید هر دو عالم آن است آینش گوید گاه عیش و خوری او چو بلیت خلق را برست خویش او نداند که هزاران را چو او لطف و سالوس جهان خوش لقمه است آتش پنهان و دود نفس آشکار تو لگو کان مدح دامن کے خرم ما و حست گر هجو گوید بر ملا گر چه دانی کوز حیران گفتن ان اثر میبازدست در اندرون ن اثر هم روزها باقی شود</p> |
|---|---|

نیک بنماید خوشترین سنت مدح
بند نماید را نکه تلخ افتاد قدح

| | |
|---|--|
| <p>تا بدیرے شورش و رنج اندری این اثر چون ان نمی پاید همه هر ضارے - تو بختدے ان بدن بعد چند دیش آورده میش جو اندر دن شد پاک ز اخلاط کثیف</p> | <p>بچه مطبوخ است و حب کا زان خوری خور می حلوا بود و دقتش و می ن نمی پاید همی ماندن انسان ن شکر باشد نه ن تاثیر اد ب و مطبوخ جو ردی اے ظریف عقلند</p> |
|---|--|

एक कहत तुम सम जगनाहीं
 इक कहि तुम दोउ लोक सुधारे
 तुम ही सन संसार सुखारी
 जगत पूज्य आपहि पहि चानी
 नहिं जानत हम सम अनियारे
 जगत मान गौरव ^{प्रभिमानने} अधिकार्ई
 स्वाद प्रगट बिषरइ ^{बहुप्यन} उलुकाई
 कहब प्रशंसा मोहि न सुहाई
 जो अवाक्य कहि निंदति द्रोही
 कहत सो स्वारथ हित कहु बानी
 तदपि प्रभाव परत घट माहीं
 मनहि मान कर मुंह मसिलावे ^{स्याही}

बुध विज्ञान बिन यनि पुराई
 प्रभु प्रारान प्रति पाल हमारे
 कहत एक तुम ही हितकारी
 करि अभिमान करत हितहानी
 अगारिातें अंध कूप में डारे
 काल कूट मय सरस मिठाई
 बाहुत मद को सकहि छिपाई
 लाल चवश उहिक कहत बनाई
 लागत बचन वंशास मतोही
 जानहु यदपि कीन हमहानी
 कसन प्रशंसा सुनत सिहाही ^{यद्यपि तुमने उस्की हानी भी की है}
 कलुषित कर कुल कान घटवे ^{काला}

प्रचुर प्रशंसा के सुने बढ़त न प्रेम प्रभाद

निंदा कविन कुमार सम सुनत कहिन कहु बाद

प्रौढ अधिक दुःखे बितन नर जोई
 पाइ मधुर स्वादिष्ट अहार
 प्रीति का मुखहि थिर उदर हाई
 स्त्री विरक्त थिर उदर हावे
 कहु भय जयदि मुखहि न भावे ^{भविष्यवादि}
 चिरायवादे

तासु कटुकता चिर थिर होई
 चिर न रहे ^{बहुते दिन} मुख मधुर तस्हारा
 साइ ^{उद्धेद} श्लाघा की गति भाई
 बिबिध बसन ^{सुशामद} व्याधिव दाने
 मल हर उदर विकार न संव

| | |
|---|---|
| <p>نفس از بس مدح با فرعون شد تا توانی بنده شو سلطان مباح ورنه چون لطفت نماند دین جلال ان جماعت کت همی دادند ریلو جمله گویند ت چو بیند ت به دور تا تو بودی آدمی دیوار به پست چون شدی در خواه دیوی استوار انکه اندر دامنست باو میخند این همه گفتیم لیک اندر پیچ</p> | <p>کن قلیل النفس هو تالاند زخم کش چون گوے شو چوگان مباح از تو آید ان حریفان را ملال چون بد بیند ت بگویند ت که دیو مردۀ از گور خود بر کرده سحر مید وید و همه چشایند او میت میگر یزد از تو دیو نا بکار چون چنین گشتی ز تو بگر بختند بے عنایات خدا بهیم وینج</p> |
|---|---|

بے عنایات حق و خاصان حق
گر ملک باشد سیاهتش در حق

| | |
|--|--|
| <p>ای خدا که قادر بی چون و چشد واقفی بر حال بیرون و درون بے خدا اے فضل تو حاجت روا ن قدر ارشاد تو بخشیده طره دانش که بخشیدی ز پیش طره علم است اندر جان من ن ازین خاکها نقش کشند چه چون نقش کنی و قادری</p> | <p>از تو پیداست چنین قصر بلند نمے کم و بیش سنے چندی و چون با تو یاد ایچکس بنود روا تا بدین بس عیب با پوشیده متصل گردان بدیرا باکے خویش وار با نفس از هوا و خاک تن پیش ازین کاین باو نقش کشند کش از ایشان داستان و آخری</p> |
|--|--|

२ जो नृजन से है सत्ता भी वृद्धा नो भी दीखत है तो जो अपन द्वार पर रङ्ग देहने भी दुखी है तो ॥

सुनि सुनि जन की ठकुर सुहाती

सेवक बनहु छांड ठकुराई

निधन ज बहि धन जन द्वे जावे

नाश

पद पंकज जो सीसन बावहिं

कमल

द्वारहु देखि द्वेष चित धारी

सिद्ध युबक धन पति तोहि जानी

तन धन बल बुध निरखि विहीना

निस दिन चरगा कमल अनुरागे

जन शिक्षा हित कछु कब खाना

मन भयो मत मांग ज हाती

सरल स्वभाव सबहि शिर नाई

नगर नारिन निकट न आवे

सोइ जन प्रेत प्रेत कहि धावहिं

कुशल हु पूछत हैं हिंदु स्वारी

प्रेम पियूष पियांब सुबानी

तजहिं तोहि कहि कर मति हीना

भाग्य भ्रष्ट भयत ज सब भागे

बिनु हरि कृपा होहि नहि जाना

सत संगति बिनु संत के बिनु सर्वज्ञ सहाय

पमाला

सुगति पाव किम जीव जड़ किं संदेह न साय

भुक्ति

हे अनादि अव्यय अविकारी

वाह्यांतर गति जान न हारे

कृपा सिंधु कामद करुणा कर

तुम बल अस्तुति करत नुम्हारी

ज्ञान सरित जो हृदय बहाई

विषय समीर न शोरेव ते ही

जब लगत नहि न अनिल सुरवावे

तुम सर्वज्ञ समर्थ गुसाई

वायु

तुम यह सकल सृष्टि बिस्तारी

अव्यय अमर अकाम पियारे

भजहिं अन्य ते मन्द मन्द तर

हरहु अविद्या कृत अधियारी

वारिद बोध सोलेहु मिलाई

त्राहि त्राहि मभु पर्म सनेही

जब लगत नहि न ताहि जरावे

अनल अनिल तुमरे बशमाई

आग्नि

आग्नि

पवन

| | |
|--|---|
| <p>قطره کو در هوا شد یا که ریخت گر در آید در عدم یا صد عدم صد هزاران ضد ضد را می کشد از عدم با سوئے هستی هر زمان خاصه هر شب جمله افکار و عقول باز وقت صبح چون اللہسان در خزان چن صد هزاران شاخ و برگ زاغ پوشیده سید چون نوحه گر باز فرمان آید از سالارده انچ خوروی واده اے مرگ سیا اے برادر عقل یک دم با خود آ</p> | <p>از خزینه قدرت تو که گریخت چون بخواهیش او کند از سر قدم باز شان حکم تو بچرون می کشد هست یا رب کاروان در کاروان نیست که دو جمله در بحر لغول برزند از بحر چون ماهیان از بهر حکمت رفته در دریای سمرگ در گلستان نوحه کرده بر خضر مر عدم را کجا بچه خوروی بازده از نبات دور دو از برگ و گیاه و مبدم در تو خزان ست و بهار</p> |
|--|---|

اے برادر یکدم از خود دور شو
با خود آ و غن بجبر نور شو

| | |
|---|---|
| <p>باغ دل را سبز و تر و تازه بین ز انهی برگ پنهان گشته شاخ این سخنهای ^{سازگار} از عقل کل است بوئے گل دیدی که انجا گل نبود بو قلا و ز سست و در مبر مر ترا بود و اے چشم باشد نور ساق</p> | <p>برز غنچه درد و سر و یاکین ز بهی گل نمان صحرا و کاخ بوئے آن گلزار سر و سبیل است جوشش مل دیدی که انجا گل نبود مے بر و تاحل و کوثر مر ترا شد ز بوئے دیده لیمو سبب باز</p> |
|---|---|

यद्यपिसलिलसमीरसुरवावा
^{जले पवन}
 काररामाहिप्रदृश्य रहाही
^{गुप्त}
 जलक्षितिहरहिप्रबलतिहरई
^{पृथ्वी} ^{अग्नि}
 छिनाछिनमाहसजेतबसाया
 प्रबलप्रलयरजनीअंधियारी
^{राक्ष}
 प्रातकल्पकरप्रभवपसारे
^{उत्पन्न}
 जटनुनिदाधतरुपरागिराये
^{गामी}
 काकउलूकनरोदनठाना
 काननदशादेखिदुरवकारी
^{वन}
 हुमपल्लवदलनुकुलसुहाये
^{हुँहा} ^{शाखा} ^{पत्र} ^{कली}
 क्षीराकविचारहुसुतमनमाही

कतरामिलहिनहोतप्रभावा
 प्रकटहोइपुनिआज्ञापाई
 ताहिअनिलतिहनभवप्रकारई
^{बायु} ^{आकाश}
 विवशहोहिब्रह्मांडनिकाया
^{समुद्र}
 जीवचक्षुस्कीलयकारी
 संवत्सरशशिरविनभतारे
 व्रतिमनोनिजधनहिलुदाये
^{सन्धासी}
 शोकभवनवनमनहुमसाना
 मेघमालजनुमोचनचारे
 सुखीदरिद्रिमनहुनिधिपाये
 ग्रीष्मशरदनितप्रतिनुमपाही

प्रणायपाथमयहृदयतवपावनप्रेममयोध
^{समुद्र} ^{जल} ^{समुद्र}
 ह्वेनिमग्नलहज्ञानमृशितजितृणाविषयविरोध

बागविचित्रबन्योमनमाही
 शीलबिरमयमनियमविताना
^{शाखा}
 हुमविष्वासआपवनमाली
 ज्ञानगंधयुतबुद्धिबयारी
 गंधाहिविलबसीतबनाई
 सोईसुगंधदिव्यदृशकारी

नितबसंतप्रातपजहांजाई
^{बहाइ} ^{खिजा}
 सुमनअनकरिछसिधनाना
 करजमुक्तिफलकीरखवाली
 हरनतापत्रियबहुसुखकारी
 देखहुसकलकुसुमसरसाई
^{पुष्प}
 अनुभवकारिहृषिकहिनिहारी

| | |
|---|---|
| <p> یوسف بد مرد دیده را تازی کند تو که یوسف نیستی یعقوب باش این رباعی را شنو از جهان دودل تا ز راه رویه بیا بد همچو درد زشت باشد رویه ناپیدا و ناز پیشش یوسف نازش بخوبی کن معنی مردن ز طوطی بد نیاز تا دم عیسی ترا زنده کشد </p> | <p> یوسف یوسف دیده را یاری کند همچو او با گریه و اشوب باش تا بکل بیرون شوی از آب و گل چون نداری گردد بد خوبی مگرد عیب باشد چشم ناپیدا و نیاز جز نیاز و آه یعقوبی نکن در نیاز و فقر خود را مرده ساز همچو خوشیست خوب و فرخنده کند </p> |
|---|---|

در بهاران که شود سرسبز رنگ
خاک شو تا گل بروید رنگ رنگ
سالماتو سنگ بودی دلخراش
از مون را یک زمانه خاکباش

تمام شد

दृशनात्मदुखद्वंद्वबद्धावे
 दृष्टलाभहितवहदुखसहिजे
 ऋषिउपदेशमुनहुचितलाई
 मुखमयंकसमजोनहिंतोरा
 मानकिसोहकुरुपहि कीना
 जोनहोइमुखचन्द्रसमाना
 शुकदीनेउ शवार्थननाई
 तोतोहि^{मुखा}संतमुखदहितलावहि

देवदृष्टिदृग्दोषनसावे
 व्याकुलविरहविवशनिहरिजे
 जिहकरविषयविकारनसाई
 रहियेचिनेजिमचिकितचकोरा
 नामनयनमुखनेत्रबिहीना
 रहियेचकोरसरसनिर्मुभा
 दीनखिन्नतनरहियेसहाई
 मलयसरसनिजण्धबसावहि

पाहन पुरुष न पुष्प कहं उगै पयोधरबार ^{जल}
^{पत्थर} मृतकामाहि ^{कैदार} मुतरुघने कीनो जिन तन छार ^{बादल}
^{हस्त} पाथरढे अबलगरहे बरष पचासक बीत
^{पूल} परखहु पुत्र परागढे परिचय सों परतीत

इति श्रीज्ञानकहानी

अर्थात्

मसनवी मौलवीरूमकाभाषाऽनुवाद

प्रथमभाग

सम्परीम्

ज्ञान के हानी

अर्थात्

रुसनवी मौलवी स्सका भाषां ६ नुवाद

प्रथमभाग

अनुवादक शंकरानंद

आगरा

अतवेशास्सीमशीन प्रेस आगरा में मुहम्मद बशीर
दीन व शमशदीन खां के प्रबन्ध से छापी गई

CALL No. { ۸۹۱۰۶۵۴۲۰۵
۴۲۰۵۴۱۰۶۹۸

ACC. No. .. 13.454.....

AUTHOR.....

TITLE. (تجارب و فتویٰ مولانا مودودی و فیروز خان) منبرِ نبویؐ کی خدمت میں

[illegible]

MAULANA
AZAD
LIBRARY



-:RULES:-

ALIGARH
MUSLIM
UNIVERSITY

1. The book must be returned on the date stamped above.
2. A fine of Re. 1/- per volume per day shall be charged for textbooks and 10 P. per vol. per day for general books kept overdue.

